विक्षनरी:संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश/पत-पा

< विक्षनरी:संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश

मूलशब्द—व्याकरण—संधिरहित मूलशब्द—व्युत्पत्ति—हिन्दी अर्थ

- **पत्**—भ्वा॰ पर॰ <पतति>, <पतित>————गिरना, गिर पड़ना, नीचे आना, उतरना
- **पत्**—भ्वा॰ पर॰ <पतति>, <पतित>————उड़ना, वायु में आना जाना, उड़ान भरना
- **पत्**—भ्वा॰ पर॰ <पतति>, <पतित>————छिपाना, डूबना
- **पत्**—भ्वा॰ पर॰ <पतति>, <पतित>————अपने आप को डालना, नीचे फेंकना
- **पत्**—भ्वा॰ पर॰ <पतति>, <पतित>————(नैतिक दृष्टि से) गिरना, जाति से पतित होना, प्रतिष्ठा का नष्ट होना, भ्रष्ट होना
- **पत्**—भ्वा॰ पर॰ <पतति>, <पतित>————(स्वर्ग से) नीचे आना
- **पत्**—भ्वा॰ पर॰ <पतति>, <पतित>————घटना, आपद्ग्रस्त या संकटापन्न होना
- **पत्**—भ्वा॰ पर॰ <पतति>, <पतित>————नरक में जाना, नारकीय यातना सहन करना
- **पत्**—भ्वा॰ पर॰ <पतति>, <पतित>————पड़ना, घटित होना, हो जाना, संपन्न होना
- **पत्**—भ्वा॰ पर॰ <पतति>, <पतित>————निर्दिष्ट होना, उतरना या पड़ना
- **पत्**—भ्वा॰ पर॰ <पतति>, <पतित>————भाग्य में होना
- **पत्**—भ्वा॰ पर॰ <पतति>, <पतित>————ग्रस्त होना, फँसना
- **पत्**—भ्वा॰ पर॰————नीचे गिराना, उतारना, डुबोना
- **पत्**—भ्वा॰ पर॰————गिरने देना, नीचे को फेंकना, गिराना (वृक्ष आदि का) गिराना
- **पत्**—भ्वा॰ पर॰————बर्बाद करना, परास्त करना
- **पत्**—भ्वा॰ पर॰————(आँसू) गिराना
- **पत्**—भ्वा॰ पर॰————फेंकना, (दृष्टि) डालना, सन्नन्त
- **पत्**—भ्वा॰ पर॰————गिरने की इच्छा करना
- **अनुपत्**—भ्वा॰ पर॰—अनु-पत्———उड़ना
- **अनुपत्**—भ्वा॰ पर॰—अनु-पत्———पीछे दौड़ना, अनुसरण करना, पीछे लगे रहना, पीछा करना
- **अभिपत्**—भ्वा॰ पर॰—अभि-पत्———निकट उड़ना, नज़दीक जाना, पास पहुँचना
- **अभिपत्**—भ्वा॰ पर॰—अभि-पत्———आक्रमण करना, धावा बोलना, टूट पड़ना

- **अभिपत्**—भ्वा॰ पर॰—अभि-पत्———उड़ कर पकड़ लेना
- **अभिपत्**—भ्वा॰ पर॰—अभि-पत्———वापिस आना, लौट पड़ना, पीछे हटना
- **अभ्युत्पत्**—भ्वा॰ पर॰—अभ्युद्-पत्———टूट पड़ना, आक्रमण करना
- **आपत्**—भ्वा॰ पर॰—आ-पत्———टूट पड़ना, आक्रमण करना, धावा बोलना
- **आपत्**—भ्वा॰ पर॰—आ-पत्———उड़ना, पिल पड़ना, झपटना
- **आपत्**—भ्वा॰ पर॰—आ-पत्———निकट जाना
- **आपत्**—भ्वा॰ पर॰—आ-पत्———होना, घटित होना, आ पड़ना
- **आपत्**—भ्वा॰ पर॰—आ-पत्———सूझना, (मन में) आना
- **उत्पत्**—भ्वा॰ पर॰—उद्-पत्———उछलना कूदना
- **उत्पत्**—भ्वा॰ पर॰—उद्-पत्———सूझना, विचार में आना
- **उत्पत्**—भ्वा॰ पर॰—उद्-पत्———(गेंद की भांति) उछल कर आना
- **उत्पत्**—भ्वा॰ पर॰—उद्-पत्———उदय होना, जन्म लेना, फूटना, उत्पन्न होना
- **निपत्**—भ्वा॰ पर॰—नि-पत्———नीचे गिरना या आना, अवरोहण करना, उतरना, डूबना
- **निपत्**—भ्वा॰ पर॰—नि-पत्———फेंका जाना, निर्दिष्ट होना
- **निपत्**—भ्वा॰ पर॰—नि-पत्———(पैरों में) डालना, साष्टांग लेटना
- **निपत्**—भ्वा॰ पर॰—नि-पत्———गिरना, उतरना, मिल जाना
- **निपत्**—भ्वा॰ पर॰—नि-पत्———टूट पड़ना, आक्रमण करना, पिल पड़ना
- **निपत्**—भ्वा॰ पर॰—नि-पत्———होना, घटित होना, आ पड़ना, भाग्य में होना
- **निपत्**—भ्वा॰ पर॰—नि-पत्———रक्खा जाना, स्थान पर अधिकार करना
- **निपत्**—भ्वा॰ पर॰—नि-पत्———नीचे गिराना, फेंकना, पटक देना
- **निपत्**—भ्वा॰ पर॰—नि-पत्———मार डालना, नष्ट करना, बर्बाद करना
- **निष्पत्**—भ्वा॰ पर॰—निस्-पत्———निकालना, फूट पड़ना, फल निकलना, निकल पड़ना
- **परापत्**—भ्वा॰ पर॰—परा-पत्———पहुँचना, निकट आना, पास जाना
- **परापत्**—भ्वा॰ पर॰—परा-पत्———वापिस आना
- **परिपत्**—भ्वा॰ पर॰—परि-पत्———इधर उधर उड़ना, चक्कर काटना, छा जाना
- **परिपत्**—भ्वा॰ पर॰—परि-पत्———झपट्टा मारना, आक्रमण करना, टूट पड़ना (युद्ध में)
- **परिपत्**—भ्वा॰ पर॰—परि-पत्———सब दिशाओं में दौड़ना

- **परिपत्**—भ्वा॰ पर॰—परि-पत्—-—चले जाना, गिर पड़ना
- **प्रपत्**—भ्वा॰ पर॰—प्र-पत्—-—नीचे आना, नीचे गिरना, उतरना
- **प्रपत्**—भ्वा॰ पर॰—प्र-पत्—-—गिरकर अलग या दूर हो जाना
- **प्रपत्**—भ्वा॰ पर॰—प्र-पत्—-—उड़ना, इधर उधर झपटना
- **प्रणिपत्**—भ्वा॰ पर॰—प्रणि-पत्—-—प्रणाम करना, अभिवादन करना
- **प्रोत्पत्**—भ्वा॰ पर॰—प्रोद-पत्—-—ऊपर उड़ना, उड़ान भरना
- **विनिपत्**—भ्वा॰ पर॰—विनि-पत्—-—उड़ना, गिरना, उतरना
- **विनिपत्**—भ्वा॰ पर॰—विनि-पत्—-—गिराना, बर्बाद करना, नष्ट करना
- **सम्पत्**—भ्वा॰ पर॰—सम्-पत्—-—मिल कर उड़ना, एकत्र होना
- **सम्पत्**—भ्वा॰ पर॰—सम्-पत्—-—इधर उधर जाना या घूमना
- **सम्पत्**—भ्वा॰ पर॰—सम्-पत्—-—आक्रमण करना, टूट पड़ना, धावा बोलना
- **सम्पत्**—भ्वा॰ पर॰—सम्-पत्—-—होना, घटित होना
- **सम्पत्**—भ्वा॰ पर॰—सम्-पत्—-—निकट लाना
- **सम्पत्**—भ्वा॰ पर॰—सम्-पत्—-—संग्रह करना, एकत्र करना, मिलाना
- **पतः**—पुं॰—-—पत् + अच्—उड़ना, उड़ान
- **पतः**—पुं॰—-—पत् + अच्—जाना, गिरना, उतरना
- **पतगः**—पुं॰—पतः-गः—-—पक्षी
- **पतङ्गः**—पुं॰—-—पतन् उत्प्लवन् गच्छति-गम् + ड, नि॰—पक्षी
- **पतङ्गः**—पुं॰—-—पतन् उत्प्लवन् गच्छति-गम् + ड, नि॰—सूर्य
- **पतङ्गः**—पुं॰—-—पतन् उत्प्लवन् गच्छति-गम् + ड, नि॰—शलभ, टिड्डी-दल, टिड्डा
- **पतङ्गः**—पुं॰—-—पतन् उत्प्लवन् गच्छति-गम् + ड, नि॰—मधुमक्खी
- **पतङ्गम्**—नपुं॰—-—-—पारा
- **पतङ्गम्**—नपुं॰—-—-—एक प्रकार की चंदन की लकड़ी
- **पतगमः**—पुं॰—-—पत + गम् + खच्, मुम्—पक्षी
- **पतगमः**—पुं॰—-—पत + गम् + खच्, मुम्—शलभ
- **पतङ्गिका**—स्त्री॰—-—पतंग + कन् + टाप्, इत्वम्—छोटी चिड़िया
- **पतङ्गिका**—स्त्री॰—-—पतंग + कन् + टाप्, इत्वम्—एक छोटी मधुमक्खी

- **पतङ्गिन्**—पुं°—-—पतंग + इनि—पक्षी
- **पतञ्चिका**—स्त्री°—-—पतं शत्रुं चिक्कयति पीडयति-पृषो°—धनुष की डोरी
- **पतञ्जलिः**—पुं°—-—-—पाणिनि के सूत्रों पर लिखे गये-महाभाष्य के प्रसिद्ध निर्माता, दार्शनिक, योगदर्शन के प्रवर्तक
- **पतत्**—वि°—-—पत् + शतृ—उड़ने वाला, अवरोहण करने वाला, उतरने वाला, नीचे आने वाला
- **पतत्**—पुं°—-—पत् + शतृ—पक्षी
- **पतद्ग्रहः**—पुं°—पतत्-ग्रहः—-—प्रारक्षित सेना
- **पतद्ग्रहः**—पुं°—पतत्-ग्रहः—-—थूकने का बर्तन, पीकदान
- **पतद्भीरुः**—पुं°—पतत्-भीरुः—-—बाज़, श्येन
- **पतत्रम्**—नपुं°—-—पत्-करणे अत्रन्—बाज़ू, डैना
- **पतत्रम्**—नपुं°—-—पत्-करणे अत्रन्—पर, पंख
- **पतत्रम्**—नपुं°—-—पत्-करणे अत्रन्—सवारी
- **पतत्रिः**—पुं°—-—पत् + अत्रिन्—पक्षी
- **पतत्रिन्**—पुं°—-—पतत्र + इनि—पक्षी
- **पतत्रिन्**—पुं°—-—पतत्र + इनि—बाण
- **पतत्रिन्**—पुं°—-—पतत्र + इनि—घोड़ा
- **पतत्रिकेतनः**—पुं°—पतत्रिन्-केतनः—-—विष्णु का विशेषण
- **पतनम्**—नपुं°—-—पत् + ल्युट्—उड़ने या नीचे आने की क्रिया, उतरना, अवरोहण करना, अपने आपको नीचे पटकना
- **पतनम्**—नपुं°—-—पत् + ल्युट्—(सूर्यादिका) अस्त होना
- **पतनम्**—नपुं°—-—पत् + ल्युट्—नरक में जाना
- **पतनम्**—नपुं°—-—पत् + ल्युट्—धर्मभ्रंश
- **पतनम्**—नपुं°—-—पत् + ल्युट्—मर्यादा या प्रतिष्ठा से गिरना
- **पतनम्**—नपुं°—-—पत् + ल्युट्—अवपात, ह्रास, नाश, विपत्ति
- **पतनम्**—नपुं°—-—पत् + ल्युट्—मृत्यु
- **पतनम्**—नपुं°—-—पत् + ल्युट्—नीचे लटकना, (छाती का) ढरकना
- **पतनम्**—नपुं°—-—पत् + ल्युट्—गर्भस्राव होना
- **पतनीय**—वि°—-—पत् + अनीयर्—गिराने वाला, जातिभ्रष्ट करने वाला
- **पतनीयम्**—नपुं°—-—पत् + अनीयर्—पतित करने वाला पाप या जुर्म

- **पतमः**—पुं॰—-—पत् + अम—चाँद
- **पतमः**—पुं॰—-—पत् + अम—पक्षी
- **पतमः**—पुं॰—-—पत् + अम—टिड्डा
- **पतसः**—पुं॰—-—पत् + असच्—चाँद
- **पतसः**—पुं॰—-—पत् + असच्—पक्षी
- **पतसः**—पुं॰—-—पत् + असच्—टिड्डा
- **पतयालु**—वि॰—-—पत् + णिच् + आलुच्—पतनोन्मुख, पतनशील
- **पताका**—स्त्री॰—-—पत्यते ज्ञायते कस्यचिद्भेदोऽनया-पत् + आक + टाप्—झण्डा, ध्वज
- **पताका**—स्त्री॰—-—पत्यते ज्ञायते कस्यचिद्भेदोऽनया-पत् + आक + टाप्—ध्वजदण्ड
- **पताका**—स्त्री॰—-—पत्यते ज्ञायते कस्यचिद्भेदोऽनया-पत् + आक + टाप्—संकेत, लक्षण, चिह्न, प्रतीक
- **पताका**—स्त्री॰—-—पत्यते ज्ञायते कस्यचिद्भेदोऽनया-पत् + आक + टाप्—उपाख्यान या नाटकों में आई हुई प्रासंगिक कथा
- **पताका**—स्त्री॰—-—पत्यते ज्ञायते कस्यचिद्भेदोऽनया-पत् + आक + टाप्—मांगलिकता, सौभाग्य
- **पताकांशुकम्**—नपुं॰—पताका-अंशुकम्—-—झंडा
- **पताकास्थानकम्**—नपुं॰—पताका-स्थानकम्—-—प्रांसगिक कथा की सूचना जब कि अप्रत्याशित रूप से, किसी परिस्थितिवश उसी लक्षण वाली कोई दूसरी आकस्मिक अविचारित वस्तु प्रदर्शित की जाती है
- **पताकिक**—वि॰—-—पताका + ठन्—झंडा उड़ाने वाला, ध्वजदंडधारी
- **पताकिन्**—वि॰—-—पताका + इनि—झंडा ले जाने वाला, पताकाओं से अलंकृत
- **पताकिन्**—पुं॰—-—पताका + इनि—झंडाधारी, झंडाबरदार
- **पताकिन्**—पुं॰—-—पताका + इनि—ध्वजा
- **पताकिनी**—स्त्री॰—-—पताका + इनि+ङीप्—सेना
- **पतिः**—पुं॰—-—पाति रक्षति-पा + इति—स्वामी, प्रभू
- **पतिः**—पुं॰—-—पाति रक्षति-पा + इति—मालिक, अधिपति, स्वामी- क्षेत्रपति
- **पतिः**—पुं॰—-—-—राज्यपाल, शासक, प्रधानता करने वाला
- **पतिः**—पुं॰—-—-—भर्ता
- **पतिघातिनी**—स्त्री॰—पतिः-घातिनी—-—वह स्त्री जो अपने पति का वध कर देती है
- **पतिघ्नी**—स्त्री॰—पतिः-घ्नी—-—वह स्त्री जो अपने पति का वध कर देती है
- **पतिदेवता**—स्त्री॰—पतिः-देवता—-—वह स्त्री जो अपने पति को देवता समझती है, पतिव्रता, सती स्त्री

- **पतिधर्मः**—पुं°—पतिः-धर्मः—-—अपने पति के प्रति (पत्नी का) कर्तव्य
- **पतिप्राणा**—स्त्री°—पतिः-प्राणा—-—सती स्त्री
- **पतिलोकः**—पुं°—पतिः-लोकः—-—वह लोक जहाँ मृत्यु हो जाने के पश्वात् पति पहुंचता है
- **पतिव्रता**—स्त्री°—पतिः-व्रता—-—भक्त, श्रद्धालु, निष्ठावती स्त्री, सती स्त्री
- **पतिव्रत्वम्**—नपुं°—पतिः-व्रत्वम्—-—पति के प्रति निष्ठा, स्वामिभक्ति
- **पतिसेवा**—स्त्री°—पतिः-सेवा—-—पति के प्रति भक्ति
- **पतिवरा**—स्त्री°—-—पति + वृ + खच्, मुम्—अपना वर चुनने के लिए तत्पर स्त्री
- **पतितः**—भू° क° कृ°—-—पत् + क्त—गिरा हुआ, अवरूढ, उतरा हुआ
- **पतितः**—भू° क° कृ°—-—पत् + क्त—नीचे गिरा हुआ
- **पतितः**—भू° क° कृ°—-—पत् + क्त—(नैतिक दृष्टि से) पतित, भ्रष्ट, दुश्चरित्र
- **पतितः**—भू° क° कृ°—-—पत् + क्त—स्वधर्मभ्रष्ट
- **पतितः**—भू° क° कृ°—-—पत् + क्त—अपमानित, जातिबहिष्कृत
- **पतितः**—भू° क° कृ°—-—पत् + क्त—युद्ध में हारा हुआ, पराजित, परास्त
- **पतितः**—भू° क° कृ°—-—पत् + क्त—ग्रस्त, फंसा हुआ
- **पतेरः**—पुं°—-—पत् + एरक्—पक्षी
- **पतेरः**—पुं°—-—पत् + एरक्—छिद्र या विवर
- **पत्तनम्**—नपुं°—-—पतित गच्छति जना यस्मिन्, पत् + तनन्—कस्बा, नगर
- **पत्तिः**—पुं°—-—पद् + ति—पैदल, पैदल सैनिक
- **पत्तिः**—पुं°—-—पद् + ति—पैदल, चलने वाला यात्री
- **पत्तिः**—पुं°—-—पद् + ति—वीर
- **पत्तिः**—स्त्री°—-—-—सेना का छोटे से छोटा दस्ता जिसमें एक रथ, एक हाथी, तीन घुड़सवार और पाँच पैदल सैनिक हों
- **पत्तिः**—स्त्री°—-—-—जाने वाला, चलने वाला
- **पत्तिकायः**—पुं°—पत्तिः-कायः—-—पैदल सेना
- **पत्तिगणकः**—पुं°—पत्तिः-गणकः—-—सेना का अधिकारी जिसका काम पैदल सेना की गिनती करना
- **पत्तिसंहतिः**—स्त्री°—पत्तिः-संहतिः—-—पैदल सिपाहियों की टुकड़ी, पैदल सेना
- **रत्तिन्**—पुं°—-—पद्भ्यां तेलति, पाद + तिल् + डिन्, पदादेशः—पैदल सिपाही
- **पत्नी**—स्त्री°—-—पति + ङीप्, नुक्—सहधर्मिणी, भार्या

- **पत्न्याटः**—पुं°—पत्नी-आटः—-—रनिवास, अंतपुर
- **पत्नीसन्नहनम्**—नपुं°—पत्नी-सन्नहनम्—-—धर्मपत्नी का कटिसूत्र या करधनी
- **पत्रम्**—नपुं°—-—पत् + ष्ट्रन्— (वृक्ष का) पत्ता
- **पत्रम्**—नपुं°—-—पत् + ष्ट्रन्—फूल की पत्ती, कमल का पत्ता
- **पत्रम्**—नपुं°—-—पत् + ष्ट्रन्—पत्ता जिसके ऊपर लिखा जाय, कागज, लिखा हुआ पत्र
- **पत्रम्**—नपुं°—-—पत् + ष्ट्रन्—पत्र, दस्तावेज
- **पत्रम्**—नपुं°—-—पत् + ष्ट्रन्—किसी धातु का पतला पत्रा, स्वर्ण-पत्र
- **पत्रम्**—नपुं°—-—पत् + ष्ट्रन्—पक्षी का बाजू, पंख, पर
- **पत्रम्**—नपुं°—-—पत् + ष्ट्रन्—बाण का पंख
- **पत्रम्**—नपुं°—-—पत् + ष्ट्रन्—सामान्य सवारी (रथ, घोड़ा, ऊँट आदि)
- **पत्रम्**—नपुं°—-—पत् + ष्ट्रन्—शरीर पर (विशेष कर मुख पर) चन्दन आदि सुगंधित द्रव्य का लेप करना
- **पत्रम्**—नपुं°—-—पत् + ष्ट्रन्—तलवार या चाकू का फल
- **पत्रम्**—नपुं°—-—पत् + ष्ट्रन्—चाकू, छूरी
- **पत्राङ्गम्**—नपुं°—पत्रम्-अङ्गम्—-—भूर्ज वृक्ष
- **पत्राङ्गम्**—नपुं°—पत्रम्-अङ्गम्—-—लाल चंदन
- **पत्राङ्गुलिः**—स्त्री°—पत्रम्-अङ्गुलिः—-—शरीर (गर्दन, मस्तक आदि) पर अंगुलियों से केसर मिश्रित चंदन या अन्य किसी सुगंधित पदार्थ से चित्रण करना
- **पत्राञ्जनम्**—नपुं°—पत्रम्-अञ्जनम्—-—मसी
- **पत्रावलिः**—स्त्री°—पत्रम्-आवलिः—-—गेरु
- **पत्रावलिः**—स्त्री°—पत्रम्-आवलिः—-—पत्तों का कतार
- **पत्रावलिः**—स्त्री°—पत्रम्-आवलिः—-—शरीर पर सजावट की दृष्टि से चंदनादि से रेखाचित्रण करना
- **पत्रावली**—स्त्री°—पत्रम्-आवली—-—पत्तों की पंक्ति
- **पत्राहारः**—पुं°—पत्रम्-आहारः—-—पत्ते खाकर निर्वाह करना
- **पत्रौर्णम्**—नपुं°—पत्रम्-ऊर्णम्—-—बुनने वाली रेशम, रेशमी वस्त्र
- **पत्रकाहला**—स्त्री°—पत्रम्-काहला—-—परों की फटफटाहट, पत्तों की खड़खड़ाहट
- **पत्रदारकः**—पुं°—पत्रम्-दारकः—-—आरा
- **पत्रनाडिका**—स्त्री°—पत्रम्-नाडिका—-—पत्ते के रेशे

- **पत्रपरशुः**—पुं°—पत्रम्-परशुः—-—रेती
- **पत्रपालः**—पुं°—पत्रम्-पालः—-—लंबी छुरी, बड़ा चाकू
- **पत्रपाली**—स्त्री°—पत्रम्-पाली—-—बाण का पंख वाला भाग
- **पत्रपाली**—स्त्री°—पत्रम्-पाली—-—कैंची
- **पत्रपाश्या**—स्त्री°—पत्रम्-पाश्या—-—मस्तक का सोने का आभूषण, टीका
- **पत्रपुटम्**—नपुं°—पत्रम्-पुटम्—-—पत्तों से बना पात्र, दोना
- **पत्रबालः**—पुं°—पत्रम्-बालः—-—चप्पू
- **पत्रवालः**—पुं°—पत्रम्-वालः—-—चप्पू
- **पत्रभङ्गः**—स्त्री°—पत्रम्-भङ्गः—-—शरीर को अलंकृत करने के लिए चंदन, केसर, महंदी या किसी अन्य सुगंधित द्रव्य से शरीर पर लेप करना या चित्रण करना
- **पत्रभङ्गिः**—स्त्री°—पत्रम्-भङ्गिः—-—शरीर को अलंकृत करने के लिए चंदन, केसर, महंदी या किसी अन्य सुगंधित द्रव्य से शरीर पर लेप करना या चित्रण करना
- **पत्रभङ्गी**—स्त्री°—पत्रम्-भङ्गी—-—शरीर को अलंकृत करने के लिए चंदन, केसर, महंदी या किसी अन्य सुगंधित द्रव्य से शरीर पर लेप करना या चित्रण करना
- **पत्रयौवनम्**—नपुं°—पत्रम्-यौवनम्—-—नया पत्ता या कोंपल
- **पत्ररथः**—पुं°—पत्रम्-रथः—-—पक्षी
- **पत्रेन्द्रः**—पुं°—पत्रम्-इन्द्रः—-—गरूड़ का नाम
- **पत्रेन्द्रकेतुः**—पुं°—पत्रम्-इन्द्रः-केतुः—-—विष्णु का नाम
- **पत्ररेखा**—वि°—पत्रम्-रेखा—-—शरीर को अलंकृत करने के लिए चंदन, केसर, महंदी या किसी अन्य सुगंधित द्रव्य से शरीर पर लेप करना या चित्रण करना
- **पत्रलेखा**—वि°—पत्रम्-लेखा—-—शरीर को अलंकृत करने के लिए चंदन, केसर, महंदी या किसी अन्य सुगंधित द्रव्य से शरीर पर लेप करना या चित्रण करना
- **पत्रवल्लरी**—वि°—पत्रम्-वल्लरी—-—शरीर को अलंकृत करने के लिए चंदन, केसर, महंदी या किसी अन्य सुगंधित द्रव्य से शरीर पर लेप करना या चित्रण करना
- **पत्रवल्लिः**—वि°—पत्रम्-वल्लिः—-—शरीर को अलंकृत करने के लिए चंदन, केसर, महंदी या किसी अन्य सुगंधित द्रव्य से शरीर पर लेप करना या चित्रण करना
- **पत्रवल्ली**—वि°—पत्रम्-वल्ली—-—शरीर को अलंकृत करने के लिए चंदन, केसर, महंदी या किसी अन्य सुगंधित द्रव्य से शरीर पर लेप करना या चित्रण करना
- **पत्रवाज**—वि°—पत्रम्-वाज—-—बाण आदि पंखों से युक्त

- **पत्रवाहः**—पुं°—पत्रम्-वाहः—-—पक्षी
- **पत्रवाहः**—पुं°—पत्रम्-वाहः—-—बाण
- **पत्रवाहः**—पुं°—पत्रम्-वाहः—-—डाकिया, चिट्ठीरसा
- **पत्रविशेषकः**—पुं°—पत्रम्-विशेषकः—-—शरीर को अलंकृत करने के लिए चंदन, केसर, महंदी या किसी अन्य सुगंधित द्रव्य से शरीर पर लेप करना या चित्रण करना
- **पत्रवेष्टः**—पुं°—पत्रम्-वेष्टः—-—एक प्रकार का कानों का आभूषण
- **पत्रशाकः**—पुं°—पत्रम्-शाकः—-—शाकभाजी, जिसमें मुख्यरूप से पत्ते हों
- **पत्रश्रेष्ठः**—पुं°—पत्रम्-श्रेष्ठः—-—बेल का पेड़
- **पत्रसूचिः**—स्त्री°—पत्रम्-सूचिः—-—कांटा
- **पत्रहिमम्**—नपुं°—पत्रम्-हिमम्—-—जाड़े की ऋतु जब पाला या बर्फ पड़े
- **पत्रकम्**—नपुं°—-—पत्र + कन्—पत्ता
- **पत्रकम्**—नपुं°—-—पत्र + कन्—सौन्दर्य बढ़ाने की दृष्टि से शरीर पर बनाई गई रेखाएँ या चित्रकारी
- **पत्रणा**—स्त्री°—-—पत्र + णिच् + युच् + टाप्—सौन्दर्य वृद्धि के लिए शरीर पर बनाई गई रेखाएँ और चित्रकारी
- **पत्रणा**—स्त्री°—-—पत्र + णिच् + युच् + टाप्—बाण में पंख लगाना
- **पत्रिका**—स्त्री°—-—पत्री + कन् + टाप्, ह्रस्वः—लिखने के लिए काग़ज
- **पत्रिका**—स्त्री°—-—पत्री + कन् + टाप्, ह्रस्वः—चिट्ठी, लेख, प्रलेख
- **पत्रिन्**—वि°—-—पत्रम् अस्त्यर्थ इनि—पंखो से युक्त, परों वाला
- **पत्रिन्**—वि°—-—पत्रम् अस्त्यर्थ इनि—जिसमें पत्ते या पृष्ठ हो
- **पत्रिन्**—पुं°—-—पत्रम् अस्त्यर्थ इनि—बाण
- **पत्रिन्**—पुं°—-—पत्रम् अस्त्यर्थ इनि—पक्षी
- **पत्रिन्**—पुं°—-—पत्रम् अस्त्यर्थ इनि—बाज
- **पत्रिन्**—पुं°—-—पत्रम् अस्त्यर्थ इनि—पहाड़
- **पत्रिन्**—पुं°—-—पत्रम् अस्त्यर्थ इनि—रथ
- **पत्रिन्**—पुं°—-—पत्रम् अस्त्यर्थ इनि—वृक्ष
- **पत्रिवाहः**—पुं°—पत्रिन्-वाहः—-—पक्षी
- **पत्सलः**—पुं°—-—पत् + सरन्, रस्य लः—रास्ता, मार्ग
- **पथः**—पुं°—-—पथ् + क (घञर्थे)—रास्था, मार्ग, प्रसार, किनारा

- **पथकल्पना**—स्त्री°—पथः-कल्पना—-—जादू के खेल
- **पथदर्शकः**—पुं°—पथः-दर्शकः—-—मार्ग बतलाने वाला
- **पथिकः**—पुं°—-—पथिन् + ष्कन्—यात्री, मुसाफिर, बटोही
- **पथिकः**—पुं°—-—पथिन् + ष्कन्—पथप्रदर्शक
- **पथिकसंततिः**—स्त्री°—पथिकः-संततिः—-—यात्रियों का समूह, काफला
- **पथिकसंहतिः**—स्त्री°—पथिकः-संहतिः—-—यात्रियों का समूह, काफला
- **पथिकसार्थः**—पुं°—पथिकः-सार्थः—-—यात्रियों का समूह, काफला
- **पथिन्**—पुं°—-—पथ् आधारे इनि—मार्ग, रास्ता
- **पथिन्**—पुं°—-—पथ् आधारे इनि—यात्रा, राहगीरी या पर्यटन
- **पथिन्**—पुं°—-—पथ् आधारे इनि—परास, पहुंच
- **पथिन्**—पुं°—-—पथ्+इनि—कार्यपद्धति, आचरण की रेखा, व्यवहारक्रमः
- **पथिन्**—पुं°—-—पथ्+इनि—संप्रदाय, सिद्धांत
- **पथिन्**—पुं°—-—पथ्+इनि—नरक का प्रभाग
- **पथिदेयम्**—नपुं°—पथिन्-देयम्—-—सार्वजनिक मार्गों पर लगाया गया राजकर
- **पथिद्रुमः**—पुं°—पथिन्-द्रुमः—-—खैर का पेड़
- **पथिप्रज्ञ**—वि°—पथिन्-प्रज्ञ—-—मार्गों का जानकार
- **पथिवाहक**—वि°—पथिन्-वाहक—-—क्रूर
- **पथिवाहकः**—पुं°—पथिन्-वाहकः—-—शिकारी, चिड़ीमार
- **पथिवाहकः**—पुं°—पथिन्-वाहकः—-—बोझा ढोने वाला, कुली
- **पथिलः**—पुं°—-—पथ् + इलच्—यात्री, राहगीर, बटोही
- **पथ्य**—वि°—-—पथिन् + यत् + इनो लोपः—स्वास्थ्यप्रद, स्वास्थ्यवर्धक, कल्याणकारी, उपयोगी (औषधि, आहार, सम्मति आदि)
- **पथ्य**—वि°—-—पथिन् + यत् + इनो लोपः—योग्य उचित, उपयुक्त
- **पथ्यम्**—नपुं°—-—पथिन् + यत् + इनो लोपः—स्वास्थ्यबर्धक या पौष्टिक आहार
- **पथ्यम्**—नपुं°—-—पथिन् + यत् + इनो लोपः—कल्याण, कुशलक्षेम
- **पथ्यापथ्यम्**—नपुं°—पथ्य-अपथ्यम्—-—उन पदार्थों का समूह जो किसी रोग में स्वास्थ्यवर्धक या हानिकर समझे जाते है
- **पद्**—चुरा° आ° <पदयते>—-—-—जाना, हिलना-जुलना
- **पद्**—दिवा° आ° <पद्यते>, <पन्न>, पुं°—-—-—जाना, चलना-फिरना

- **पद्**—दिवा° आ° <पद्यते>, <पन्न>, पुं°———–—पास जाना, पहुँचना
- **पद्**—दिवा° आ° <पद्यते>, <पन्न>, पुं°———–—हासिल करना, प्राप्त करना, उपलब्ध करना
- **पद्**—दिवा° आ° <पद्यते>, <पन्न>, पुं°———–—पालन करना, अनुसरण करना
- **अनुपद्**—दिवा° आ°—अनु-पद्—–—पीछे चलना, अनुगमन करना, सेवा करना
- **अनुपद्**—दिवा° आ°—अनु-पद्—–—स्नेहशील होना, अनुरक्त होना
- **अनुपद्**—दिवा° आ°—अनु-पद्—–—प्रविष्ट होना, अन्दर जाना
- **अनुपद्**—दिवा° आ°—अनु-पद्—–—अपनाना
- **अनुपद्**—दिवा° आ°—अनु-पद्—–—मालूम करना, देखना, निरीक्षण करना, समझना
- **अभिपद्**—दिवा° आ°—अभि-पद्—–—पास जाना, नजदीक होना, पहुँचना
- **अभिपद्**—दिवा° आ°—अभि-पद्—–—संमिल्लित होना
- **अभिपद्**—दिवा° आ°—अभि-पद्—–—अवलोकन करना, विचार करना, खवाल करना, समझना
- **अभिपद्**—दिवा° आ°—अभि-पद्—–—सहायता करना, मदद करना
- **अभिपद्**—दिवा° आ°—अभि-पद्—–—पकड़ना, परास्त करना, आक्रमण करना, दबोच लेना, अधिकार में कर लेना, ग्रस्त करना
- **अभिपद्**—दिवा° आ°—अभि-पद्—–—लेना, धारण करना
- **अभिपद्**—दिवा° आ°—अभि-पद्—–—स्वीकार करना, प्राप्त करना
- **अभ्यपपद्**—दिवा° आ°—अभ्यप-पद्—–—दया करना, सांत्वना देना, आराम पहुँचाना, तरस खाना, अनुग्रह करना (कष्ट से) मुक्त करना
- **अभ्यपपद्**—दिवा° आ°—अभ्यप-पद्—–—सहायता मांगना, दीनता प्रकट करना
- **अभ्यपपद्**—दिवा° आ°—अभ्यप-पद्—–—सहमत होना, स्वीकृति देना
- **आपद्**—दिवा° आ°—आ-पद्—–—निकट जाना, की और चलना, पहुँचना
- **आपद्**—दिवा° आ°—आ-पद्—–—प्रविष्ट होना, (किसी स्थान या स्थिति को चले जाना या प्राप्त करना
- **आपद्**—दिवा° आ°—आ-पद्—–—कष्ट फँसना, दुर्भाग्यग्रस्त होना
- **आपद्**—दिवा° आ°—आ-पद्—–—होना, घटित होना
- **आपद्**—पुं°—आ-पद्—–—प्रकाशित करना, सामने लाना, कार्यान्वित करना, निष्पन्न करना
- **आपद्**—पुं°—आ-पद्—–—निकालना, जन्म देना, पैदा करना
- **आपद्**—पुं°—आ-पद्—–—घटाना, कष्टग्रस्त करना, ले जाना
- **आपद्**—पुं°—आ-पद्—–—बदलना
- **आपद्**—पुं°—आ-पद्—–—नियंत्रण में लाना

- **उत्पद्**—दिवा॰ आ॰—उद्-पद्—-—जन्म लेना, पैदा होना, उदय होना, उत्पन्न होना, उगना
- **उत्पद्**—दिवा॰ आ॰—उद्-पद्—-—होना, घटित होना
- **उत्पद्**—पुं॰—उद्-पद्—-—पैदा करना, सर्जन करना, जन्म देना, उत्पन्न करना, कार्यान्वित करना, प्रकाशित करना
- **उत्पद्**—पुं॰—उद्-पद्—-—सामने लाना
- **उपपद्**—दिवा॰ आ॰—उप-पद्—-—पहुँचना, निकट जाना, पास जाना, पधारना
- **उपपद्**—दिवा॰ आ॰—उप-पद्—-—हासिल होना, प्राप्त होना, हिस्से में आना
- **उपपद्**—दिवा॰ आ॰—उप-पद्—-—होना, घटित होना, आ पड़ना, पैदा हो जाना
- **उपपद्**—दिवा॰ आ॰—उप-पद्—-—संभव होना, संभाव्य होना
- **उपपद्**—दिवा॰ आ॰—उप-पद्—-—उपयुक्त होना, योग्य होना, पर्याप्त होना, अनुरूप समुचित
- **उपपद्**—दिवा॰ आ॰—उप-पद्—-—आक्रमण करना
- **उपपद्**—पुं॰—उप-पद्—-—किसी स्थिति में लाना, पहुँचाना, प्राप्त कराना
- **उपपद्**—पुं॰—उप-पद्—-—नेतृत्व करना, ले जाना
- **उपपद्**—पुं॰—उप-पद्—-—तैयार होना
- **उपपद्**—पुं॰—उप-पद्—-—किसी को कोई वस्तु प्रदान करना, प्रस्तुत करना, उपहार देना
- **उपपद्**—पुं॰—उप-पद्—-—प्रकाशित करना, निष्पन्न करना, उपार्जन करना, कार्यान्वित करना, काम में लाना, अनुष्ठान करना
- **उपपद्**—पुं॰—उप-पद्—-—न्याय्य ठहराना, तर्क देना, प्रदर्शित करना, प्रमाणित करना
- **उपपद्**—पुं॰—उप-पद्—-—संपन्न करना, युक्त करना
- **निष्पद्**—दिवा॰ आ॰—निस्-पद्—-—निकलना, उगना
- **निष्पद्**—दिवा॰ आ॰—निस्-पद्—-—पैदा होना, प्रकाशित होना, उदय होना, कार्यान्वित होना
- **निष्पद्**—पुं॰—निस्-पद्—-—पैदा करना, प्रकाशित करना, जन्म देना, कार्यान्वित करना, तैयार करना
- **प्रपद्**—दिवा॰ आ॰—प्र-पद्—-—की ओर जाना, पहुँचना, आश्रय लेना, चले जाना, पहुँच जाना
- **प्रपद्**—दिवा॰ आ॰—प्र-पद्—-—आश्रय ग्रहण करना
- **प्रपद्**—दिवा॰ आ॰—प्र-पद्—-—किसी विशिष्ट अवस्था को जाना, पहुँचना या किसी विशिष्ट दशा में होना
- **प्रपद्**—दिवा॰ आ॰—प्र-पद्—-—प्राप्र करना, खोज लेना, हस्तगत करना, प्राप्त करना, हासिल करना
- **प्रपद्**—दिवा॰ आ॰—प्र-पद्—-—व्यवहार करना, बर्ताव करना
- **प्रपद्**—दिवा॰ आ॰—प्र-पद्—-—प्रविष्ट करना, अनुमति देना, सहमत होना, स्वीकार करना
- **प्रपद्**—दिवा॰ आ॰—प्र-पद्—-—निकट खिसकना, आना, (समय आदि का) पहुँचना

- **प्रपद्**—दिवा० आ०—प्र-पद्——चले चलना, प्रगति करना
- **प्रपद्**—दिवा० आ०—प्र-पद्——प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना
- **प्रतिपद्**—दिवा० आ०—प्रति-पद्——कदम रखना, जाना, पहुँचना, सहारा लेना (किसी व्यक्ति का) आश्रय लेना
- **प्रतिपद्**—दिवा० आ०—प्रति-पद्——ग्रहण करना, कदम रखना, लेना, अनुसरण करना, (मार्ग आदि)
- **प्रतिपद्**—दिवा० आ०—प्रति-पद्——पधारना, पहुँचना, प्राप्त करना
- **प्रतिपद्**—दिवा० आ०—प्रति-पद्——हासिल करना, उपलब्ध करना, प्राप्त करना, भाग लेना, हिस्सा लेना
- **प्रतिपद्**—दिवा० आ०—प्रति-पद्——स्वीकार करना, मान लेना
- **प्रतिपद्**—दिवा० आ०—प्रति-पद्——वसूल करना, फिर प्राप्त करना, पुनः उपलब्ध करना, ग्रहण करना
- **प्रतिपद्**—दिवा० आ०—प्रति-पद्——मान लेना, स्वीकार करना
- **प्रतिपद्**—दिवा० आ०—प्रति-पद्——थामना, ग्रहण करना, पकड़ना
- **प्रतिपद्**—दिवा० आ०—प्रति-पद्——विचार करना, ख़याल करना, सोचना, अवलोकन करना
- **प्रतिपद्**—दिवा० आ०—प्रति-पद्——अपने जिम्मे लेना, करने की प्रतिज्ञा करना, हाथ में लेना
- **प्रतिपद्**—दिवा० आ०—प्रति-पद्——हामी भरना, सहमत होना, स्वीकृति देना
- **प्रतिपद्**—दिवा० आ०—प्रति-पद्——करना, अनुष्ठान करना, अभ्यास करना, पालन करना
- **प्रतिपद्**—दिवा० आ०—प्रति-पद्——व्यवहार करना, बर्ताव करना, किसी का कोई कार्य करना
- **प्रतिपद्**—दिवा० आ०—प्रति-पद्——(उत्तर) देना, (प्रत्युत्तर) देना
- **प्रतिपद्**—दिवा० आ०—प्रति-पद्——प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना, जानकार होना
- **प्रतिपद्**—दिवा० आ०—प्रति-पद्——जानना, समझना, परिचित होना, सीखना, मालूम करना
- **प्रतिपद्**—दिवा० आ०—प्रति-पद्——घूमना, भ्रमण करना
- **प्रतिपद्**—दिवा० आ०—प्रति-पद्——होना, घटित होना
- **प्रतिपद्**—दिवा० आ०—प्रति-पद्——देना, प्रस्तुत करना, प्रदान करना, अभिदान करना, समर्पित करना
- **प्रतिपद्**—दिवा० आ०—प्रति-पद्——सिद्ध करना, प्रमाणित करना, प्रमाण देकर पक्का करना
- **प्रतिपद्**—दिवा० आ०—प्रति-पद्——व्याख्या करना, स्पष्ट करना
- **प्रतिपद्**—दिवा० आ०—प्रति-पद्——लाना या वापिस मोड़ना, (किसी स्थान पर) ले जाना
- **प्रतिपद्**—दिवा० आ०—प्रति-पद्——ख़याल करना, विचार करना
- **प्रतिपद्**—दिवा० आ०—प्रति-पद्——उपस्थिति की घोषणा करना, पुनः प्रस्तुत करना
- **प्रतिपद्**—दिवा० आ०—प्रति-पद्——उपार्जन करना

- **प्रतिपद्**—दिवा° आ°—प्रति-पद्—-—कार्यान्वित करना, निष्पन्न करना
- **विपद्**—दिवा° आ°—वि-पद्—-—बुरी तरह विफल होना, असफल होना, (व्यवसाय आदि), का विफल होना
- **विपद्**—दिवा° आ°—वि-पद्—-—दुर्भाग्यग्रस्त या दुर्दशाग्रस्त होना
- **विपद्**—दिवा° आ°—वि-पद्—-—विकलांग होना, अशक्त होना
- **विपद्**—दिवा° आ°—वि-पद्—-—मरना, नष्ट होना
- **व्यापद्**—दिवा° आ°—व्या-पद्—-—(पृथ्वी पर) उतरना, नीचे आना
- **व्यापद्**—दिवा° आ°—व्या-पद्—-—मरना, नष्ट होना
- **व्यापद्**—दिवा° आ°—व्या-पद्—-—मारना, कतल करना
- **सम्पद्**—दिवा° आ°—सम्-पद्—-—(तैयार माल) बाहर निकालना, सफलता प्राप्त करना, समृद्ध होना, सम्पन्न होना, पूरा होना
- **सम्पद्**—दिवा° आ°—सम्-पद्—-—पूरा होना, (संख्या आदि) जुड़ कर होना
- **सम्पद्**—दिवा° आ°—सम्-पद्—-—बन जाना, होना
- **सम्पद्**—दिवा° आ°—सम्-पद्—-—उदय होना, जन्म लेना, पैदा होना
- **सम्पद्**—दिवा° आ°—सम्-पद्—-—एक जगह पड़ना, एकत्र होना
- **सम्पद्**—दिवा° आ°—सम्-पद्—-—सुसज्जित होना, संपन्न होना, स्वामी होना
- **सम्पद्**—दिवा° आ°—सम्-पद्—-—(किसी ओर) प्रवृत्त होना, करवाना, पैदा करना
- **सम्पद्**—दिवा° आ°—सम्-पद्—-—प्राप्त करना, उपलब्ध करना, अधिग्रहण करना, हासिल करना
- **सम्पद्**—दिवा° आ°—सम्-पद्—-—संलग्न होना, लीन होना
- **सम्पद्**—दिवा° आ°—सम्-पद्—-—करवाना, होना, पैदा करना, सम्पन्न करना, पूरा करना, कार्यान्वित करना
- **सम्पद्**—दिवा° आ°—सम्-पद्—-—उपार्जन करना, प्राप्त करना, सज्जित करना, तैयार करना, अधिग्रहण करना, हासिल करना
- **सम्पद्**—दिवा° आ°—सम्-पद्—-—सज्जित करना, संपन्न करना, युक्त करना
- **सम्पद्**—दिवा° आ°—सम्-पद्—-—बदलना, रूपान्तरित करना
- **सम्पद्**—दिवा° आ°—सम्-पद्—-—करार या वादा करना
- **सम्प्रतिपद्**—दिवा° आ°—सम्प्रति-पद्—-—की ओर जाना, पहुँचना
- **सम्प्रतिपद्**—दिवा° आ°—सम्प्रति-पद्—-—विचार करना, ख़याल करना
- **समापद्**—दिवा° आ°—समा-पद्—-—घटित होना, घटना होना
- **समापद्**—दिवा° आ°—समा-पद्—-—हासिल करना, प्राप्त करना, उपलब्ध करना
- **पद्**—पुं°—-—पद् + क्विप्—पैर

- **पद्**—पुं०—-—पद् + क्विप्—चरण, चौथाई भाग (किसी कविता या श्लोक का)
- **पत्काशिन्**—पुं०—पद्-काशिन्—-—पैदल चलने वाला
- **पद्धतिः**—स्त्री०—पद्-हतिः—-—रास्ता, पथ, मार्ग, बटिया
- **पद्धतिः**—स्त्री०—पद्-हतिः—-—रेखा, पंक्ति, शृंखला
- **पद्धतिः**—स्त्री०—पद्-हतिः—-—उपनाम, वंशनाम, उपाधि या विशेषण, व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्दों के समास में प्रयुक्त होने वाला शब्द जो जाति या व्यवसाय का बोधक हो
- **पद्धतिः**—स्त्री०—पद्-हतिः—-—विवाहादि विधि को सूचित करने वाली पुस्तक
- **पद्धती**—स्त्री०—पद्-हती—-—रास्ता, पथ, मार्ग, बटिया
- **पद्धती**—स्त्री०—पद्-हती—-—रेखा, पंक्ति, शृंखला
- **पद्धती**—स्त्री०—पद्-हती—-—उपनाम, वंशनाम, उपाधि या विशेषण, व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्दों के समास में प्रयुक्त होने वाला शब्द जो जाति या व्यवसाय का बोधक हो
- **पद्धती**—स्त्री०—पद्-हती—-—विवाहादि विधि को सूचित करने वाली पुस्तक
- **पद्धिमम्**—नपुं०—पद्-हिमम्—-—पैरों का ठंडापन
- **पदम्**—नपुं०—-—पद् + अच्—पैर
- **पदेन**—नपुं०—-—-—पैदल
- **पदङ्कृ**——पदम्- कृ—-—कदम रखना
- **पदङ्कृ**——पदम्- कृ—-—प्रवृत्त होना, अधिकार करना, कब्जा करना
- **मूर्ध्निपदङ्कृ**——मूर्ध्निपदम्- कृ—-—किसी के सिर पर चढ़ना, दीन बनाना
- **मूर्ध्निपदङ्कृ**——मूर्ध्निपदम्- कृ—-—कदम, पग, डग
- **पदे पदे**—अव्य०—-—-—हर कदम पर
- **पदे पदे**—अव्य०—-—-—पदचिह्न, पद-छाप
- **पदे पदे**—अव्य०—-—-—चिह्न, अंक, छाप, निशान
- **पदे पदे**—अव्य०—-—-—स्थान, अवस्था, स्थिति
- **पदे पदे**—अव्य०—-—-—मर्यादा, दर्जा, पद, स्थिति या अवस्था
- **पदे पदे**—अव्य०—-—-—कारण, विषय, अवसर, वस्तु मामला या बात
- **पदे पदे**—अव्य०—-—-—आवास, पदार्थ, आशय
- **पदे पदे**—अव्य०—-—-—श्लोक का एक चरण, एक लाइन -विरचितपद (गेयम्) @ मेघ० ८६, १३३ @ मालवि० ५/२, @ श० ३/१६

- **पदे पदे**—अव्य०———–—विभक्तिचिह्न से युक्त पूरा शब्द
- **पदे पदे**—अव्य०———–—कर्तृ० , ए० व० को छोड़ कर शेष सभी व्यंजनादि विभक्तिचिह्नों का सांकेतिक नाम
- **पदे पदे**—अव्य०———–—वैदिक शब्दों को सन्धिविच्छेद करके पृथक् २ रखना, वैदिक मन्त्रों का पद-पाठ निर्धारित करना
- **पदे पदे**—अव्य०———–—बहाना
- **पदे पदे**—अव्य०———–—वर्गमूल
- **पदे पदे**—अव्य०———–—(वाक्य का) प्रभाग या खंड
- **पदे पदे**—अव्य०———–—लम्बाई की माप
- **पदे पदे**—अव्य०———–—प्ररक्षा, संधारण या प्ररक्षण
- **पदे पदे**—अव्य०———–—शतरंज की बिसात पर बना वर्गाकार घर
- **पदः**—पुं०———–—प्रकाश की किरण
- **पदाङ्कः**—पुं०—पदम्-अङ्कः——पदछाप
- **पदचिह्नम्**—नपुं०—पदम्-चिह्नम्——पदछाप
- **पदाङ्गुष्ठः**—पुं०—पदम्-अङ्गुष्ठः——पैर का अँगूठा
- **पदानुगः**—पुं०—पदम्-अनुगः——अनुगामी, सहचर
- **पदानुशासनम्**—नपुं०—पदम्-अनुशासनम्——शब्द विज्ञान, व्याकरण
- **पदान्तः**—पुं०—पदम्-अन्तः——शब्द का अन्त
- **पदान्तरम्**—नपुं०—पदम्-अन्तरम्——दूसरा पग, एक पग का अन्तराल
- **पदाब्जम्**—नपुं०—पदम्-अब्जम्——चरणकमल, कमल जैसे पग
- **पदाम्भोजम्**—नपुं०—पदम्-अम्भोजम्——चरणकमल, कमल जैसे पग
- **पदारविन्दम्**—नपुं०—पदम्-अरविन्दम्——चरणकमल, कमल जैसे पग
- **पदकमलम्**—नपुं०—पदम्-कमलम्——चरणकमल, कमल जैसे पग
- **पदपङ्कजम्**—नपुं०—पदम्-पङ्कजम्——चरणकमल, कमल जैसे पग
- **पदपद्मम्**—नपुं०—पदम्-पद्मम्——चरणकमल, कमल जैसे पग
- **पदार्थः**—पुं०—पदम्-अर्थः——शब्द का अर्थ
- **पदार्थः**—पुं०—पदम्-अर्थः——वस्तु या पदार्थ
- **पदार्थः**—पुं०—पदम्-अर्थः——शीर्षक या विषय (नैयायिक इसके आगे १६ उपशीर्षक गिनाते हैं)
- **पदार्थः**—पुं०—पदम्-अर्थः——अभिधेय, वह वस्तु जिसका कुछ नाम रक्खा जा सके, प्रवर्ग

- **पदाघातः**—पुं°—पदम्-आघातः—-—पैर का प्रहार या ठोकर
- **पदाजिः**—पुं°—पदम्-आजिः—-—पैदलसिपाही
- **पदावली**—स्त्री°—पदम्-आवली—-—शब्दों का समूह, शब्दों या पंक्तियों का अविच्छिन्न क्रम
- **पदासनम्**—नपुं°—पदम्-आसनम्—-—पादपीठ, पैर रखने की चौकी
- **पदक्रमः**—पुं°—पदम्-क्रमः—-—चलना, क़दम रखना
- **पदगः**—पुं°—पदम्-गः—-—पैदल सिपाही
- **पदच्युतः**—वि°—पदम्-च्युतः—-—पद से हटाया गया, गद्दी से उतारा हुआ
- **पदछेदः**—पुं°—पदम्-छेदः—-—शब्दों को अलग २ करना, पदच्छेद करना, वाक्य का संघटकों में पृथक्करण
- **पदविच्छेदः**—पुं°—पदम्-विच्छेदः—-—शब्दों को अलग २ करना, पदच्छेद करना, वाक्य का संघटकों में पृथक्करण
- **पदविग्रहः**—पुं°—पदम्-विग्रहः—-—शब्दों को अलग २ करना, पदच्छेद करना, वाक्य का संघटकों में पृथक्करण
- **पदन्यासः**—पुं°—पदम्-न्यासः—-—क़दम रखना, डग भरना, पग रखना
- **पदन्यासः**—पुं°—पदम्-न्यासः—-—पदचिह्न
- **पदन्यासः**—पुं°—पदम्-न्यासः—-—पैरों की एक मुद्रा विशेष
- **पदन्यासः**—पुं°—पदम्-न्यासः—-—गोखरु का पौधा
- **पदपङ्क्तिः**—स्त्री°—पदम्-पङ्क्तिः—-—पदचिह्नो की क़तार
- **पदपङ्क्तिः**—स्त्री°—पदम्-पङ्क्तिः—-—शब्दों का क्रम
- **पदपङ्क्तिः**—स्त्री°—पदम्-पङ्क्तिः—-—ईंट, पवित्र इष्टका
- **पदपाठः**—पुं°—पदम्-पाठः—-—वैदिक मंत्रों का एक विशेषक्रम जिसमें मंत्र का प्रत्येक शब्द उच्चारणविकारों से निरपेक्ष होकर अपने मूलरूप में ही लिखा जाता है और इसी मूलरूप में उच्चारण किया जाता है
- **पदपातः**—पुं°—पदम्-पातः—-—क़दम, (घोड़े का भी) क़दम
- **पदभञ्जनम्**—नपुं°—पदम्-भञ्जनम्—-—शब्दों का विग्रह, निरुक्ति
- **पदभञ्जिका**—स्त्री°—पदम्-भञ्जिका—-—एक टीका जिसमें किसी संदर्भ के शब्द, पृथक् २ किये जाते हैं तथा समासों का विग्रह कर दिया जाता है
- **पदमाला**—स्त्री°—पदम्-माला—-—जादू का गुर
- **पदवृत्तिः**—स्त्री°—पदम्-वृत्तिः—-—दो शब्दों के बीच अंतर या विराम
- **पदकम्**—नपुं°—-—पद + कन्—क़दम, स्थिति, पदवी
- **पदकः**—पुं°—-—पद + कन्—कण्ठ का एक आभूषण
- **पदकः**—पुं°—-—पद + कन्—पद पाठ का ज्ञाता

- **पदविः**—स्त्री°—-—पद् + अवि —रास्ता, मार्ग, पथ, बटिया, पवन पदवी
- **पदविः**—स्त्री°—-—पद् + अवि —अवस्था, स्थिति, दर्जा, मर्यादा, पदवी, पद
- **पदविः**—स्त्री°—-—पद् + अवि —जगह, स्थान
- **पदवी**—स्त्री°—-—पद् + ङीष्—रास्ता, मार्ग, पथ, बटिया, पवन पदवी
- **पदवी**—स्त्री°—-—पद् + ङीष्—अवस्था, स्थिति, दर्जा, मर्यादा, पदवी, पद
- **पदवी**—स्त्री°—-—पद् + ङीष्—जगह, स्थान
- **पदातः**—पुं°—-—पद्भ्यामतति-अत् + अच्—पैदल सिपाही
- **पदातः**—पुं°—-—पद्भ्यामतति-अत् + अच्—पैदल यात्री (पैदल चलने वाला)
- **पदातिः**—पुं°—-—पद्भ्यामतति-अत् + इन्—पैदल सिपाही
- **पदातिः**—पुं°—-—पद्भ्यामतति-अत् + इन्—पैदल यात्री (पैदल चलने वाला)
- **पदातिन्**—वि°—-—पदात + इनि—(सेना) जिसमें पैदल सिपाही हों
- **पदातिन्**—वि°—-—पदात + इनि—पैदल चलने वाला
- **पदातिन्**—पुं°—-—-—पैदल सिपाही
- **पदिक**—वि°—-—पादेन चरति-पाद + ष्ठन्, पादस्य पदादेश—पैदल चलने वाला
- **पदिक**—पुं°—-—-—पैदल आदमी
- **पद्मम्**—नपुं°—-—पद् + मन्—कमल
- **पद्मम्**—नपुं°—-—पद् + मन्—कमल जैसा आभूषण
- **पद्मम्**—नपुं°—-—पद् + मन्—कमल का रूप या आकृति
- **पद्मम्**—नपुं°—-—पद् + मन्—कमल की जड़
- **पद्मम्**—नपुं°—-—पद् + मन्—हाथी सूँड और चेहरे पर रंगीन निशान
- **पद्मम्**—नपुं°—-—पद् + मन्—कमल के आकार खड़ी की हुई सेना
- **पद्मम्**—नपुं°—-—पद् + मन्—विशेषरूप से बड़ी संख्या, (१०००००००००००००००)
- **पद्मम्**—नपुं°—-—पद् + मन्—सीसा
- **पद्मः**—पुं°—-—-—एक प्रकार का मंदिर
- **पद्मः**—पुं°—-—-—हाथी
- **पद्मः**—पुं°—-—-—साँप की एक जाती
- **पद्मः**—पुं°—-—-—राम का विशेषण

- **पद्मः**—पुं°—-——कुबेर के नौ ख़जानों में से एक
- **पद्मः**—पुं°—-——एक प्रकार का रतिबंध, मैथुन
- **पद्मा**—स्त्री°—-——सौभाग्य की देवी लक्ष्मी, विष्णु की पत्नी
- **पद्माक्ष**—वि°—पद्मम्-अक्ष—-—कमल जैसी सुन्दर आँखों वाला
- **पद्माक्षः**—पुं°—पद्मम्-अक्षः—-—विष्णु या सूर्य का विशेषण
- **पद्माक्षम्**—नपुं°—पद्मम्-अक्षम्—-—कमल गट्टा
- **पद्माकरः**—पुं°—पद्मम्-आकरः—-—एक विशाल सरोवर जिसमें कमल खिले हों
- **पद्माकरः**—पुं°—पद्मम्-आकरः—-—पोखर, पल्वल
- **पद्माकरः**—पुं°—पद्मम्-आकरः—-—कमलों का समूह
- **पद्मालयः**—पुं°—पद्मम्-आलयः—-—जगत्स्रष्टा ब्रह्मा या विशेषण
- **पद्मालया**—स्त्री°—पद्मम्-आलया—-—लक्ष्मी का विशेषण
- **पद्मासनम्**—नपुं°—पद्मम्-आसनम्—-—कमल पीठ
- **पद्मासनम्**—नपुं°—पद्मम्-आसनम्—-—एक प्रकार का योगासन
- **पद्मासनः**—पुं°—पद्मम्-आसनः—-—जगत्स्रष्टा ब्रह्मा या विशेषण
- **पद्माह्वम्**—नपुं°—पद्मम्-आह्वम्—-—लौंग
- **पद्मोद्भवः**—पुं°—पद्मम्-उद्भवः—-—ब्रह्मा का विशेषण
- **पद्मकरः**—पुं°—पद्मम्-करः—-—विष्णु का विशेषण
- **पद्महस्त**—पुं°—पद्मम्-हस्त—-—विष्णु का विशेषण
- **पद्मकरा**—स्त्री°—पद्मम्-करा—-—लक्ष्मी का नाम
- **पद्महस्ता**—स्त्री°—पद्मम्-हस्ता—-—लक्ष्मी का नाम
- **पद्मकर्णिका**—स्त्री°—पद्मम्-कर्णिका—-—पद्म का बीजकोश
- **पद्मकलिका**—स्त्री°—पद्मम्-कलिका—-—कमल का अनखिला फूल, कली
- **पद्मकेशरः**—पुं°—पद्मम्-केशरः—-—कमल फूल का रेशा
- **पद्मकेशरकम्**—नपुं°—पद्मम्-केशरकम्—-—कमल फूल का रेशा
- **पद्मकोशः**—पुं°—पद्मम्-कोशः—-—कमल का संपुट
- **पद्मकोशः**—पुं°—पद्मम्-कोशः—-—संपुटित कमल के आकार की उँगलियों की एक मुद्रा
- **पद्मकोषः**—पुं°—पद्मम्-कोषः—-—कमल का संपुट

- **पद्मकोषः**—पुं०—पद्मम्-कोषः—–—संपुटित कमल के आकार की उँगलियों की एक मुद्रा
- **पद्मखण्डम्**—नपुं०—पद्मम्-खण्डम्—–—कमलों का समूह
- **पद्मषण्डम्**—नपुं०—पद्मम्-षण्डम्—–—कमलों का समूह
- **पद्मगन्ध**—वि०—पद्मम्-गन्ध—–—कमल की गंधवाला या कमल की सी गंधवाला
- **पद्मगन्धि**—वि०—पद्मम्-गन्धि—–—कमल की गंधवाला या कमल की सी गंधवाला
- **पद्मगर्भः**—पुं०—पद्मम्-गर्भः—–—ब्रह्मा का विशेषण
- **पद्मगर्भः**—पुं०—पद्मम्-गर्भः—–—विष्णु का विशेषण
- **पद्मगर्भः**—पुं०—पद्मम्-गर्भः—–—सूर्य का विशेषण
- **पद्मगुणा**—स्त्री०—पद्मम्-गुणा—–—धन की देवी लक्ष्मी का विशेषण
- **पद्मगृहा**—स्त्री०—पद्मम्-गृहा—–—धन की देवी लक्ष्मी का विशेषण
- **पद्मजः**—पुं०—पद्मम्-जः—–—कमल से उत्पन्न ब्रह्मा के विशेषण
- **पद्मजातः**—पुं०—पद्मम्-जातः—–—कमल से उत्पन्न ब्रह्मा के विशेषण
- **पद्मभयः**—पुं०—पद्मम्-भयः—–—कमल से उत्पन्न ब्रह्मा के विशेषण
- **पद्मभूः**—पुं०—पद्मम्-भूः—–—कमल से उत्पन्न ब्रह्मा के विशेषण
- **पद्मयोनिः**—पुं०—पद्मम्-योनिः—–—कमल से उत्पन्न ब्रह्मा के विशेषण
- **पद्मसम्भवः**—पुं०—पद्मम्-सम्भवः—–—कमल से उत्पन्न ब्रह्मा के विशेषण
- **पद्मतन्तुः**—पुं०—पद्मम्-तन्तुः—–—कमल का रेशेदार डंठल
- **पद्मनाभः**—पुं०—पद्मम्-नाभः—–—विष्णु का विशेषण
- **पद्मनाभि**—पुं०—पद्मम्-नाभि—–—विष्णु का विशेषण
- **पद्मनालम्**—नपुं०—पद्मम्-नालम्—–—कमल का डंठल
- **पद्मपाणिः**—पुं०—पद्मम्-पाणिः—–—ब्रह्मा का विशेषण
- **पद्मपाणिः**—पुं०—पद्मम्-पाणिः—–—विष्णु का विशेषण
- **पद्मपुष्पः**—पुं०—पद्मम्-पुष्पः—–—कर्णिकार का पौधा
- **पद्मबन्धः**—पुं०—पद्मम्-बन्धः—–—एक प्रकार की कृत्रिम रचना जिससें शब्दो को कमल-फूल के रूप में व्यवस्थित किया हो
- **पद्मबन्धुः**—पुं०—पद्मम्-बन्धुः—–—सूर्य
- **पद्मबन्धुः**—पुं०—पद्मम्-बन्धुः—–—मधुमक्खी
- **पद्मरागः**—पुं०—पद्मम्-रागः—–—लाल, माणिक्य

- **पद्मरागम्**—नपुं°—पद्मम्-रागम्—-—लाल, माणिक्य
- **पद्मरेखा**—स्त्री°—पद्मम्-रेखा—-—हथेली में (कमल फूल के आकार की) रेखायें जो अत्यन्त धनबान होने का लक्षण हैं
- **पद्मलाञ्छन**—पुं°—पद्मम्-लाञ्छन—-—ब्रह्मा का विशेषण
- **पद्मलाञ्छन**—पुं°—पद्मम्-लाञ्छन—-—कुबेर का विशेषण
- **पद्मलाञ्छन**—पुं°—पद्मम्-लाञ्छन—-—सूर्य और राजा का विशेषण
- **पद्मलाञ्छना**—स्त्री°—पद्मम्-लाञ्छना—-—धन की देवी लक्ष्मी का विशेषण
- **पद्मलाञ्छना**—स्त्री°—पद्मम्-लाञ्छना—-—या विद्या की देवी सरस्वती का विशेषण
- **पद्मवासा**—स्त्री°—पद्मम्-वासा—-—लक्ष्मी का विशेषण
- **पद्मकम्**—नपुं°—-—पद्म + कन्—कमलफूल के आकार की व्यूहरचना में स्थित सेना
- **पद्मकम्**—नपुं°—-—पद्म + कन्—हाथी की सूँड और चेहरे पर रंगीन स्थान
- **पद्मकम्**—नपुं°—-—पद्म + कन्—बैठने की विशेष मुद्रा
- **पद्मकिन्**—पुं°—-—पद्मक + इनि—हाथी
- **पद्मकिन्**—पुं°—-—पद्मक + इनि—भोजपत्र का वृक्ष
- **पद्मावती**—स्त्री°—-—पद्म + मतुप्, वत्वम्, दीर्घश्च—लक्ष्मी का विशेषण
- **पद्मावती**—स्त्री°—-—पद्म + मतुप्, वत्वम्, दीर्घश्च—एक नदी का नाम
- **पद्मिन्**—वि°—-—पद्म + इनि—कमल रख़ने वाला
- **पद्मिन्**—वि°—-—पद्म + इनि—चितकबरा
- **पद्मिन्**—पुं°—-—पद्म + इनि—हाथी
- **पद्मिनी**—स्त्री°—-—पद्म + इनि+ङीप्—कमल का पौधा
- **पद्मिनी**—स्त्री°—-—पद्म + इनि+ङीप्—कमलफूलों का समूह
- **पद्मिनी**—स्त्री°—-—पद्म + इनि+ङीप्—सरोवर या झील जिसमें कमल लगे हुए हों
- **पद्मिनी**—स्त्री°—-—पद्म + इनि+ङीप्—कमल का रेशेदार डंठल
- **पद्मिनी**—स्त्री°—-—पद्म + इनि+ङीप्—हथिनी
- **पद्मिनी**—स्त्री°—-—पद्म + इनि+ङीप्—रतिशास्त्र के लेखकों ने स्त्रियों के चार भेद किये हैं उसमें प्रथम प्रकार की स्त्री,
- **पद्मेशयः**—पुं°—-—पद्मे शेते-शी + अच्, अलु° स°—विष्णु का विशेषण
- **पद्य**—वि°—-—पद् + यत्—पद या पंक्तियों वाला
- **पद्य**—वि°—-—पद् + यत्—चरण या पद को मापने वाला

- **पद्यः**—पुं०————शूद्र
- **पद्यः**—पुं०————शब्द का एक भाग
- **पद्या**—स्त्री०————पगडंडी, पथ, बटिया
- **पद्यम्**—नपुं०————(चार चरणों से युक्त) श्लोक, कविता
- **पद्यम्**—नपुं०————प्रशंसा, स्तुति
- **पद्र**—पुं०——पद्यतेऽस्मिन् पद् + रक्—गाँव
- **पद्वः**—पुं०——पद् + वन्—भूलोक, मर्त्य लोक
- **पद्वः**—पुं०——पद् + वन्—रथ
- **पद्वः**—पुं०——पद् + वन्—मार्ग
- **पन्**—भ्वा० उभ० <पनायति>, <पनायते>, <पनायित>, <पनित>————प्रशंसा करना, स्तुति करना
- **पनसः**—पुं०——पनाय्यते स्तूयतेऽनेन देवः-पन् + असच्—कटहल का वृक्ष
- **पनसः**—पुं०——पनाय्यते स्तूयतेऽनेन देवः-पन् + असच्—काँटा
- **पनसम्**—नपुं०————कटहल का फल
- **पंथक**—वि०——पथि जातः-पथिन् + कन्, पन्थादेशः—मार्ग में उत्पन्न
- **पन्न**—भू० क० कृ०——पद् + क्त—गिरा हुआ, डूबा हुआ, नीचे गया हुआ, अवतरित
- **पन्न**—भू० क० कृ०——पद् + क्त—बीता हुआ
- **पन्नगः**—पुं०—पन्न-गः——साँप, सर्प
- **पन्नगम्**—नपुं०—पन्न-गम्——सीसा
- **पन्नारिः**—पुं०—पन्न-अरिः——गरुड के विशेषण
- **पन्नाशनः**—पुं०—पन्न-अशनः——गरुड के विशेषण
- **पन्ननाशनः**—पुं०—पन्न-नाशनः——गरुड के विशेषण
- **पपिः**—पुं०——पातिलोकम्-पिबति वा, पा + कि, द्वित्वम्—चन्द्रमा
- **पपीः**—पुं०——पा + ई, द्वित्वं किच्च—चन्द्रमा
- **पपीः**—पुं०——पा + ई, द्वित्वं किच्च—सूर्य
- **पपु**—वि०——पा + कु, द्वित्वम्—पालन-पोषण करने वाला, रक्षा करने वाला
- **पपुः**—स्त्री०——पा + कु, द्वित्वम्—धात्री माता, प्रतिपालिका
- **पम्पा**—स्त्री०——पाति रक्षति महर्ष्यादीन्-पा० द्वित्वम् मुडागमश्च, नि०—दंडकारण्य का एक सरोवर

- **पम्पा**—स्त्री॰——पाति रक्षति महर्ष्यादीन्-पा॰ द्वित्वम् मुडागमश्च, नि॰—भारत के दक्षिण में एक नदी का नाम
- **पयस्**—नपुं॰——पय् + असुन्, पा + असुन्, इकारादेश्च—पानी
- **पयस्**—नपुं॰——पय् + असुन्, पा + असुन्, इकारादेश्च—दूध
- **पयस्**—नपुं॰——पय् + असुन्, पा + असुन्, इकारादेश्च—वीर्य
- **पयोगलः**—पुं॰—पयस्-गलः——ओला
- **पयोगलः**—पुं॰—पयस्-गलः——टापू
- **पयोडः**—पुं॰—पयस्-डः——ओला
- **पयोडः**—पुं॰—पयस्-डः——टापू
- **पयोघनम्**—नपुं॰—पयस्-घनम्——ओला
- **पयोचयः**—पुं॰—पयस्-चयः——जलाशय या सरोवर
- **पयोजन्मन्**—पुं॰—पयस्-जन्मन्——बादल
- **पयोदः**—पुं॰—पयस्-दः——बादल
- **पयोसुहृद्**—पुं॰—पयस्-सुहृद्——मोर
- **पयोधरः**—पुं॰—पयस्-धरः——बादल
- **पयोधरः**—पुं॰—पयस्-धरः——स्त्री की छाती
- **पयोधरः**—पुं॰—पयस्-धरः——ऐन औडी
- **पयोधरः**—पुं॰—पयस्-धरः——नारियल का पेड़
- **पयोधरः**—पुं॰—पयस्-धरः——रीढ़ की हड्डी
- **पयोधस्**—पुं॰—पयस्-धस्——समुद्र
- **पयोधस्**—पुं॰—पयस्-धस्——तालाब, सरोवर, जलाशय
- **पयोधिः**—पुं॰—पयस्-धिः——समुद्र
- **पयोनिधः**—पुं॰—पयस्-निधः——समुद्र
- **पयोमुच्**—पुं॰—पयस्-मुच्——बादल
- **पयोवाहः**—पुं॰—पयस्-वाहः——बादल
- **पयस्य**—वि॰——पयसो विकारः पयसः इदं वा-पयस् + यत्—दूध से युक्त, दूध से बना हुआ
- **पयस्य**—वि॰——पयसो विकारः पयसः इदं वा-पयस् + यत्—पानी से युक्त
- **पयस्यः**—पुं॰————बिल्ली

- **पयस्या**—स्त्री°—-—पयसो विकारः पयसः इदं वा-पयस् + यत्+टाप्—दही
- **पयस्वल**—वि°—-—पयस् + वलच्—दूध से भरा हुआ, यथेष्ट दूध देने वाला
- **पयस्वलः**—पुं°—-—पयस् + वलच्—बकरी
- **पयस्विन्**—वि°—-—पयस् + विनि—दूधिया, जल से युक्त
- **पयस्विनी**—स्त्री°—-—पयस् + विनि+ङीप्—दूध देने वाली गाय
- **पयस्विनी**—स्त्री°—-—पयस् + विनि+ङीप्—नदी
- **पयस्विनी**—स्त्री°—-—पयस् + विनि+ङीप्—बकरी
- **पयस्विनी**—स्त्री°—-—पयस् + विनि+ङीप्—रात
- **पयोधिकम्**—नपुं°—-—पयोधि + फै + क—समुद्रझग
- **पयोष्णी**—स्त्री°—-—-—विन्ध्यपर्वत से निकलने वाली एक नदी
- **पर**—वि°—-—पृ° + अप्, कर्तरि अच् वा—दूसरा, भिन्न, अम्य
- **पर**—वि°—-—पृ° + अप्, कर्तरि अच् वा—दूरस्थित, हटाया हुआ, दूर का
- **पर**—वि°—-—पृ° + अप्, कर्तरि अच् वा—परे, आगे, के दूसरी ओर
- **पर**—वि°—-—पृ° + अप्, कर्तरि अच् वा— बाद का, पीछे का, आगे का
- **पर**—वि°—-—पृ° + अप्, कर्तरि अच् वा—उच्चतर, श्रेष्ठ
- **पर**—वि°—-—पृ° + अप्, कर्तरि अच् वा—उच्चतम, महत्तम, पूज्यतम, प्रमुख, मुख्य़, सर्वोत्तम, प्रधान
- **पर**—वि°—-—पृ° + अप्, कर्तरि अच् वा—आगे का वर्ण या ध्वनि रखने वाला, पीछे का
- **पर**—वि°—-—पृ° + अप्, कर्तरि अच् वा—विदेशी, अपरिचित, अजनवी
- **पर**—वि°—-—पृ° + अप्, कर्तरि अच् वा—विरोधी, शत्रुतापूर्ण, प्रतिकूल
- **पर**—वि°—-—पृ° + अप्, कर्तरि अच् वा—अधिक, अतिरिक्त, बचा हुआ
- **पर**—वि°—-—पृ° + अप्, कर्तरि अच् वा—अन्तिम, आखीर का
- **पर**—वि°—-—पृ° + अप्, कर्तरि अच् वा—किसी वस्तु की उच्चतम पदार्थ समझने वाला, लीन, तुला हुआ, अनन्यभक्त, पूर्णतः व्यस्त
- **परः**—पुं°—-—पृ° + अप्, कर्तरि अच् वा—दूसरा, व्यक्ति, अपरिचित, विदेशी
- **परः**—पुं°—-—पृ° + अप्, कर्तरि अच् वा—शत्रु, दुश्मन
- **परम्**—नपुं°—-—पृ° + अप्, कर्तरि अच् वा—उच्चतम स्वर या बिन्दु, चरम बिन्दु
- **परम्**—नपुं°—-—पृ° + अप्, कर्तरि अच् वा—परमात्मा
- **परम्**—नपुं°—-—पृ° + अप्, कर्तरि अच् वा—मोक्ष

- **परम्**—अपा॰—-—पृ॰ + अप्, कर्तरि अच् वा—परे, अधिक, में से
- **परम्**—अपा॰—-—पृ॰ + अप्, कर्तरि अच् वा—के पश्चात्
- **परम्**—नपुं॰—-—पृ॰ + अप्, कर्तरि अच् वा—उस पर, उसके बाद
- **परम्**—नपुं॰—-—पृ॰ + अप्, कर्तरि अच् वा—परंतु, लोभी
- **परम्**—नपुं॰—-—पृ॰ + अप्, कर्तरि अच् वा—अन्यथा
- **परम्**—नपुं॰—-—पृ॰ + अप्, कर्तरि अच् वा—ऊँची मात्रा में , अधिकता के साथ, अत्यधिक, पूरी तरह से, सर्वथा
- **परम्**—नपुं॰—-—पृ॰ + अप्, कर्तरि अच् वा—अत्यंत
- **परेण**—अव्य॰—-—-—आगे, परे, अपेक्षाकृत अधिक
- **परेण**—अव्य॰—-—-—इसके पश्चात्
- **परेण**—अव्य॰—-—-—के बाद
- **परे** —अव्य॰—-—-—बाद में, उसके पश्चात्
- **परे** —अव्य॰—-—-—भविष्य में
- **पराङ्गम्**—नपुं॰—पर-अङ्गम्—-—शरीर का पिछला
- **पराङ्गदः**—पुं॰—पर-अङ्गदः—-—शिव का विशेषण
- **परादनः**—पुं॰—पर-अदनः—-—अरब या पर्शिया के देशों में पाया जाने वाला घोड़ा
- **पराधीन**—वि॰—पर-अधीन—-—पराधीन, पराश्रित, परवश
- **परान्ताः**—पुं॰—पर-अन्ताः—-—एक राष्ट्र का नाम
- **परान्तकः**—पुं॰—पर-अन्तकः—-—शिव का विशेषण
- **परान्न**—वि॰—पर-अन्न—-—दूसरे के भोजन पर निर्वाह करने वाला
- **परान्नम्**—नपुं॰—पर-अन्नम्—-—दूसरेका भोजन
- **परपरिपुष्टता**—स्त्री॰—पर-परिपुष्टता—-—दूसरों के भोजन से पालन-पोषण
- **परभोजिन्**—वि॰—पर-भोजिन्—-—दूसरों के भोजन पर निर्वाह करने वाला
- **परापर**—वि॰—पर-अपर—-—दूर और निकट, दूर और समीप
- **परापर**—वि॰—पर-अपर—-—पूर्ववर्ती और पश्चवर्ती
- **परापर**—वि॰—पर-अपर—-—पहले और बाद में , पहले और पीछे
- **परापर**—वि॰—पर-अपर—-—ऊंचा और नीचा, सबसे उत्तम और सबसे खराब
- **परापरम्**—नपुं॰—पर-अपरम्—-—महत्तम और लघूत्तम संख्याओं के बीच की वस्तु, जाति (जो श्रेणी और व्यक्ति दोनों के मध्य विद्यमान हो)

- **परामृतम्**—नपुं°—पर-अमृतम्—-—वृष्टि
- **परायण**—वि°—पर-अयण—-—अनुरक्त, भक्त, संसक्त
- **परायण**—वि°—पर-अयण—-—आश्रित, वशीभूत
- **परायण**—वि°—पर-अयण—-—तुला हुआ, अनन्य भक्त, सर्वथा लीन
- **परायन**—वि°—पर-अयन—-—अनुरक्त, भक्त, संसक्त
- **परायन**—वि°—पर-अयन—-—आश्रित, वशीभूत
- **परायन**—वि°—पर-अयन—-—तुला हुआ, अनन्य भक्त, सर्वथा लीन
- **शोकपर**—वि°—शोक-पर—-—
- **परायणम्**—नपुं°—पर-अयणम्—-—प्रधान या चरम उद्देश्य, मुख्य ध्येय, सर्वोत्तम या अन्तिम सहारा
- **परार्थ**—वि°—पर-अर्थ—-—दूसरा ही उद्देश्य या अर्थ रखने वाला
- **परार्थ**—वि°—पर-अर्थ—-—दूसरे के लिए अभिप्रेत, अन्य के लिए किया हुआ
- **परार्थः**—पुं°—पर-अर्थः—-—सर्वोच्च हित या लाभ
- **परार्थः**—पुं°—पर-अर्थः—-—किसी दूसरे का हित
- **परार्थः**—पुं°—पर-अर्थः—-—मुख्य अर्थ
- **परार्थः**—पुं°—पर-अर्थः—-—सर्वोच्च उद्देश्य (अर्थात् मैथुन)
- **परार्थम्**—अव्य°—पर-अर्थम्—-—दूसरे के लिए
- **परार्थे**—अव्य°—पर-अर्थे—-—दूसरे के लिए
- **परार्धम्**—नपुं°—पर-अर्धम्—-—दूसरा भाग , उत्तरार्ध
- **परार्धम्**—नपुं°—पर-अर्धम्—-—विशेष रूप से बड़ी संख्या अर्थात् १००, ०००,०००,०००,०००,०००
- **परार्ध्य**—वि°—पर-अर्ध्य—-—दूसरे किनारे पर होने वाला
- **परार्ध्य**—वि°—पर-अर्ध्य—-—संख्या में अत्यंत दूर का
- **परार्ध्य**—वि°—पर-अर्ध्य—-—अत्यंत श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, परम श्रेष्ठ, अत्यंत मूल्यवान, सर्वोच्च, परम
- **परार्ध्य**—वि°—पर-अर्ध्य—-—अत्यंत कीमती
- **परार्ध्य**—वि°—पर-अर्ध्य—-—अत्यंत सुन्दर, प्रियतम, मनोज्ञतम
- **परार्ध्यम्**—नपुं°—पर-अर्ध्यम्—-—अधिकतम
- **परार्ध्यम्**—नपुं°—पर-अर्ध्यम्—-—अनन्त या असीम संख्या
- **परावरम्**—वि°—पर-अवरम्—-—दूर और निकट

- **परावरम्**—वि°—पर-अवरम्—-—सवेरी और अवेरी
- **परावरम्**—वि°—पर-अवरम्—-—पहले का और बाद का या आगामी
- **परावरम्**—वि°—पर-अवरम्—-—उच्चतर और निम्नतर
- **परावरम्**—वि°—पर-अवरम्—-—परंपराप्राप्त
- **परावरम्**—वि°—पर-अवरम्—-—सर्वसम्मिलित
- **पराहः**—पुं°—पर-अहः—-—दूसरे दिन
- **पराह्णः**—पुं°—पर-अह्णः—-—तीसरा पहर, दिन का उत्तरार्ध भाग
- **पराचित**—वि°—पर-आचित—-—दूसरे द्वारा पाला-पोसा हुआ
- **पराचितः**—पुं°—पर-आचितः—-—दास
- **परात्मन्**—पुं°—पर-आत्मन्—-—परमात्मा
- **परायत्त**—वि°—पर-आयत्त—-—दूसरे के अधीन, पराश्रित, पराधीन
- **परायुस्**—पुं°—पर-आयुस्—-—ब्रह्मा का विशेषण
- **पराविद्धः**—पुं°—पर-आविद्धः—-—कुवेर का विशेषण
- **पराविद्धः**—पुं°—पर-आविद्धः—-—विष्णु की उपाधि
- **पराश्रयः**—पुं°—पर-आश्रयः—-—परावलंबन, दूसरे की अधीनता
- **परासङ्गः**—पुं°—पर-आसङ्गः—-—परावलंबन, दूसरे की अधीनता
- **परास्कन्दिन्**—पुं°—पर-आस्कन्दिन्—-—चोर, लुटेरा
- **परेतर**—वि°—पर-इतर—-—शत्रुता से भिन्न अर्थात् मैत्री पूर्ण, कृपालु
- **परेतर**—वि°—पर-इतर—-—अपना, निजी
- **परेशः**—पुं°—पर-ईशः—-—ब्रह्मा का विशेषण
- **परोत्कर्षः**—पुं°—पर-उत्कर्षः—-—दूसरे की समृद्धि
- **परोपकारः**—पुं°—पर-उपकारः—-—दूसरों की भलाई करना जनहितैषिता, उदारता, धर्मार्थ
- **परोपजापः**—पुं°—पर-उपजापः—-—शत्रुओं में फूट डालना
- **परोपरुद्धः**—वि°—पर-उपरुद्धः—-—शत्रु के द्वारा घेरा हुआ
- **परोढा**—स्त्री°—पर-ऊढा—-—दूसरे की पत्नी
- **परैधित**—वि°—पर-एधित—-—दूसरे द्वारा पालित-पोषित
- **परैधितः**—पुं°—पर-एधितः—-—सेवक

- **परैधितः**—पुं°—पर-एधितः—-—कोयल
- **परकलत्रम्**—नपुं°—पर-कलत्रम्—-—दूसरे की पत्नी
- **पराभिगमनम्**—नपुं°—पर-अभिगमनम्—-—व्यभिचार
- **परकार्यम्**—नपुं°—पर-कार्यम्—-—दूसरे का व्यवसाय या काम
- **परक्षेत्रम्**—नपुं°—पर-क्षेत्रम्—-—दूसरे का शरीर
- **परक्षेत्रम्**—नपुं°—पर-क्षेत्रम्—-—दूसरे का क्षेत्र
- **परक्षेत्रम्**—नपुं°—पर-क्षेत्रम्—-—दूसरे की पत्नी
- **परगामिम्**—वि°—पर-गामिम्—-—दूसरे के साथ रहने वाला
- **परगामिम्**—वि°—पर-गामिम्—-—दूसरे से संबंध रखने वाला
- **परगामिम्**—वि°—पर-गामिम्—-—दूसरे के लिए लाभदायक
- **परग्रंथिः**—स्त्री°—पर-ग्रंथिः—-—जोड़, गांठ
- **परचक्रम्**—नपुं°—पर-चक्रम्—-—शत्रु की सेना
- **परचक्रम्**—नपुं°—पर-चक्रम्—-—शत्रु के द्वारा आक्रमण ६ ईतियों में से एक
- **परछंदः**—पुं°—पर-छंदः—-—दूसरे की इच्छा
- **परानुवर्तनम्**—नपुं°—पर-अनुवर्तनम्—-—दूसरे की इच्छा का अनुगमन करना
- **परछिद्रम्**—नपुं°—पर-छिद्रम्—-—दूसरे की कमजोरी, दूसरे की त्रुटि
- **परजात**—वि°—पर-जात—-—दूसरे से उत्पन्न
- **परजात**—वि°—पर-जात—-—जीविका के लिए दूसरे पर आश्रित
- **परजातः**—पुं°—पर-जातः—-—सेवक
- **परजित**—वि°—पर-जित—-—दूसरे से जीता हुआ
- **परजितः**—पुं°—पर-जितः—-—कोयल
- **परतंत्र**—वि°—पर-तंत्र—-—दूसरे पर आश्रित, पराधीन, अनुसेवी
- **परदाराः**—पुं°—पर-दाराः—-—दूसरे की पत्नी
- **परदारिन्**—पुं°—पर-दारिन्—-—व्यभिचारी, परस्त्रीगामी
- **परदुखम्**—नपुं°—पर-दुःखम्—-—दूसरे का कष्ट या दुःख
- **परदेशः**—पुं°—पर-देशः—-—विदेश
- **परदेशिन्**—पुं°—पर-देशिन्—-—विदेशी

- **परद्रोहिन्**—वि°—पर-द्रोहिन्—-—दूसरों से घृणा करने वाला, विरोधी, शत्रुतापूर्ण
- **परद्वेषिध्**—वि°—पर-द्वेषिध्—-—दूसरों से घृणा करने वाला, विरोधी, शत्रुतापूर्ण
- **परधनम्**—नपुं°—पर-धनम्—-—दूसरे की संपत्ति
- **परधर्मः**—पुं°—पर-धर्मः—-—दूसरे का धर्म
- **परधर्मः**—पुं°—पर-धर्मः—-—दूसरे का कर्तव्य या कार्य
- **परधर्मः**—पुं°—पर-धर्मः—-—दूसरी जाति का कर्तव्य
- **परनिपातः**—पुं°—पर-निपातः—-—समास में शब्द की अनियमित पश्चवर्तिता अर्थात् भूतपूर्वः
- **परपक्षः**—पुं°—पर-पक्षः—-—शत्रु का दल या पक्ष
- **परपदम्**—नपुं°—पर-पदम्—-—उच्चतम स्थिति, प्रमुखता
- **परपदम्**—नपुं°—पर-पदम्—-—मोक्ष
- **परपिंडः**—पुं°—पर-पिंडः—-—दूसरे का भोजन, दूसरों से दिया गया भोजन
- **पराद्**—वि°—पर-अद्—-—वह जो दूसरों का भोजन कर या जो दूसरे के खर्च पर जीवन निर्वाह करे
- **पराद्**—पुं°—पर-अद्—-—सेवक
- **पररत**—वि°—पर-रत—-—दूसरे के भोजन पर पलने वाला
- **परपुरुषः**—पुं°—पर-पुरुषः—-—दूसरा मनुष्य, अपरिचित
- **परपुरुषः**—पुं°—पर-पुरुषः—-—परमात्मा, विष्णु
- **परपुरुषः**—पुं°—पर-पुरुषः—-—दूसरी स्त्री का पति
- **परपुष्ट**—वि°—पर-पुष्ट—-—दूसरे के द्वारा पाला पोसा हुआ
- **परपुष्टः**—पुं°—पर-पुष्टः—-—कोयल
- **परमहोत्सवः**—पुं°—पर-महोत्सवः—-—आम का वृक्ष
- **परपुष्टा**—स्त्री°—पर-पुष्टा—-—कोयल
- **परपुष्टा**—स्त्री°—पर-पुष्टा—-—वेश्या, रंडी
- **परपूर्वा**—स्त्री°—पर-पूर्वा—-—वह स्त्री जिसका दूसरा पति हो
- **परप्रेष्यः**—पुं°—पर-प्रेष्यः—-—सेवक, घरेलू नौकर
- **परब्रह्मन्**—नपुं°—पर-ब्रह्मन्—-—परमात्मा
- **परभागः**—पुं°—पर-भागः—-—दूसरे का हिस्सा
- **परभागः**—पुं°—पर-भागः—-—श्रेष्ठ गुण

- **परभागः**—पुं०—पर-भागः—-—सौभाग्य, समृद्धि
- **परभागः**—पुं०—पर-भागः—-—सर्वोत्तमता, श्रेष्ठता, सर्वोपरिता
- **परभागः**—पुं०—पर-भागः—-—अधिकता, बाहुल्य, ऊँचाई
- **परभाषा**—स्त्री०—पर-भाषा—-—विदेशी भाषा
- **परभुक्त**—वि०—पर-भुक्त—-—दूसरे के द्वारा भोगा हुआ
- **परभृत्**—पुं०—पर-भृत्—-—कौवा (क्योंकि यह दूसरे का अर्थात् कोयल का पालन-पोषण करता हैं)
- **परभृतः**—पुं०—पर-भृतः—-—कोयल (क्योंकि यह दूसरे दे द्वारा अर्थात् कौवे से पाली पोसी जाती है)
- **परभृता**—स्त्री०—पर-भृता—-—कोयल (क्योंकि यह दूसरे दे द्वारा अर्थात् कौवे से पाली पोसी जाती है)
- **परमृत्युः**—पुं०—पर-मृत्युः—-—कौवा
- **पररमणः**—पुं०—पर-रमणः—-—विवाहित स्त्री का यार या जार
- **परलोकः**—पुं०—पर-लोकः—-—दूसरा (आगामी) दुनिया
- **परविधिः**—पुं०—पर-विधिः—-—अन्त्येष्टि संस्कार
- **परवश**—वि०—पर-वश—-—दूसरे के अधीन, पराश्रित
- **परवश्य**—वि०—पर-वश्य—-—दूसरे के अधीन, पराश्रित
- **परवाच्यम्**—नपुं०—पर-वाच्यम्—-—दोष या त्रुटि
- **परवाणिः**—पुं०—पर-वाणिः—-—न्यायकर्ता
- **परवाणिः**—पुं०—पर-वाणिः—-—वर्ष
- **परवाणिः**—पुं०—पर-वाणिः—-—कार्तिकेय के मोर का नाम
- **परवादः**—पुं०—पर-वादः—-—अफ़वाह, जनश्रुति
- **परवादः**—पुं०—पर-वादः—-—आपत्ति, विवाद
- **परवादिन्**—पुं०—पर-वादिन्—-—झगड़ालू विवादी
- **परव्रतः**—पुं०—पर-व्रतः—-—धृतराष्ट्र का विशेषण
- **परश्वस्**—अव्य०—पर-श्वस्—-—परसों (आगामी)
- **परसंज्ञकः**—पुं०—पर-संज्ञकः—-—आत्मा
- **परस्वर्ण**—वि० —पर-स्वर्ण—-—अग्रवर्ती वर्ण का सजातीय
- **परसेवा**—स्त्री०—पर-सेवा—-—दूसरे को सेवा
- **परस्त्री**—स्त्री०—पर-स्त्री—-—दूसरे की पत्नी

- **परस्वम्**—नपुं°—पर-स्वम्—-—दूसरे की संपत्ति
- **परहरणम्**—नपुं°—पर-हरणम्—-—दूसरे की संपत्ति हर लेना
- **परहन्**—वि°—पर-हन्—-—शत्रुओं को मारने वाला
- **परहितम्**—नपुं°—पर-हितम्—-—दूसरे का भला
- **परकीय**—वि°—-—परस्य इदम्-पर + छ, कुक्—दूसरे से संबंध रखने वाला
- **परकीया**—स्त्री°—-—-—दूसरे की पत्नी, जो अपनी न हो, नायिकाओं के तीन मुख्य प्रकारों में से एक
- **परञ्जः**—पुं°—-—-—तेल कोल्हू
- **परञ्जः**—पुं°—-—-—तलवार का फल
- **परञ्जनः**—पुं°—-—परस्याः पश्चिमस्याः दिशोजनः स्वामी नि° —वरुण का विशेषण
- **परञ्जयः**—पुं°—-—पर + जि + अच्, मुम्—वरुण का विशेषण
- **परतः**—अव्य°—-—पर + तस्—दूसरे से
- **परतः**—अव्य°—-—पर + तस्—शत्रु से
- **परतः**—अव्य°—-—पर + तस्—आगे, अपेक्षाकृत अधिक, परे, बाद, ऊपर
- **परतः**—अव्य°—-—पर + तस्—अन्यथा
- **परतः**—अव्य°—-—पर + तस्—भिन्न प्रकार से
- **परत्र**—अव्य°—-—पर + त्र—दूसरे लोक में , भावी जन्म में
- **परत्र**—अव्य°—-—पर + त्र—उत्तर भाग में, आगे या बाद में
- **परत्र**—अव्य°—-—पर + त्र—आने वाले समय में, भविष्य में
- **परत्रभीरुः**—पुं°—परत्र-भीरुः—-—परलोक के भय से विस्मित हो, धर्मात्मा पुरुष
- **परन्तप**—वि°—-—परान् शत्रुन् तापयति- पर + तप् + णिच् + खच्, ह्रस्वः, मुम् च—दूसरों को सताने वाला, अपने शत्रुओं का दमन करने वाला
- **परन्तपः**—पुं°—-—-—शूरवीर, विजेता
- **परम**—वि°—-—परं परत्वं माति-क तारा°—दूरतम, अन्तिम
- **परम**—वि°—-—परं परत्वं माति-क तारा°—उच्चतम, सर्वोत्तम, अत्यंत श्रेष्ठ, महत्तम
- **परम**—वि°—-—परं परत्वं माति-क तारा°—मुख्य, प्रधान, प्राथमिक, सर्वोपरि
- **परम**—वि°—-—परं परत्वं माति-क तारा°—अत्यधिक, अन्तिम
- **परम**—वि°—-—परं परत्वं माति-क तारा°—यथेष्ट, पर्याप्त
- **परमम्**—नपुं°—-—-—सर्वोच्च या उच्चतम मुख्य या प्रमुख भाग, प्रधानतया युक्त, पूर्णतः संलग्न

- **परमम्**—अव्य०—-—-—स्वीकृतिबोधक, अंगीकार या सहमति बोधक, अध्यय (अच्छा, बहुत अच्छा, हाँ, ऐसा ही)
- **परमम्**—अव्य०—-—-—अत्यधिक, अत्यन्त परमक्रुद्धः आदि
- **परमाङ्गना**—स्त्री०—परम-अङ्गना—-—श्रेष्ठ श्री
- **परमाणुः**—पुं०—परम-अणुः—-—अत्यणु, अत्यल्पमात्रा का अणु
- **परमाद्वैतम्**—नपुं०—परम-अद्वैतम्—-—परमात्मा
- **परमाद्वैतम्**—नपुं०—परम-अद्वैतम्—-—विशुद्ध एकेश्वरवाद
- **परमान्नम्**—नपुं०—परम-अन्नम्—-—खीर, दूध में पके हुए चावल
- **परमार्थः**—पुं०—परम-अर्थः—-—सर्वोच्च या नितांत अलौकिक सत्य, वास्तविक आत्मज्ञान, ब्रह्मा या परमात्मासंबंधी ज्ञान
- **परमार्थः**—पुं०—परम-अर्थः—-—सचाई, वास्तविकता, आन्तरिकता
- **परमार्थः**—पुं०—परम-अर्थः—-—कोई श्रेष्ठ या महत्वपूर्ण पदार्थ
- **परमार्थः**—पुं०—परम-अर्थः—-—सर्वोत्तम अर्थ
- **परमार्थतः**—अव्य०—परम-अर्थतः—-—सचमुच, वस्तुतः, यथार्थतः, सत्यतः
- **परमाहः**—पुं०—परम-अहः—-—श्रेष्ठ दिन
- **परमात्मन**—पुं०—परम-आत्मन—-—सर्वोपरि आत्मा या ब्रह्म
- **परमापद**—स्त्री०—परम-आपद—-—अत्यंत भारी संकट या दुर्भाग्य
- **परमेशः**—पुं०—परम-ईशः—-—विष्णु का विशेषण
- **परमेशः**—पुं०—परम-ईशः—-—इन्द्र की उपाधि
- **परमेशः**—पुं०—परम-ईशः—-—शिव का विशेषण
- **परमेशः**—पुं०—परम-ईशः—-—सर्वशक्तिमान परमात्मा का विशेषण
- **परमर्षिः**—पुं०—परम-ऋषिः—-—उच्चाकोटिका ऋषि
- **परमैश्वर्यम्**—नपुं०—परम-ऐश्वर्यम्—-—सर्वशक्तिमत्ता, सर्वोपरिता
- **परमगतिः**—स्त्री०—परम-गतिः—-—मोक्ष, निर्वाण
- **परमगवः**—पुं०—परम-गवः—-—श्रेष्ठजाति का बैल या गाय
- **परमपदम्**—नपुं०—परम-पदम्—-—सर्वोत्तम स्थिति, उच्चतम दर्जा
- **परमपदम्**—नपुं०—परम-पदम्—-—मोक्ष
- **परमपुरुषः**—पुं०—परम-पुरुषः—-—परमात्मा
- **परमपूरुषः**—पुं०—परम-पूरुषः—-—परमात्मा

- **परमप्रख्य**—वि°—परम-प्रख्य—-—प्रसिद्ध विख्यात
- **परमब्रह्मन्**—नपुं°—परम-ब्रह्मन्—-—परमात्मा
- **परमहंसः**—पुं°—परम-हंसः—-—उच्चतम कोटि का संन्यासी, वह जिसने भावात्मक समाधि दे द्वारा अपनी इन्द्रियों का दमन करके उनको वश में कर लिया है
- **परमेष्ठः**—पुं°—-—परम + इष्ठन्—ब्रह्मा का विशेषण
- **परमेष्ठिन**—पुं°—-—परमेष्ठ + इनि—ब्रह्मा की विशेषण
- **परमेष्ठिन**—पुं°—-—परमेष्ठ + इनि—विष्णु की विशेषण
- **परमेष्ठिन**—पुं°—-—परमेष्ठ + इनि—गरुड की विशेषण
- **परमेष्ठिन**—पुं°—-—परमेष्ठ + इनि—अग्नि की उपाधि
- **परमेष्ठिन**—पुं°—-—परमेष्ठ + इनि—कोई भी आध्यात्मिक गुरु
- **परम्पर**—वि°—-—परं पिपर्ति पृ + अच्, अलु° स°—एक के बाद दूसरा
- **परम्पर**—वि°—-—परं पिपर्ति पृ + अच्, अलु° स°—पूर्वानुपर, उत्तरोत्तर
- **परम्परः**—पुं°—-—-—प्रपौत्र
- **परम्परा**—स्त्री°—-—-—अविच्छिन्न, शृंखला, नियमित सिलसिला, आनुपूर्व्य
- **परम्परया आगम्**—नपुं°—-—-—नियमित परम्परा के क्रम से प्राप्त होना
- **परम्परया आगम्**—नपुं°—-—-—(नियमित वस्तुओं की) पंक्ति, क़तार, संग्रह समूह
- **परम्परया आगम्**—नपुं°—-—-—प्रणाली, क्रम, सुव्यवस्था
- **परम्परया आगम्**—नपुं°—-—-—वंश, कुटुंब, कुल
- **परम्परया आगम्**—नपुं°—-—-—क्षति, चोट, मार डालना
- **परम्पराक**—वि°—-—परंपरया कायेत प्रकाशते- कै + क—यज्ञ में पशु का बध करना
- **परम्परीण**—वि°—-—परंपर + ख—उत्तराधिकार में प्राप्त, आनुवंशिक
- **परम्परीण**—वि°—-—परंपर + ख—परंपराप्राप्त
- **परवत्**—वि°—-—पर + मतुप् मस्य वः—पराधीन, दूसरे के वश में, आज्ञापालन के लिए तत्पर
- **परवत्**—वि°—-—पर + मतुप् मस्य वः—शक्ति से वंचित, निःशक्त
- **परवत्**—वि°—-—पर + मतुप् मस्य वः—पूर्णरूप से (दूसरे के) अधीन जो स्वयं अपना स्वामी न हो, विजित, पराभूत
- **परवत्ता**—स्त्री°—-—पखत् + तल् + टाप्—दूसरे की अधीनता, पराधीनता
- **परशः**—पुं°—-—स्पृशति इति पृषो°—पारसमणि जिसके स्पर्श से, कहा जाता है कि लोहा आधि दूसरी धातुएँ सोना बन जाती हैं

- **परशुः**—पुं°—–—परं शृणति-शृ + कु ङिच्च— कुल्हाड़ा, कुल्हाड़ी, कुठार फरसा
- **परशुः**—पुं°—–—परं शृणति-शृ + कु ङिच्च—शस्त्र, हथियार
- **परशुः**—पुं°—–—परं शृणति-शृ + कु ङिच्च—बज्र
- **परशुधरः**—पुं°—परशुः-धरः—–—परशुराम का विशेषण
- **परशुधरः**—पुं°—परशुः-धरः—–—गणेश की उपाधि
- **परशुधरः**—पुं°—परशुः-धरः—–—कुठारधारी सैनिक
- **परशुरामः**—पुं°—परशुः-रामः—–—'कुठारधारी राम' एक विख्यात ब्राह्मणयोद्धा जो जमदग्नि का पुत्र और विष्णु का छठा अवतार था
- **परश्वधः**—पुं°—–—पर + श्वि + ड= परश्वः, तंदधाति- धा + क, नि° शस्य सत्वम्—कुल्हाड़ी, कुठार, फरसा
- **परस्**—अव्य°—–—पर + असि—परे, आगे, और भी
- **परस्**—अव्य°—–—पर + असि—इसके दूसरी ओर
- **परस्**—अव्य°—–—पर + असि—दूर, दूरी पर
- **परस्**—अव्य°—–—पर + असि—अपवाद रूप से
- **परः कृष्ण**—वि°—परस्-कृष्ण—–—अत्यन्त काला
- **परःपुरुषः**—वि°—परस्-पुरुषः—–—मनुष्य से लंबा या ऊँचा
- **परःशत**—वि°—परस्-शत—–— सौ से अधिक
- **परःश्वस्**—अव्य°—परस्-श्वस्—–—आगामी परसों
- **परःसहस्र**—वि°—परस्-सहस्र—–—एक हजार से अधिक
- **परस्तात्**—अव्य°—–—पर + अस्ताति—परे, के दूसरी ओर, और आगे
- **परस्तात्**—अव्य°—–—पर + अस्ताति—इसके पश्वात्, बाद में
- **परस्तात्**—अव्य°—–—पर + अस्ताति—अपेक्षाकृत ऊँचा
- **परस्पर**—वि°—–—परः परः इति विग्रहे समासवद्भावे पूर्वपदस्य सुः—आपस में
- **परस्मैपदम्**—नपुं°—–—परस्मै पदार्थ पदं —दूसरे के लिए प्रयुक्त वाच्य
- **परस्मैभाषा**—स्त्री°—–—परस्मै पदार्थ भाषा—दूसरे के लिए प्रयुक्त वाच्य
- **परा**—अव्य°—–—पृ + अच् + टाप्—'दूर' 'पीछे' 'उल्टे क्रम से' 'एक ओर' 'की ओर' अर्थो को प्रकट करने के लिए धातु या संज्ञा से पूर्व लगने वाला उपसर्ग
- **पराकरणम्**—नपुं°—–—परा + कृ + ल्युट्—एक ओर रख देने की क्रिया अस्वीकार करना, अवहेलना करना, तिरस्कृत करना
- **पराक्रमः**—पुं°—–—परा + क्रम् + घञ्—शूरवीरता, बहादुरी, साहस

- **पराक्रमः**—पुं°—-—परा + क्रम् + घञ्—विरोधी अभियान करना, आक्रमण करना
- **पराक्रमः**—पुं°—-—परा + क्रम् + घञ्—प्रयत्न, कोशिश, उद्योग
- **पराक्रमः**—पुं°—-—परा + क्रम् + घञ्—विष्णु का नाम
- **परागः**—पुं°—-—परा + गम् + ड—पुष्पराज
- **परागः**—पुं°—-—परा + गम् + ड—धूलि
- **परागः**—पुं°—-—परा + गम् + ड—स्नान के पश्चात् सेवन किया जाने वाला सुगंधित चूर्ण
- **परागः**—पुं°—-—परा + गम् + ड—चन्दन
- **परागः**—पुं°—-—परा + गम् + ड—सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण
- **परागः**—पुं°—-—परा + गम् + ड—यश, प्रसिद्धि
- **परागः**—पुं°—-—परा + गम् + ड—स्वाधीनता
- **पराङ्गवः**—पुं°—-—परांगं प्रचुरशरीरं वाति प्राप्नोति- वा + क—समुद्र
- **पराच्**—वि°—-—-—परे या दूसरी ओर स्थित
- **पराच्**—वि°—-—-—मुँह मोड़ कर (पराङमुख)
- **पराच्**—वि°—-—-—जो अनुकूल न हो, प्रतिकूल
- **पराच्**—वि°—-—-—दूरस्थ
- **पराच्**—वि°—-—-—बाहरकी ओर निदेशित
- **पराञ्च्**—वि°—-—परा + अंच् + क्विन्—परे या दूसरी ओर स्थित
- **पराञ्च्**—वि°—-—परा + अंच् + क्विन्—मुँह मोड़ कर (पराङमुख)
- **पराञ्च्**—वि°—-—परा + अंच् + क्विन्—जो अनुकूल न हो, प्रतिकूल
- **पराञ्च्**—वि°—-—परा + अंच् + क्विन्—दूरस्थ
- **पराञ्च्**—वि°—-—परा + अंच् + क्विन्—बाहरकी ओर निदेशित
- **पराङ्मुख**—वि°—पराच्-मुख—-—
- **पराङ्मुख**—वि°—पराच्-मुख—-—विमुख, उलट
- **पराङ्मुख**—वि°—पराच्-मुख—-—उदासीन, कतराने वाला, टाल जाने वाला
- **पराङ्मुख**—वि°—पराच्-मुख—-—प्रतिकूल, अनुकूल
- **पराङ्मुख**—वि°—पराच्-मुख—-—उपेक्षा करने वाला
- **पराचीन**—वि°—-—पराच् + ख—विरूद्ध दिशा में मुड़ा हुआ, विमुख

- **पराचीन**—वि°———पराच् + ख—पराङ्मुख, अरूचि रखने वाला
- **पराचीन**—वि°———पराच् + ख—परवाह न करने वाला, उपेक्षा करने वाला
- **पराचीन**—वि°———पराच् + ख—बाद में होने वाला, उत्तरकालभव
- **पराचीन**—वि°———पराच् + ख—दूसरी ओर स्थित, परे होने वाला
- **पराजयः**—पुं°———परा + जि + अच्—परास्त करना, विजय, जीतना, अधीनीकरण, हार
- **पराजयः**—पुं°———परा + जि + अच्—परास्त होना, सहन करने के योग्य न होना
- **पराजयः**—पुं°———परा + जि + अच्—हारना, हार असफलता (मुकदमे आदि में)
- **पराजयः**—पुं°———परा + जि + अच्—पदच्युति, वंचना
- **पराजयः**—पुं°———परा + जि + अच्—परित्याग
- **पराजित**—भू° क° कृ°———परा + जि + क्त—जीता हुआ, वश में किया हुआ, हराया हुआ
- **पराजित**—भू° क° कृ°———परा + जि + क्त— कानून द्वारा दण्डित, (मुकदमे में) हारा हुआ, पछाड़ा हुआ
- **परानसा**—स्त्री°———वरा + अन् + अस + टाप्—औषधीय चिकित्सा, वैद्य, हकीम या डाक्टर द्वारा इलाज़, वैद्य का व्यवसाय
- **पराणसा**—स्त्री°———वरा + अण् + अस + टाप्—औषधीय चिकित्सा, वैद्य, हकीम या डाक्टर द्वारा इलाज़, वैद्य का व्यवसाय
- **पराभवः**—पुं°———परा + भू + अप्—हार, असफलता, पराजय
- **पराभवः**—पुं°———परा + भू + अप्—मानभंग, मानमर्दन, प्रतिष्ठाभंग
- **पराभवः**—पुं°———परा + भू + अप्—घृणा, अवहेलना, तिरस्कार
- **पराभवः**—पुं°———परा + भू + अप्—विनाश
- **पराभवः**—पुं°———परा + भू + अप्—लोप, वियोग
- **पराभूतिः**—स्त्री°———परा + भू + क्तिन्—हार, असफलता, पराजय
- **पराभूतिः**—स्त्री°———परा + भू + क्तिन्—मानभंग, मानमर्दन, प्रतिष्ठाभंग
- **पराभूतिः**—स्त्री°———परा + भू + क्तिन्—घृणा, अवहेलना, तिरस्कार
- **पराभूतिः**—स्त्री°———परा + भू + क्तिन्—विनाश
- **पराभूतिः**—स्त्री°———परा + भू + क्तिन्—लोप, वियोग
- **परामर्शः**—पुं°———परा + मृश् + घञ्—पकड़ लेना, खींचना
- **परामर्शः**—पुं°———परा + मृश् + घञ्—हिंसा, आक्रमण, हमला
- **परामर्शः**—पुं°———परा + मृश् + घञ्—बाधा विघ्न
- **परामर्शः**—पुं°———परा + मृश् + घञ्—ध्यान करना, प्रत्यास्मरण

- **परामर्शः**—पुं°—-—परा + मृश् + घञ्—विचार, विमर्श, चिन्तन
- **परामर्शः**—पुं°—-—परा + मृश् + घञ्—निर्णय
- **परामर्शः**—पुं°—-—परा + मृश् + घञ्—घटाना, निश्चय करना कि अपना पक्ष या विषय सहेतुक है
- **परामृष्ट**—भू° क° कृ°—-—परा + मृश् + क्त—छूआ गया, हाथ लगाया गया, दबोचा गया, पकड़ा गया
- **परामृष्ट**—भू° क° कृ°—-—परा + मृश् + क्त—रूखा व्यवहार किया गया, दुर्व्यवहार किया गया
- **परामृष्ट**—भू° क° कृ°—-—परा + मृश् + क्त—तोला गया, विचार किया गया, कूता गया
- **परामृष्ट**—भू° क° कृ°—-—परा + मृश् + क्त—सहन किया गया
- **परामृष्ट**—भू° क° कृ°—-—परा + मृश् + क्त—संबद्ध
- **परामृष्ट**—भू° क° कृ°—-—परा + मृश् + क्त—(रोग से) ग्रस्त
- **परारि**—अव्य°—-—पूर्वतरे वत्सरे इत्यर्थे परभावः आदि च संवत्सरे—पूर्वतर वर्ष में, विगतवर्ष में, परियार साल
- **परायण**—वि°—-—-—अनुरक्त, भक्त, संसक्त
- **परायण**—वि°—-—-—आश्रित, वशीभूत
- **परायण**—वि°—-—-—तुला हुआ, अनन्य भक्त, सर्वथा लीन
- **परावर्तः**—पुं°—-—परा + वृत् + घञ्—पीछे मुड़ना, वापसी, प्रत्यावर्तन
- **परावर्तः**—पुं°—-—परा + वृत् + घञ्—अदल-बदल, विनिमय
- **परावर्तः**—पुं°—-—परा + वृत् + घञ्—पुनः प्राप्ति
- **परावर्तः**—पुं°—-—परा + वृत् + घञ्—(कानुन में) दण्ड या सजा की उलट-पलट
- **परावृत्तिः**—स्त्री°—-—परा + वृत् + क्तिन्—पीछे मुड़ना, वापसी, प्रत्यावर्तन
- **परावृत्तिः**—स्त्री°—-—परा + वृत् + क्तिन्—अदल-बदल, विनिमय
- **परावृत्तिः**—स्त्री°—-—परा + वृत् + क्तिन्—पुनः प्राप्ति
- **परावृत्तिः**—स्त्री°—-—परा + वृत् + क्तिन्—(कानुन में) दण्ड या सजा की उलट-पलट
- **पराशरः**—पुं°—-—परान् आशृणाति- शृ + अच्—एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम जो व्यास के पिता तथा एक स्मृतिकार थे
- **परासम्**—नपुं°—-—परा + अस् + घञ्—रांगा, टीन
- **परासनम्**—नपुं°—-—परा + अस् + ल्युट्—बध, हत्या
- **परासु**—वि°—-—परागताः असवो यस्य प्रा° ब° स°—निजीव, मृतक
- **परास्त**—वि°, भू° क° कृ°—-—परा + अस्+ क्त—फेंका हुआ, डाला हुआ
- **परास्त**—वि°, भू° क° कृ°—-—परा + अस्+ क्त—निष्कासित, निकाला हुआ

- **परास्त**—वि°, भू° क° कृ°—-—परा + अस्+ क्त—अस्वीकृत
- **परास्त**—वि°, भू° क° कृ°—-—परा + अस्+ क्त—निराकृत, त्यक्त
- **परास्त**—वि°, भू° क° कृ°—-—परा + अस्+ क्त—हराया हुआ
- **पराहत**—वि°, भू° क° कृ°—-—परा + हन् + क्त—पटका हुआ, पछाड़ा हुआ
- **पराहत**—वि°, भू° क° कृ°—-—परा + हन् + क्त—पीछे हटाया हुआ, पीछे ढकेला हुआ
- **पराहतम्**—नपुं°—-—परा + हन् + क्त—प्रहार, आघात
- **परि**—अव्य°—-—पृ + इन्—एक प्रकार का उपसर्ग
- **परि**—अव्य°—-—पृ + इन्—चारों ओर, इधर उधर, इर्दगिर्द
- **परि**—अव्य°—-—पृ + इन्—बहुत, अत्यन्त
- **परि**—अव्य°—-—पृ + इन्—पृथक्करणीय अव्यय
- **परि**—अव्य°—-—पृ + इन्—क्रिया विशेषण उपसर्ग के रूप में संज्ञाओं से पूर्व लग कर जब कि क्रिया से सीधा संबंध न हो, 'बहुत' 'अति' 'अत्यधिक' अत्यन्त आदि अर्थ प्रकट करता है
- **परि**—अव्य°—-—पृ + इन्—बिना, सिबाय, के बाहर, इसको छोड़ कर
- **परि**—अव्य°—-—पृ + इन्—इर्दगिर्द, चारों ओर, घिरा हुआ
- **परि**—अव्य°—-—पृ + इन्—'श्रान्त', 'क्लान्त', 'उबा हुआ'
- **परिकथा**—स्त्री°, पुं°, प्रा°स°—-—-—आख्यानप्रिय व्यक्ति के इतिवृत्त तथा उसके साहसिक कार्यों को बतलाने वाली रचना, काल्पनिक कथा
- **परिकम्पः**—पुं°,प्रा°स°—-—-—भारी त्रास
- **परिकम्पः**—पुं°,प्रा°स°—-—-—प्रचंड कंपकंपी या थरथराहट
- **परिकरः**—पुं°—-—-—परिजन, अनुचर वर्ग, नौकर-चाकर, अनुयायिवर्ग
- **परिकरः**—पुं°—-—-—समुच्चय, संग्रह, समूह
- **परिकरः**—पुं°—-—-—आरंभ, उपक्रम
- **परिकरः**—पुं°—-—-—परिधि, कटिबंध, कटिवस्त्र
- **परिकरं बन्ध**—-—-—-—कमर कसना, तैयार होना, किसी कार्य के लिए अपने आपको सज्जित करना
- **परिकरं कृ**—-—-—-—कमर कसना, तैयार होना, किसी कार्य के लिए अपने आपको सज्जित करना
- **परिकरः**—पुं°—-—-—सोफा
- **परिकरः**—पुं°—-—-—एक अलंकार जिसके सार्थक विशेषणों का उपयोग होता है
- **परिकरः**—पुं°—-—-—नाटक की वस्तु कथा में आने वाली घटनाओं का परोक्षसूचन, बीज का मूलतत्त्व

- **परिकरः**—पुं°—————निर्णय
- **परिकर्तृ**—पुं°—————वह पुरोहित जो बड़े भाई के अविवाहित रहते हुए छोटे भाई का विवाह संस्कार करता है
- **परिकर्मन्**—पुं°———परि + कृ + मनिन्—सेवक
- **परिकर्मन्**—नपुं°———परि + कृ + मनिन्—शरीर को चित्रित या सुगंधित करना, वैयक्तिक सजावट, अलंकृत करना, प्रसाधन
- **परिकर्मन्**—नपुं°———परि + कृ + मनिन्—पैरों में महावर लगाना
- **परिकर्मन्**—नपुं°———परि + कृ + मनिन्—सज्जा, तैयारी
- **परिकर्मन्**—नपुं°———परि + कृ + मनिन्—पूजा, अर्चना
- **परिकर्मन्**—नपुं°———परि + कृ + मनिन्—शुद्ध करना, पवित्रीकरण, मन को शुद्ध करने के साधन
- **परिकर्मन्**—नपुं°———परि + कृ + मनिन्—गणित की प्रक्रिया
- **परिकर्षः**—पुं°———परि + कृष् + घञ्—ख़ीच कर बाहर निकालना, उखाड़ना
- **परिकर्षणम्**—नपुं°———परि + कृष् + ल्युट्—ख़ीच कर बाहर निकालना, उखाड़ना
- **परिकल्कनम्**—नपुं°———परि + कल् + क + ल्युट्—धोखा, ठगी, छल-कपट
- **परिकल्पनम्**—नपुं°———परि + कृप् + ल्युट्—निर्णय करना, स्थिर करना, फैसला करना, निर्धारण करना
- **परिकल्पनम्**—नपुं°———परि + कृप् + ल्युट्—उपाय निकालना, आविष्कार करना, रूप वेना, क्रमबद्ध करना
- **परिकल्पनम्**—नपुं°———परि + कृप् + ल्युट्—जुटाना, सम्पन्न करना
- **परिकल्पनम्**—नपुं°———परि + कृप् + ल्युट्—वितरण करना
- **परिकल्पना**—स्त्री°———परि + कृप् + ल्युट्+टाप्—निर्णय करना, स्थिर करना, फैसला करना, निर्धारण करना
- **परिकल्पना**—स्त्री°———परि + कृप् + ल्युट्+टाप्—उपाय निकालना, आविष्कार करना, रूप वेना, क्रमबद्ध करना
- **परिकल्पना**—स्त्री°———परि + कृप् + ल्युट्+टाप्—जुटाना, सम्पन्न करना
- **परिकल्पना**—स्त्री°———परि + कृप् + ल्युट्+टाप्—वितरण करना
- **परिकांक्षितः**—पुं°———परि + कांक्ष् + क्त—धर्म परायण साधु या सन्यासी, भक्त
- **परिकीर्ण**—वि°, भू° क° कृ°———परि + कृ + क्त—फैलाया हुआ, प्रसृत, इधर उधर बखेरा हुआ
- **परिकीर्ण**—वि°, भू° क° कृ°———परि + कृ + क्त—घिरा हुआ, भीड़भिड़क्का से युक्त, भरा हुआ
- **परिकूटम्**—नपुं°—————अवरोध, आड़, नगर के फाटक के सामने की खाई
- **परिकोपः**—पुं°———परि + कुप् + घञ्—असह्य क्रोध, भीषणता
- **परिक्रमः**—पुं°———परि + क्रम् + घञ्—इधर उधर भ्रमण करना, इतस्ततः घूमना
- **परिक्रमः**—पुं°———परि + क्रम् + घञ्—भ्रमण, घूमना, टहलना

- **परिक्रमः**—पुं°—-—परि + क्रम् + घञ्—प्रदक्षिणा करना
- **परिक्रमः**—पुं°—-—परि + क्रम् + घञ्—इच्छानुसार टहलना
- **परिक्रमः**—पुं°—-—परि + क्रम् + घञ्—सिलसिला, क्रम
- **परिक्रमः**—पुं°—-—परि + क्रम् + घञ्—यथाक्रम, उत्तरोत्तर
- **परिक्रमः**—पुं°—-—परि + क्रम् + घञ्—घुसना
- **परिक्रमसहः**—पुं°—परिक्रमः-सहः—-—बकरी
- **परिक्रयः**—पुं°—-—परि + क्री + घञ्—मजदूरी, भाड़ा
- **परिक्रयः**—पुं°—-—परि + क्री + घञ्—मजदूरी पर काम में लगाना
- **परिक्रयः**—पुं°—-—परि + क्री + घञ्—मोल लेना, खरीद डालना
- **परिक्रयः**—पुं°—-—परि + क्री + घञ्—विनिमय, अदल-बदल
- **परिक्रयः**—पुं°—-—परि + क्री + घञ्—रुपया देकर की गई संधि
- **परिक्रमणम्**—नपुं°—-—परि + क्री + ल्युट्—मजदूरी, भाड़ा
- **परिक्रमणम्**—नपुं°—-—परि + क्री + ल्युट्—मजदूरी पर काम में लगाना
- **परिक्रमणम्**—नपुं°—-—परि + क्री + ल्युट्—मोल लेना, खरीद डालना
- **परिक्रमणम्**—नपुं°—-—परि + क्री + ल्युट्—विनिमय, अदल-बदल
- **परिक्रमणम्**—नपुं°—-—परि + क्री + ल्युट्—रुपया देकर की गई संधि
- **परिक्रया**—स्त्री°—-—परितः क्रिया—बाड़ लगाना, चारों ओर खाई खोदना
- **परिक्रया**—स्त्री°—-—परितः क्रिया—घेरना
- **परिक्रया**—स्त्री°—-—परितः क्रिया— नाट्य° में = परिकर ७
- **परिक्लांत**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + क्लम् + क्त—थका हुआ, परिश्रांत, उकताया हुआ
- **परिक्लेदः**—पुं°—-—परि + क्लिद् + घञ्—गीलापन, नमी, आर्द्रता
- **परिक्लेशः**—पुं°—-—परि + क्लिश् + घञ्—कठिनाई , थकावट, कष्ट
- **परिक्षयः**—पुं°—-—परि + क्षि + अच्—ह्रास, वर्बादी, विनाश
- **परिक्षयः**—पुं°—-—परि + क्षि + अच्—अन्तर्धान होना, समाप्त होना
- **परिक्षयः**—पुं°—-—परि + क्षि + अच्—बर्बादी, नाश, असफलता
- **परिक्षाम**—वि°—-—परि + क्षै + क्त, मकारा देशः—कृश, क्षीण, दुर्बल
- **परिक्षालनम्**—नपुं°—-—परि + क्षल् + णिच् + ल्युट्—धोना, मांजना

- **परिक्षालनम्**—नपुं°—-—परि + क्षल् + णिच् + ल्युट्—धोने के लिए पानी
- **परिक्षिप्त**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + क्षिप् + क्त—बखेरा हुआ, प्रसृत
- **परिक्षिप्त**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + क्षिप् + क्त—परिवेष्टित, घेरा हुआ
- **परिक्षिप्त**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + क्षिप् + क्त—खाई से घेरा हुआ
- **परिक्षिप्त**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + क्षिप् + क्त—ऊपर से फैलाया हुआ, ऊपर डाला हुआ
- **परिक्षिप्त**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + क्षिप् + क्त—छोड़ा हुआ, परित्यक्त
- **परिक्षीण**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + क्षि + क्त—अन्तर्हित, लुप्त
- **परिक्षीण**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + क्षि + क्त—बर्बाद हुआ, ह्रासित
- **परिक्षीण**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + क्षि + क्त—कृश, घिसा हुआ, थका हुआ
- **परिक्षीण**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + क्षि + क्त—दरिद्र किया हुआ, सर्वथा बर्बाद किया हुआ
- **परिक्षीण**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + क्षि + क्त—ख़ोया हुआ, नाश किया हुआ
- **परिक्षीण**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + क्षि + क्त—कम किया हुआ, घटाया हुआ
- **परिक्षीण**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + क्षि + क्त—(कानून में) दिवालिया
- **परिक्षीव**—वि°—-—परि + क्षीव् + क्त, तस्य लोपः—बिल्कुल नशे में चूर
- **परिक्षेपः**—पुं°—-—परि + क्षिप् + घञ्—इधर उधर घूमना, टहलना
- **परिक्षेपः**—पुं°—-—परि + क्षिप् + घञ्—बखेरना, फैलाना
- **परिक्षेपः**—पुं°—-—परि + क्षिप् + घञ्—घेरना, परिवेष्टन, चारों ओर बहना
- **परिक्षेपः**—पुं°—-—परि + क्षिप् + घञ्—घेरे की सीमा, हद जिससे कोई चीज घेरी जाय
- **परिखा**—स्त्री°—-—परितः खन्यते- खन् + ड + टाप्—प्रतिकूप, खाई, नगर या किले के चारों ओर बनी नाली या खात
- **परिखातम्**—नपुं°—-—परि + खन् + क्त—प्रतिकूप, खाई
- **परिखातम्**—नपुं°—-—परि + खन् + क्त—लीक, खूड
- **परिखातम्**—नपुं°—-—परि + खन् + क्त—चारों ओर से खोदना
- **परिखेदः**—पुं°—-—परितः खेदः —थकावट, परिश्रान्ति, थकान
- **परिख्यातिः**—स्त्री°—-—परि + ख्या + क्तिन्—यश, प्रसिद्धि
- **परिगणनम्**—नपुं°—-—परि + गण् + ल्युट्—पूर्ण गिनती, सही वर्णन या हिसाब
- **परिगणना**—स्त्री°—-—परि + गण् + ल्युट्+टाप्—पूर्ण गिनती, सही वर्णन या हिसाब
- **परिगत**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + गम् + क्त—घेरा हुआ, आवेष्टित, अहाता बनाया हुआ

- **परिगत**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + गम् + क्त—प्रसृत, चारों ओर फैलाया हुआ
- **परिगत**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + गम् + क्त—ज्ञात, समझा हुआ
- **परिगत**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + गम् + क्त—भरा हुआ, ढका हुआ, सम्पन्न
- **परिगत**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + गम् + क्त—हासिल, प्राप्त
- **परिगत**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + गम् + क्त—याद किया हुआ
- **परिगलित**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + गल् + क्त—डूबा हुआ
- **परिगलित**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + गल् + क्त—उथला हुआ
- **परिगलित**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + गल् + क्त—लुप्त
- **परिगलित**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + गल् + क्त—पिघला हुआ
- **परिगलित**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + गल् + क्त—बहता हुआ
- **परिगर्हणम्**—नपुं°—-—परि + गर्ह् + ल्युट्—भारी कलङ्क
- **परिगूढ**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + गुह् + क्त—बिल्कुल गुप्त
- **परिगूढ**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + गुह् + क्त—अबोध्य, जो समझने में अत्यंत कठिन हो
- **परिगृहीत्**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + ग्रह् + क्त—अपनाया हुआ, पकड़ा हुआ, ग्रहण किया हुआ
- **परिगृहीत्**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + ग्रह् + क्त—आलिंगन किया हुआ, घेरा हुआ
- **परिगृहीत्**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + ग्रह् + क्त—स्वीकार किया हुआ, लिया हुआ, प्राप्त किया हुआ
- **परिगृहीत्**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + ग्रह् + क्त—हामी भरा हुआ, स्वीकृत किया हुआ, माना हुआ
- **परिगृहीत्**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + ग्रह् + क्त—संरक्षण दिया हुआ, अनुग्रह किया हुआ
- **परिगृहीत्**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + ग्रह् + क्त—अनुसरण किया हुआ, आज्ञा माना हुआ
- **परिगृहीत्**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + ग्रह् + क्त—विरोध किया हुआ
- **परिगृह्या**—स्त्री°—-—परि + ग्रह् + क्यप् + टाप्—विवाहित स्त्री
- **परिग्रहः**—पुं°—-—परि + ग्रह् + घञ्—पकड़ना, थामना, लेना, ग्रहण करना
- **परिग्रहः**—पुं°—-—परि + ग्रह् + घञ्—घेरना, बन्द करना, चारों ओर से घेरा डालना, बाड़ बनाना
- **परिग्रहः**—पुं°—-—परि + ग्रह् + घञ्—पहनना (वेशभूषा की भांति) लपेटना
- **परिग्रहः**—पुं°—-—परि + ग्रह् + घञ्—धारण करना, लेना
- **परिग्रहः**—पुं°—-—परि + ग्रह् + घञ्—प्राप्त करना, लेना, स्वीकार करना, अंगीगार करना
- **परिग्रहः**—पुं°—-—परि + ग्रह् + घञ्—वैभव, संपत्ति, सामान

- **परिग्रहः**—पुं°—-—परि + ग्रह् + घञ्—आवाह, विवाह
- **परिग्रहः**—पुं°—-—परि + ग्रह् + घञ्—अपने रक्षण में लेना, अनुग्रह करना
- **परिग्रहः**—पुं°—-—परि + ग्रह् + घञ्—अनुचर, अनुसेवी, नौकर-चाकर, परिजन, सेवक समूह
- **परिग्रहः**—पुं°—-—परि + ग्रह् + घञ्—गृहस्थ, परिवार, परिवार के सदस्य
- **परिग्रहः**—पुं°—-—परि + ग्रह् + घञ्—राजा का अन्तःपुर, रनिवास
- **परिग्रहः**—पुं°—-—परि + ग्रह् + घञ्—जड, मूल
- **परिग्रहः**—पुं°—-—परि + ग्रह् + घञ्—सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण
- **परिग्रहः**—पुं°—-—परि + ग्रह् + घञ्—शपथ
- **परिग्रहः**—पुं°—-—परि + ग्रह् + घञ्—सेना का पिछला भाग
- **परिग्रहः**—पुं°—-—परि + ग्रह् + घञ्—विष्णु का नाम
- **परिग्रहः**—पुं°—-—परि + ग्रह् + घञ्—संक्षेप, उपसंहार
- **परिग्रहीतृ**—पुं°—-—परि + ग्रह् + तृच्—पति
- **परिक्लान**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + ग्लै + क्त—शिथिल, थका हुआ
- **परिक्लान**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + ग्लै + क्त—विमुख, पराङ्मुख
- **परिघः**—पुं°—-—परि + हन् + अप्, आदेशः—लोहे की छड़ या लकड़ी का मूसल जो द्वार को बंद रखने के लिए प्रयुक्त की जाय, अर्गला
- **परिघः**—पुं°—-—परि + हन् + अप्, आदेशः—(अतः) रोक, अवरोध,विघ्न, बावा
- **परिघः**—पुं°—-—परि + हन् + अप्, आदेशः—लोहे की स्याम लगी हुई लाठी, मुद्गर जिसमें लोहे की स्याम जड़ दी गई हो
- **परिघः**—पुं°—-—परि + हन् + अप्, आदेशः—लोहे की गदा
- **परिघः**—पुं°—-—परि + हन् + अप्, आदेशः—जलपात्र, घड़ा
- **परिघः**—पुं°—-—परि + हन् + अप्, आदेशः—शीशे की झारी
- **परिघः**—पुं°—-—परि + हन् + अप्, आदेशः—घर
- **परिघः**—पुं°—-—परि + हन् + अप्, आदेशः—मारना, नष्ट करना
- **परिघः**—पुं°—-—परि + हन् + अप्, आदेशः—प्रहार करना (आघात या थप्पड़)
- **परिघट्टनम्**—नपुं°—-—परि + घट्ट + ल्युट्—घोटना, कड़छी चलाना
- **परिघातः**—पुं°—-—परि + हन् + णिच् घञ्—मारना, प्रहार करना, हटाना, छुटकारा पाना
- **परिघातः**—पुं°—-—परि + हन् + णिच् घञ्—मुद्गर ,मोटे सिरे की छड़ी
- **परिघातनम्**—नपुं°—-—परि + हन् + णिच् घञ्, नस्य तः, ल्युट्—मारना, प्रहार करना, हटाना, छुटकारा पाना

- **परिघातनम्**—नपुं°—-—परि + हन् + णिच् घञ्, नस्य तः, ल्युट्—मुद्गर ,मोटे सिरे की छड़ी
- **परिघोषः**—पुं°—-—परि + घुष् + घञ्—कोलाहल
- **परिघोषः**—पुं°—-—परि + घुष् + घञ्—अनुचित भाषण
- **परिघोषः**—पुं°—-—परि + घुष् + घञ्—गर्जन
- **परिचतुर्दशन्**—वि°,प्रा°स°—-—-—पूरे चौदह
- **परिचयः**—पुं°—-—परि + चि + अप्—ढेर लगाना, एकत्र करना
- **परिचयः**—पुं°—-—परि + चि + अप्—जान पहचान, परिचिति, घनिष्ठता, सरकारी संरक्षण
- **परिचयः**—पुं°—-—परि + चि + अप्—जांच, अध्ययन, अभ्यास, मुहुर्मुहु
- **परिचयः**—पुं°—-—परि + चि + अप्—ज्ञान
- **परिचयः**—पुं°—-—परि + चि + अप्—पहचान
- **परिचरः**—पुं°—-—परि + चर् + अच्—सेवक, अनुचर, टहलुआ
- **परिचरः**—पुं°—-—परि + चर् + अच्—शरीर रक्षक
- **परिचरः**—पुं°—-—परि + चर् + अच्—रक्षक, पहरेदार
- **परिचरः**—पुं°—-—परि + चर् + अच्—श्रद्धांजलि, सेवा
- **परिचरणः**—पुं°—-—परि + चर् + ल्युट्—सेवक, टहलुवा, सहायक
- **परिचरणम्**—नपुं°—-—-—सेवा, टहल
- **परिचरणम्**—नपुं°—-—-—इधर उधर जाना
- **परिचर्या**—स्त्री°—-—परि + चर् + क्यप् + टाप्—सेवा, टहल
- **परिचर्या**—स्त्री°—-—परि + चर् + क्यप् + टाप्—अर्चना, पूजा
- **परिचाय्यः**—पुं°—-—परि + चि + ण्यत्—यज्ञानि (कुण्ड में स्थापित)
- **परिचारः**—पुं°—-—परि + चर् + घञ्—सेवा, टहल
- **परिचारः**—पुं°—-—परि + चर् + घञ्—सेवक
- **परिचारः**—पुं°—-—परि + चर् + घञ्—टहलने का स्थान
- **परिचारकः**—पुं°—-—परि + चर् + ण्वुल्—सेवक, टहलुवा
- **परिचारिकः**—पुं°—-—परिचार + ठन्—सेवक, टहलुवा
- **परिचित**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + चि + क्त—ढेर लगाया हुआ, इकट्ठा किया हुआ
- **परिचित**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + चि + क्त—जानकार, घनिष्ठ, जान पहचान का

- **परिचित**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + चि + क्त—सीखा गया, अभ्यस्त
- **परिचितिः**—स्त्री°—-—परि + चि + क्तिन्—जान पहचान, परिचय, घनिष्टता
- **परिच्छद्**—स्त्री°—-—परि + छद् + क्विप्—परिजन, अनुचरवर्ग
- **परिच्छद्**—स्त्री°—-—परि + छद् + क्विप्—साज-सामान
- **परिच्छदः**—पुं°—-—परि + छद् + णिच् + घ—आवरण, चादर, पोशाक
- **परिच्छदः**—पुं°—-—परि + छद् + णिच् + घ—वस्त्र,वेशभूषा
- **परिच्छदः**—पुं°—-—परि + छद् + णिच् + घ—नौकरचाकर, परिजन, टहलुए, आश्रितमंडली
- **परिच्छदः**—पुं°—-—परि + छद् + णिच् + घ—साज-सामान, (छत्र, चामर आदि) ऊपरी सामान
- **परिच्छदः**—पुं°—-—परि + छद् + णिच् + घ—सामान, असबाब, व्यक्तिगत सामान, निजी चीज़े व सामान (बर्तनभांडे, तथा अन्य उपकरण आदि)
- **परिच्छदः**—पुं°—-—परि + छद् + णिच् + घ—यात्रा का आवश्यक सामान
- **परिच्छंदः**—पुं°—-—परि + छन्द् + क—नौकर-चाकर, परिजन
- **परिच्छन्न**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + छद् + क्त—वेष्टित, ढका हुआ, वस्त्राच्छादित, जिसने वस्त्र पहने हुए हों
- **परिच्छन्न**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + छद् + क्त—ऊपर फैलाया हुआ, या बिछाया हुआ
- **परिच्छन्न**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + छद् + क्त—घिरा हुआ, (परिजनों से)
- **परिच्छन्न**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + छद् + क्त—छिपा हुआ
- **परिच्छित्तिः**—स्त्री°—-—परि + छिद् + किन्—यथार्थ परिभाषा, सीमित करना
- **परिच्छित्तिः**—स्त्री°—-—परि + छिद् + किन्—विभाजन, अलग अलग करना
- **परिच्छिन्न**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + छिद् + क्त—काटा हुआ, विभक्त
- **परिच्छिन्न**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + छिद् + क्त—यथार्थ परिभाषा से युक्त, निर्धारित, निश्चयीकृत
- **परिच्छिन्न**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + छिद् + क्त—सीमित, सीमाबद्ध, परिसीमित
- **परिच्छेदः**—पुं°—-—परि + छिद् + घञ्—काटना, वियुक्त करना, विभक्त करना, (उचित और अनुचित में) विवेचन
- **परिच्छेदः**—पुं°—-—परि + छिद् + घञ्—यथार्थ परिभाषा, फैसला, यथार्थ निर्धारण, निश्चय करना
- **परिच्छेदः**—पुं°—-—परि + छिद् + घञ्—विवेक, निर्णय, सूक्ष्मदृष्टि
- **परिच्छेदः**—पुं°—-—परि + छिद् + घञ्—सीमा, हद, सीमा स्थिर करना, हदबन्दी
- **परिच्छेदः**—पुं°—-—परि + छिद् + घञ्—अनुभाग या पुस्तक का कांड
- **परिच्छेद्य**—वि°—-—परि + छिद् + ण्यत्—यथार्थरूप से परिभाषा के योग्य, परिभाषणीय
- **परिच्छेद्य**—वि°—-—परि + छिद् + ण्यत्—तोलने या अनुमान लगाने के योग्य

- **परिजनः**—पुं°———–—सदा साथ रहने वाले नौकर-चाकर, अनुयायिवर्ग, अनुचरवर्ग
- **परिजनः**—पुं°———–—अरदली लोग, सेवकसमूह, सेविकाओं का समूह, बांदियाँ, दासियाँ
- **परिजनः**—पुं°———–—सेवक, दास
- **परिजल्पितम्**—नपुं°——–परि + जल्प् + क्त—(नौकर या सेवक का) गुप्त संकेत जिससे अपनी कुशलता श्रेष्ठता तथा स्वामी की क्रूरता एवं शठता तथा और दूसरे इसी प्रकार के दोष प्रकट हों
- **परिज्ञप्तिः**—स्त्री°—-—परि + ज्ञप् + क्तिन्—संलाप, संवाद
- **परिज्ञप्तिः**—स्त्री°—-—परि + ज्ञप् + क्तिन्—पहचान
- **परिज्ञानम्**—नपुं°——–परि + ज्ञा + ल्युट्—पूरा ज्ञान, पूरी जानकारी
- **परोडीनम्**—नपुं°——–परि + डी + क्त—पक्षियों का गोल बना कर उड़ना या पक्षियों के गोल की उड़ान
- **परिणत**—वि°, भू° क° कृ°——–परि + नम् + क्त—झुका हुआ, विनत, ढलता हुआ
- **परिणत**—वि°, भू° क° कृ°——–परि + नम् + क्त—वृद्ध, ढलता हुआ
- **परिणत**—वि°, भू° क° कृ°——–परि + नम् + क्त—पक्का, परिपक्व, पका हुआ, पूर्णविकसित
- **परिणत**—वि°, भू° क° कृ°——–परि + नम् + क्त—(भोजन आदि) पचा हुआ
- **परिणत**—वि°, भू° क° कृ°——–परि + नम् + क्त—रूपान्तरित या परिवर्तित
- **परिणत**—वि°, भू° क° कृ°——–परि + नम् + क्त—समाप्त, पर्यवसित, अवसायी
- **परिणत**—वि°, भू° क° कृ°——–परि + नम् + क्त—(सूर्य आदि) अस्त
- **परिणतः**—पुं°——–परि + नम् + क्त—अपने दांत से प्रहार करने के लिए झुका हुआ या पार्श्वाघात देने वाला हाथी
- **परिणतिः**—स्त्री°—-—परि + नम् + क्तिन्—झुकना, ढलना, नत होना
- **परिणतिः**—स्त्री°——–परि + नम् + क्तिन्—पक्कापन, परिपक्वता, विकास
- **परिणतिः**—स्त्री°——–परि + नम् + क्तिन्—परिवर्तन, रूपान्तरण, कायापलट
- **परिणतिः**—स्त्री°——–परि + नम् + क्तिन्—पूर्णता
- **परिणतिः**—स्त्री°——–परि + नम् + क्तिन्—नतीजा, परिणाम, फल
- **परिणतिः**—स्त्री°——–परि + नम् + क्तिन्—अन्त, उपसंहार, समाप्ति, अवसान
- **परिणतिः**—स्त्री°——–परि + नम् + क्तिन्—जीवन की अन्तिम झांकी, बुढ़ापा
- **परिणतिः**—स्त्री°——–परि + नम् + क्तिन्—(भोजन का) पचना
- **परिणद्धः**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + नह् + क्त—बँधा हुआ, लिपटा हुआ
- **परिणद्धः**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + नह् + क्त—विस्तृत, विशाल

- **परिणयः**—पुं°—-—परि + नी + अप्—विवाह
- **परिणयनम्**—नपुं°—-—परि + नी + ल्युट्—विवाह
- **परिणहनम्**—नपुं°—-—परि + नह् + ल्युट्—कमर कसना, कमर पर कापड़ा लपेटना
- **परिणामः**—पुं°—-—परि + नम् + घञ्—बदलना, परिवर्तन, रूपान्तरण
- **परिणामः**—पुं°—-—परि + नम् + घञ्—पाचन
- **परिणामः**—पुं°—-—परि + नम् + घञ्—नतीजा, निष्पत्ति, फल, प्रभाव
- **परिणामः**—पुं°—-—परि + नम् + घञ्—पकना, परिपक्वता, पूर्णविकास
- **परिणामः**—पुं°—-—परि + नम् + घञ्—अन्त, समाप्ति, उपसंहार, अवसान, ह्रास
- **परिणामः**—पुं°—-—परि + नम् + घञ्—बुढ़ापा
- **परिणामः**—पुं°—-—परि + नम् + घञ्—(समय का) बीतना
- **परिणामः**—पुं°—-—परि + नम् + घञ्—रूपक से मिलता जुलता एक अलंकार जिसमें उपमेय के गुण उपमान में परिवर्तित कर दिये जाते हैं
- **परीणामः**—पुं°—-—परि + नम् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—बदलना, परिवर्तन, रूपान्तरण
- **परीणामः**—पुं°—-—परि + नम् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—पाचन
- **परीणामः**—पुं°—-—परि + नम् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—नतीजा, निष्पत्ति, फल, प्रभाव
- **परीणामः**—पुं°—-—परि + नम् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—पकना, परिपक्वता, पूर्णविकास
- **परीणामः**—पुं°—-—परि + नम् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—अन्त, समाप्ति, उपसंहार, अवसान, ह्रास
- **परीणामः**—पुं°—-—परि + नम् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—बुढ़ापा
- **परीणामः**—पुं°—-—परि + नम् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—(समय का) बीतना
- **परीणामः**—पुं°—-—परि + नम् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—रूपक से मिलता जुलता एक अलंकार जिसमें उपमेय के गुण उपमान में परिवर्तित कर दिये जाते हैं
- **परिणामदर्शिन्**—वि°—परिणामः-दर्शिन्—-—बुद्धिमान्, दूरदर्शी
- **परिणामदृष्टि**—वि°—परिणामः-दृष्टि—-—बुद्धिमान्
- **परिणामदृष्टिः**—स्त्री°—परिणामः-दृष्टिः—-—बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता
- **परिणामपथ्य**—वि°—परिणामः-पथ्य—-—जिसका फल स्वास्थ्यप्रद हो शूलम् पीडायुक्त अजीर्ण या मन्दाग्नि, उदरपीडा, पीड़ा के साथ उदरवायु, बायगोले का दर्द
- **परिणायः**—पुं°—-—परि + नी + घञ्—शतरंज की गोट का चलाना
- **परिणायः**—पुं°—-—परि + नी + घञ्—(शतरंज की) चाल

- **परीणायः**—पुं॰—-—परि + नी + घञ् पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—शतरंज की गोट का चलाना
- **परीणायः**—पुं॰—-—परि + नी + घञ् पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—(शतरंज की) चाल
- **परिणायकः**—पुं॰—-—परि + नी + ण्वुल्—नेता
- **परिणायकः**—पुं॰—-—परि + नी + ण्वुल्—पति
- **परिणाहः**—पुं॰—-—परि + नह् + घञ्—परिधि, वृत्त, विस्तार, फैलाव, चौड़ाई, अर्ज
- **परिणाहः**—पुं॰—-—परि + नह् + घञ्—वृत्त की परिधि
- **परीणाहः**—पुं॰—-—परि + नह् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—परिधि, वृत्त, विस्तार, फैलाव, चौड़ाई, अर्ज
- **परीणाहः**—पुं॰—-—परि + नह् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—वृत्त की परिधि
- **परिणाहवत्**—वि॰—-—परिणाह + मतुप्, मस्य वत्वम्—विशाल, बड़ा, विस्तृत
- **परिणाहिन्**—वि॰—-—परिणाह + इनि—विशाल, बड़ा
- **परिणिंसक**—वि॰—-—परि + निंस् + ण्वुल्—स्वाद चखने वाला, खाने वाला
- **परिणिंसक**—वि॰—-—परि + निंस् + ण्वुल्—चुम्बन
- **परिणिष्ठा**—स्त्री॰—-—परि + निष्ठा प्रा॰ स॰—पूरा कौशल
- **परिणीत**—वि॰, भू॰ क॰ कृ॰—-—परि + नी + क्त—विवाहित
- **परिणीता**—स्त्री॰—-—-—विवाहित स्त्री
- **परिणेतृ**—पुं॰—-—परि + नी + तृच्—पति
- **परितर्पणम्**—नपुं॰—-—परि + तृप् + ल्युट्—तृप्त करना, सन्तुष्ट करना
- **परितस्**—अव्य॰—-—परि + तस्—इर्दगिर्द, सब ओर, घुमा फिराकर, सब दिशाओं में, सर्वत्र, चारों ओर
- **परितस्**—अव्य॰—-—परि + तस्—की ओर, की दिशा में
- **परितापः**—पुं॰—-—परि + तप् + घञ्—अत्यंत या झुलसा देने वाली गर्मी
- **परितापः**—पुं॰—-—परि + तप् + घञ्—पीड़ा, वेदना, व्यथा, शोक
- **परितापः**—पुं॰—-—परि + तप् + घञ्—विलाप, मातम, शोक
- **परितापः**—पुं॰—-—परि + तप् + घञ्—कांपना, भय
- **परितुष्ट**—वि॰, भू॰ क॰ कृ॰—-—परि + तुष् + क्त—पूर्ण रूप से संतुष्ट
- **परितुष्ट**—वि॰, भू॰ क॰ कृ॰—-—परि + तुष् + क्त—प्रसन्न, खुश
- **परितुष्टिः**—स्त्री॰—-—परि + तुष् + क्तिन्—संतृप्ति, पूर्ण संतोष
- **परितुष्टिः**—स्त्री॰—-—परि + तुष् + क्तिन्—खुशी, हर्ष

- **परितोषः**—पुं°—-—परि + तुष् + घञ्—सन्तोष, इच्छा का अभाव
- **परितोषः**—पुं°—-—परि + तुष् + घञ्—पूर्ण संतोष, तृप्ति
- **परितोषः**—पुं°—-—परि + तुष् + घञ्—प्रसन्नता, खुशी, हर्ष, पसन्दगी
- **परितोषण**—वि°—-—परि + तुष् + णिच् + ल्युट्—संतुष्ट करने वाला, तृप्त करने वाला
- **परितोषणम्**—नपुं°—-—परि + तुष् + णिच् + ल्युट्—संतुष्ट करना
- **परित्यक्त**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + त्यज् + क्त—छोड़ा हुआ, उत्सृष्ट, सर्वथा त्यागा हुआ
- **परित्यक्त**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + त्यज् + क्त—वञ्चित, रहित
- **परित्यक्त**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + त्यज् + क्त—(तीर आदि) छोड़ा हुआ
- **परित्यक्त**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + त्यज् + क्त—अभावग्रस्त
- **परित्यागः**—पुं°—-—परि + त्यज् + घञ्—छोड़ना, उत्सर्ग करना, सर्वथा त्यागना, छोड़कर भाग जाना, (पत्नी आदि का) सम्बन्ध विच्छेद
- **परित्यागः**—पुं°—-—परि + त्यज् + घञ्—छोड़ देना, त्यागना, फेंक देना, विरक्त होना, गद्दी छोड़ देना
- **परित्यागः**—पुं°—-—परि + त्यज् + घञ्—अवहेलना, भूलचूक
- **परित्यागः**—पुं°—-—परि + त्यज् + घञ्—वदान्यता, उदारता
- **परित्यागः**—पुं°—-—परि + त्यज् + घञ्—हानि, कंगाली
- **परित्राणम्**—नपुं°—-—परि + त्रै + ल्युट्—संधारण, संरक्षण, बचाना प्रतिरक्षा, मुक्ति, छुटकारा
- **परित्रासः**—पुं°—-—परि + त्रस् + घञ्—त्रास, भय, डर
- **परिदंशित**—वि°—-—परि + देश् + क्त—कवच से ढका हुआ, आपादमस्तक शस्त्रों से सुसज्जित
- **परिदानम्**—नपुं°—-—परि + दा + ल्युट्—विनिमय, अदला-बदली
- **परिदानम्**—नपुं°—-—परि + दा + ल्युट्—भक्ति
- **परिदानम्**—नपुं°—-—परि + दा + ल्युट्—धरोहर का वापिस मिलना
- **परिदायिन्**—पुं°—-—परि + दा + णिनि—वह पिता जो अपनी पुत्री का विवाह ऐसे पुरुष से करता है जिसका बड़ा भाई अभी तक अविवाहित है
- **परिदाहः**—पुं°—-—परि + दह् + घञ्—जलन
- **परिदाहः**—पुं°—-—परि + दह् + घञ्—व्यथा, पीडा, दुःख, शोक
- **परीदाहः**—पुं°—-—परि + दह् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—जलन
- **परीदाहः**—पुं°—-—परि + दह् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—व्यथा, पीडा, दुःख, शोक
- **परीदेवः**—पुं°—-—परि + दिव् + घञ्—शोक मनाना, मातम, विलाप
- **परिदेवनम्**—नपुं°—-—परि + दिव् + ल्युट्—विलाप, विलखना, रोना-धोना

- **परिदेवनम्**—नपुं°—-—परि + दिव् + ल्युट्—पश्चात्ताप, खेद
- **परिदेवना**—स्त्री°—-—-—विलाप, विलखना, रोना-धोना
- **परिदेवना**—स्त्री°—-—-—पश्चात्ताप्, खेद
- **परिदेवितम्**—नपुं°—-—परि + दिव् + क्त—विलाप, विलखना, रोना-धोना
- **परिदेवितम्**—नपुं°—-—परि + दिव् + क्त—पश्चात्ताप्, खेद
- **परिदेवन**—वि°—-—परि + दिव् + ल्युट्—शोकसंतप्त, खेदजनक, दुःखी
- **परिद्रष्टृ**—पुं°—-—परि + दृश् + तृच्—तमाशबीन, दर्शक
- **परिधर्षणम्**—नपुं°—-—परि + धृष् + ल्युट्—हमला, आक्रमण, बलात्कार
- **परिधर्षणम्**—नपुं°—-—परि + धृष् + ल्युट्—अपमान, निरादर, तिरस्कार
- **परिधर्षणम्**—नपुं°—-—परि + धृष् + ल्युट्—दुर्व्यवहार, रूखा व्यवहार
- **परिधानम्**—नपुं°—-—परि + धा + ल्युट्—कपड़े पहनना, वस्त्र धारण करना
- **परिधानम्**—नपुं°—-—परि + धा + ल्युट्—पोशाक, अधीवस्त्र, कपड़े
- **परीधानम्**—नपुं°—-—परि + धा + ल्युट्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—कपड़े पहनना, वस्त्र धारण करना
- **परीधानम्**—नपुं°—-—परि + धा + ल्युट्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—पोशाक, अधीवस्त्र, कपड़े
- **परिधानीयम्**—नपुं°—-—परि + धा + अनीयर्—अधोवस्त्र, नाभि से नीचे का पहरावा
- **परिधायः**—पुं°—-—परि + धा + घञ्—नौकर-चाकर, अनुचर टहलुए
- **परिधायः**—पुं°—-—परि + धा + घञ्—आधार, आशय
- **परिधायः**—पुं°—-—परि + धा + घञ्—नितंब, चूतड़
- **परिधिः**—पुं°—-—परि + धा + कि—दीवार, मेंड़, बाड़, घेरा
- **परिधिः**—पुं°—-—परि + धा + कि—सूर्य या चन्द्रमा का परिवेश
- **परिधिः**—पुं°—-—परि + धा + कि—प्रकाशमंडल
- **परिधिः**—पुं°—-—परि + धा + कि—क्षितिज
- **परिधिः**—पुं°—-—परि + धा + कि—परिधि या वृत्त
- **परिधिः**—पुं°—-—परि + धा + कि—वृत्त की परिधि
- **परिधिः**—पुं°—-—परि + धा + कि—पहिये का घेरा
- **परिधिः**—पुं°—-—परि + धा + कि—('पलाश' आदि पवित्र वृक्ष की)समिधा या लकड़ी जो यज्ञकुण्ड के चारों ओर रक्खी रहती हैं
- **परिधिपतिखेचरः**—पुं°—परिधिः-पतिखेचरः—-—शिव का विशेषण

- **परिधिस्थः**—पुं°—परिधिः-स्थः—-—चौकीदार
- **परिधिस्थः**—पुं°—परिधिः-स्थः—-—किसी राजा या सेनापति का सहायक अधिकारी
- **परिधूपित**—वि°—-—परि + धूप + क्त—धूप द्वारा सुवासित या सुंगधित किया हुआ
- **परिधूसर**—वि°—-—परितः सर्वतो भावेन धूसरः- प्रा° स°—बिल्कुल भूरा
- **परिधेयम्**—नपुं°—-—परि + धा + यत्—अधोवस्त्र, नीचे पहनने का कपड़ा
- **परिध्वंसः**—पुं°—-—परि + ध्वंस् + घञ्—दुःख, विनाश,बर्बादी, कष्ट
- **परिध्वंसः**—पुं°—-—परि + ध्वंस् + घञ्—असफलता, विध्वंस, संहार
- **परिध्वंसः**—पुं°—-—परि + ध्वंस् + घञ्—जातिच्युति
- **परिध्वंसिन्**—वि°—-—परि + ध्वंस् + णिनि—गिर कर अलग होने वाला
- **परिध्वंसिन्**—वि°—-—परि + ध्वंस् + णिनि—बर्बाद होने वाला, नष्ट हो जाने वाला
- **परिनिर्वाण**—वि°, पुं°—-—-—बिल्कुल बुझा हुआ
- **परिनिर्वाणम्**—नपुं°—-—-—(भक्ति की) अन्तिम विलुप्ति, परिमृति
- **परिनिर्वृत्तिः**—स्त्री°—-—परि + निर् + वृत् + क्तिन्—आत्मा की शरीर से पूर्णमुक्ति, पुनर्जन्म से छुटकारा, पूर्ण मोक्ष
- **परिनिष्ठा**—स्त्री°, पुं°—-—-—(किसी वस्तु का) पूरा ज्ञान या परिचय
- **परिनिष्ठा**—स्त्री°, पुं°—-—-—पूर्ण निष्पत्ति
- **परिनिष्ठा**—स्त्री°, पुं°—-—-—चरम सीमा
- **परिनिष्ठित**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + नि + स्था + क्त—पूर्ण कुशल
- **परिनिष्ठित**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + नि + स्था + क्त—सुनिश्चित
- **परिपक्व**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + पच् + क्त—पूरी तरह पका हुआ
- **परिपक्व**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + पच् + क्त—भलीभाँति सेका हुआ
- **परिपक्व**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + पच् + क्त—बिल्कुल पक्का, प्रौढ़, सिद्ध, पूर्णता को प्राप्त
- **परिपक्व**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + पच् + क्त—सुसंवधित, समझदार, काईयाँ
- **परिपक्व**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + पच् + क्त—पूरी तरह पचा हुआ
- **परिपक्व**—वि°, भू° क° कृ°—-—परि + पच् + क्त—मुर्झाने वाला, मृत्यु के निकट
- **परिपणम्**—नपुं°—-—परि + पण् + घ —पूंजी, मूलधन, वारदाना
- **परिपनम्**—नपुं°—-—-—पूंजी, मूलधन, वारदाना
- **परिपणनन्**—नपुं°—-—परि + पण् + ल्युट्—वादा करना, प्रतिज्ञा करना

- **परिपणित**—भू० क० कृ०—-—परि + पण् + क्त—वादा किया हुआ, वचन दिया हुआ, प्रतिज्ञा की हुई
- **परिपंथकः**—पुं०—-—परि + पंथ् + ण्वुल्—शत्रु, विरोधी, दुश्मन
- **परिपंथिन्**—वि०—-—परि + पंथ् + णिनि—रास्ता रोकने वाला, रोड़ा अटकाने वाला, विरोध करने वाला, विघ्न डालने वाला
- **परिपंथिन्**—पुं०—-—परि + पंथ् + णिनि—रिपु, शत्रु, प्रतिद्वन्दी, दुश्मन
- **परिपंथिन्**—पुं०—-—परि + पंथ् + णिनि—लुटेरा, चोर डाकू
- **परिपाकः**—पुं०—-—परि + पच् + घञ्—पूरी तरह से पकाया जाना या संवारा जाना
- **परिपाकः**—पुं०—-—परि + पच् + घञ्—पचना
- **परिपाकः**—पुं०—-—परि + पच् + घञ्—पकजाना, परिपक्वन, विकास, पूर्णता
- **परिपाकः**—पुं०—-—परि + पच् + घञ्—फल, नतीजा, परिणाम
- **परिपाकः**—पुं०—-—परि + पच् + घञ्—चतुराई, दूरदर्शिता, कुशलता
- **परीपाकः**—पुं०—-—परि + पच् + घञ्,पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—पूरी तरह से पकाया जाना या संवारा जाना
- **परीपाकः**—पुं०—-—परि + पच् + घञ्,पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—पचना
- **परीपाकः**—पुं०—-—परि + पच् + घञ्,पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—पकजाना, परिपक्वन, विकास, पूर्णता
- **परीपाकः**—पुं०—-—परि + पच् + घञ्,पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—फल, नतीजा, परिणाम
- **परीपाकः**—पुं०—-—परि + पच् + घञ्,पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—चतुराई, दूरदर्शिता, कुशलता
- **परिपाटल**—वि०,प्रा०स०—-—-—पीला लाल
- **परिपाटिः**—स्त्री०, प्रा०ब०स०—-—परि भागेन पाटिः पाटनं गतिः यस्या —प्रणाली, रीति, प्रक्रम
- **परिपाटिः**—स्त्री०, प्रा०ब०स०—-—परि भागेन पाटिः पाटनं गतिः यस्या —व्यवस्था, क्रम, उत्तराधिकार
- **परिपाटी**—स्त्री०—-—परिपाटि + ङीष्—प्रणाली, रीति, प्रक्रम
- **परिपाटी**—स्त्री०—-—परिपाटि + ङीष्—व्यवस्था, क्रम, उत्तराधिकार
- **परिपाठः**—पुं०—-—-—परिगणना, पूर्ण निर्देशन, पूरा विवरण
- **परिपार्श्व**—वि०,अत्या० स० —-—-—निकट, पार्श्व में, पास, नजदीक ही
- **परिपालनम्**—नपुं०—-—परि + पल् + णिच् + ल्युट्—भलीभाँति पालना, रक्षा करना, संधारण करना, संभाले रखना, जीवित रखना
- **परिपालनम्**—नपुं०—-—परि + पल् + णिच् + ल्युट्—भरण पोषण, संवर्धन
- **परिपिष्टकम्**—नपुं०—-—परि + पिष् + क्त + कन्—सीसा
- **परिपीडनम्**—नपुं०—-—परि + पीड् + ल्युट्—निचोड़ना, भींचना
- **परिपीडनम्**—नपुं०—-—परि + पीड् + ल्युट्—क्षति पहुँचाना, चोट लगाना, नुकसान पहुँचाना

- **परिपुटनम्**—नपुं°—-—परि + पुट् + ल्युट्—हटाकर अलग करना
- **परिपुटनम्**—नपुं°—-—परि + पुट् + ल्युट्—बल्कल या छाल उतारना
- **परिपूजनम्**—नपुं°—-—परि + पूज् + ल्युट्—सम्मान करना, पूजा करना, अर्चना करना
- **परिपूजा**—स्त्री°—-—-—सम्मान करना, पूजा करना, अर्चना करना
- **परिपूत**—भू° क° कृ°—-—परि + पू + क्त—विशुद्ध किया गया, विशुद्ध
- **परिपूत**—भू° क° कृ°—-—परि + पू + क्त—पूरी तरह फटका हुआ, पिछोड़ा हुआ, भूसी से पृथक् किया हुआ
- **परिपूणम्**—नपुं°—-—परि + पूर् + ल्युट्—भरना
- **परिपूणम्**—नपुं°—-—परि + पूर् + ल्युट्—पूर्णता को पहुँचाना, पूरा करना
- **परिपूर्ण**—भू° क° कृ°—-—परि + पूर् + क्त—पूरी तरह भरा हुआ
- **परिपूर्णेंदुः**—पुं°—परिपूर्ण-इंदुः—-—पूरा चाँद, समस्त, सारा, भली भाँति भरा हुआ
- **परिपूर्णेंदुः**—पुं°—परिपूर्ण-इंदुः—-—स्वसंतुष्ट, संतृप्त
- **परिपूर्तिः**—स्त्री°—-—परि + पूर् + क्तिन्—पूर्णता, पर्याप्तता
- **परिपृच्छा**—स्त्री°—-—परि + प्रच्छ् -अङ + टाप्—पूछ-ताछ, प्रश्न
- **परिपेलव**—वि°—-—-—अति कोमल, सूक्ष्म, अत्यन्त मृदु
- **परिपोटः**—पुं°—-—परि + पूट + घञ्—एक प्रकार कर्ण रोग (जिसमें कान की खाल गलने लगती है)
- **परिपोटकः**—पुं°—-—परिपोट + कन्—एक प्रकार कर्ण रोग (जिसमें कान की खाल गलने लगती है)
- **परिपोषणम्**—नपुं°—-—परि + पुष् + ल्युट्—खिलाना-पिलाना ,भरण-पोषण
- **परिपोषणम्**—नपुं°—-—परि + पुष् + ल्युट्—आगे बढ़ाना, उन्नति करना
- **परिप्रश्नः**—पुं°—-—-—पूछताछ, प्रश्नवाचकता, सवाल
- **परिप्राप्तिः**—स्त्री°—-—-—अधिग्रहण, उपलब्धि
- **परिप्रेष्यः**—पुं°—-—-—सेवक
- **परिप्लव**—वि°—-—परि + प्लु + अच्—बहता हुआ
- **परिप्लव**—वि°—-—परि + प्लु + अच्—थरथराता हुआ, कांपता हुआ, डोलता हुआ, हिलोरे लेता हुआ, कम्पायमान
- **परिप्लव**—वि°—-—परि + प्लु + अच्—अस्थिर, चंचल
- **परिप्लवः**—पुं°—-—परि + प्लु + अच्—जलप्लावन
- **परिप्लवः**—पुं°—-—परि + प्लु + अच्—जल में डुबोना, गीला करना
- **परिप्लवः**—पुं°—-—परि + प्लु + अच्—किश्ती, नाव

- **परिप्लवः**—पुं°—-—परि + प्लु + अच्—उत्पीड़न, अत्याचार
- **परिप्लुत**—भू° क° कृ°—-—परि + प्लु + क्त—बाढ़ग्रस्त, जलप्लावित
- **परिप्लुत**—भू° क° कृ°—-—परि + प्लु + क्त—घवड़ाया हुआ, व्याकुल
- **परिप्लुत**—भू° क° कृ°—-—परि + प्लु + क्त—आर्द्रीकृत, क्लिन्न, स्नात
- **परिप्लुतम्**—नपुं°—-—परि + प्लु + क्त—उछल छलांग
- **परिप्लुता**—स्त्री°—-—परि + प्लु + क्त+ टाप्—शराब
- **परिप्लुष्ट**—भू° क° कृ°—-—परि + प्लुष् + क्त—जला हुआ, झुलसा हुआ, भनभनाया हुआ
- **परिबर्हः**—पुं°—-—परि + बर्ह् + घञ्—अनुचर, नौकर-चाकर, टहलुए
- **परिबर्हः**—पुं°—-—परि + बर्ह् + घञ्—उपस्कर, घर के अन्दर का सामान
- **परिबर्हः**—पुं°—-—परि + बर्ह् + घञ्—राज चिह्न
- **परिबर्हः**—पुं°—-—परि + बर्ह् + घञ्—संपत्ति, धनदौलत
- **परिवर्हः**—पुं°—-—परि + वर्ह् + घञ्—अनुचर, नौकर-चाकर, टहलुए
- **परिवर्हः**—पुं°—-—परि + वर्ह् + घञ्—उपस्कर, घर के अन्दर का सामान
- **परिवर्हः**—पुं°—-—परि + वर्ह् + घञ्—राज चिह्न
- **परिवर्हः**—पुं°—-—परि + वर्ह् + घञ्—संपत्ति, धनदौलत
- **परिबर्हणम्**—नपुं°—-—परि + बर्ह् + ल्युट्—अनुचर, नौकर-चाकर
- **परिबर्हणम्**—नपुं°—-—परि + बर्ह् + ल्युट्—बनाव-सिंगार, काट-छांट
- **परिबर्हणम्**—नपुं°—-—परि + बर्ह् + ल्युट्—वृद्धि
- **परिबर्हणम्**—नपुं°—-—परि + बर्ह् + ल्युट्—पूजा
- **परिवर्हणम्**—नपुं°—-—परि + वर्ह् + ल्युट्—अनुचर, नौकर-चाकर
- **परिवर्हणम्**—नपुं°—-—परि + वर्ह् + ल्युट्—बनाव-सिंगार, काट-छांट
- **परिवर्हणम्**—नपुं°—-—परि + वर्ह् + ल्युट्—वृद्धि
- **परिवर्हणम्**—नपुं°—-—परि + वर्ह् + ल्युट्—पूजा
- **परिबाधा**—स्त्री°—-—-—कष्ट, पीड़ा, संतापन
- **परिबाधा**—स्त्री°—-—-—थकावट, उग्र व्यथा
- **परिबृंहणम्**—नपुं°—-—परि + बृंह् + ल्युट्—समृद्धि, कल्याण
- **परिबृंहणम्**—नपुं°—-—परि + बृंह् + ल्युट्—परिशिष्ट, सम्पूरक

- **परिवृंहणम्**—नपुं°—-—परि + वृंह् + ल्युट्—समृद्धि, कल्याण
- **परिवृंहणम्**—नपुं°—-—परि + वृंह् + ल्युट्—परिशिष्ट, सम्पूरक
- **परिबृंहित**—भू° क° कृ°—-—-—बढ़ा हुआ, आवर्धित
- **परिबृंहित**—भू° क° कृ°—-—-—फलाफूला, समृद्ध हुआ
- **परिबृंहित**—भू° क° कृ°—-—-—से युक्त, संपन्न
- **परिवृंहित**—भू° क° कृ°—-—-—बढ़ा हुआ, आवर्धित
- **परिवृंहित**—भू° क° कृ°—-—-—फलाफूला, समृद्ध हुआ
- **परिवृंहित**—भू° क° कृ°—-—-—से युक्त, संपन्न
- **परिबृंहितम्**—नपुं°—-—-—हाथी की चिघाड़
- **परिवृंहितम्**—नपुं°—-—-—हाथी की चिघाड़
- **परिभंगः**—पुं°—-—-—छिन्नभिन्न होना, टूट कर टुकड़े २ होना
- **परिभर्त्सनम्**—नपुं°—-—परि + भर्त्स् + ल्युट्—धमकाना, घुड़कना
- **परिभवः**—पुं°—-—परि + भू + अप्—अपमान, क्षति पहुँचाना, प्रतिष्ठा भंग, तिरस्कार, निरादर, मानहानि
- **परिभवः**—पुं°—-—परि + भू + अप्—हार, पराजय
- **परीभवः**—पुं°—-—परि + भू + अप्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—अपमान, क्षति पहुँचाना, प्रतिष्ठा भंग, तिरस्कार, निरादर, मानहानि
- **परीभवः**—पुं°—-—परि + भू + अप्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—हार, पराजय
- **परिभवास्पदम्**—नपुं°—परिभवः-आस्पदम्—-—घृणा का पात्र
- **परिभवास्पदम्**—नपुं°—परिभवः-आस्पदम्—-—अपमान, अपमानपूर्ण स्थिति
- **परिभवस्पदम्**—नपुं°—परिभवः-पदम्—-—घृणा का पात्र
- **परिभवस्पदम्**—नपुं°—परिभवः-पदम्—-—अपमान, अपमानपूर्ण स्थिति
- **परिभवविधिः**—पुं°—परिभवः-विधिः—-—प्रतिष्ठाभंग
- **परिभविन्**—वि°—-—परि + भू + इनि—मानहर, तुच्छ, अनादर या घृणायुक्त व्यवहार करने वाला
- **परिभविन्**—वि°—-—परि + भू + इनि—अपमानग्रस्त, तिरस्कार, पीडित
- **परिभावः**—पुं°—-—परि + भू + घञ्—अपमान, क्षति पहुँचाना, प्रतिष्ठा भंग, तिरस्कार, निरादर, मानहानि
- **परिभावः**—पुं°—-—परि + भू + घञ्—हार, पराजय
- **परिभाविन्**—वि°—-—परि + भू + णिनि—मानमर्दन करने वाला, घृणा करने वाला, तिरस्कारयुक्त व्यवहार करने वाला
- **परिभाविन्**—वि°—-—परि + भू + णिनि—लज्जित करने वाला, आगे बढ़ जाने वाला, श्रेष्ठ होने वाला

- **परिभाविन्**—वि°—-—परि + भू + णिनि—तुच्छ समझने वाला, उपेक्षा करने वाला
- **परिभाषण**—पुं°—-—परि + भाष् + ल्युट्—वार्तालाप, प्रवचन, बातचीत करना, गपशप लगाना, गप्पें हाँकना
- **परिभाषण**—पुं°—-—परि + भाष् + ल्युट्—निन्दाभिव्यक्ति, धिक्कारना, झिड़की, अपशब्द
- **परिभाषण**—पुं°—-—परि + भाष् + ल्युट्—नियम, विधि
- **परिभाषा**—स्त्री°—-—परि + भाष् + अ + टाप्—व्याख्यान, प्रवचन
- **परिभाषा**—स्त्री°—-—परि + भाष् + अ + टाप्—निन्दा, झिड़की, कलङ्क, गाली
- **परिभाषा**—स्त्री°—-—परि + भाष् + अ + टाप्—पारिभाषिक शब्दावली, पारिभाषिक पदावली, (किसी ग्रंथ में प्रयुक्त) तकनीकी शब्दावली
- **परिभाषा**—स्त्री°—-—परि + भाष् + अ + टाप्—(अतः) कोई सामान्य नियम, विधि या परिभाषा जो सर्वत्र घट सके
- **परिभाषा**—स्त्री°—-—परि + भाष् + अ + टाप्—किसी भी पुस्तक में प्रयुक्त संकेत या संक्षेपकों की सूची
- **परिभाषा**—स्त्री°—-—परि + भाष् + अ + टाप्—पाणिनि के अन्य सूत्रों में मिला हुआ व्याख्यानात्मक सूत्र जो उन सूत्रों के प्रयोग की रीति बतलाता है
- **परिभुक्त**—भू° क° कृ°—-—परि + भुज् + क्त—खाया हुआ, प्रयोग में लाया हुआ
- **परिभुक्त**—भू° क° कृ°—-—परि + भुज् + क्त—उपभुक्त
- **परिभुक्त**—भू° क° कृ°—-—परि + भुज् + क्त—अधिकृत
- **परिभुग्न**—वि°—-—परि + भुज् + क्त—विनत, वक्रीकृत, झुका हुआ
- **परिभूतिः**—स्त्री°—-—परि + भू + क्तिन्—तिरस्कार, अपमान, अनादर, अवमानना
- **परिभूषणः**—पुं°—-—परि + भूष् + ल्युट्—किसी भूमि का समस्त राजस्व छोड़ कर जो संधि की गई हो
- **परिभोगः**—पुं°—-—परि + भुज् + घञ्—उपभोग
- **परिभोगः**—पुं°—-—परि + भुज् + घञ्—विशेष कर मैथुन
- **परिभोगः**—पुं°—-—परि + भुज् + घञ्—दूसरे के सामान का अवैध प्रयोग
- **परिभ्रंशः**—पुं°—-—परि + भ्रंशू + घञ्—बच निकलना
- **परिभ्रंशः**—पुं°—-—परि + भ्रंशू + घञ्—गिरना
- **परिभ्रमः**—पुं°—-—परि + भ्रम् + घञ्—घूमना, इधर उधर टहलना
- **परिभ्रमः**—पुं°—-—परि + भ्रम् + घञ्—घुमा-फिरा कर बात कहना, वाग्जाल, वक्रोक्ति
- **परिभ्रमः**—पुं°—-—परि + भ्रम् + घञ्—भूल, भ्रम
- **परिभ्रमणम्**—नपुं°—-—परि + भ्रम् + ल्युट्—घूमना, इधर उधर टहलना, पर्यटन
- **परिभ्रमणम्**—नपुं°—-—परि + भ्रम् + ल्युट्—चारों ओर घूमना, चक्कर काटना, परिधि
- **परिभ्रष्ट**—भू° क° कृ°—-—परि + भ्रंश् + क्त—गिरा हुआ, स्खलित

- **परिभ्रष्ट**—भू० क० कृ०—–—परि + भ्रंश् + क्त—बच कर निकला हुआ
- **परिभ्रष्ट**—भू० क० कृ०—–—परि + भ्रंश् + क्त—फेंका हुआ, अधःपतित
- **परिभ्रष्ट**—भू० क० कृ०—–—परि + भ्रंश् + क्त—वञ्चित, शून्य
- **परिभ्रष्ट**—भू० क० कृ०—–—परि + भ्रंश् + क्त—अवहेलना करने वाला
- **परिमण्डल**—वि०, पुं०—-—-—गोलाकार, गोल, वर्तुलाकार
- **परिमण्डलम्**—नपुं०—-—-—पिंड, गोलक
- **परिमण्डलम्**—नपुं०—-—-—गेंद
- **परिमण्डलम्**—नपुं०—-—-—वृत्त
- **परिमन्थर**—वि०—-—-—अत्यन्त मंद
- **परिमन्द**—वि०—-—-—अत्यंत मंद, धुंधला, बिल्कुल फीका
- **परिमन्द**—वि०—-—-—अत्यंत मंद
- **परिमन्द**—वि०—-—-—बहुत थका हुआ
- **परिमन्द**—वि०—-—-—बहुत थोड़ा
- **परिमरः**—पुं०—-—परि + मृ + अप्—विनाश
- **परिमर्दः**—पुं०—-—परि + मृद् + घञ्—रगड़ना, पीसना
- **परिमर्दः**—पुं०—-—परि + मृद् + घञ्—कुचलना, पैरों के नीचे रौंदना
- **परिमर्दः**—पुं०—-—परि + मृद् + घञ्—विनाश
- **परिमर्दः**—पुं०—-—परि + मृद् + घञ्—चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना
- **परिमर्दः**—पुं०—-—परि + मृद् + घञ्—आलिंगन, परिरंभण
- **परिमर्दनम्**—नपुं०—-—परि + मृद् + ल्युट्—रगड़ना, पीसना
- **परिमर्दनम्**—नपुं०—-—परि + मृद् + ल्युट्—कुचलना, पैरों के नीचे रौंदना
- **परिमर्दनम्**—नपुं०—-—परि + मृद् + ल्युट्—विनाश
- **परिमर्दनम्**—नपुं०—-—परि + मृद् + ल्युट्—चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना
- **परिमर्दनम्**—नपुं०—-—परि + मृद् + ल्युट्—आलिंगन, परिरंभण
- **परिमर्षः**—पुं०—-—परि + मृष् + घञ्—ईर्ष्या, अरुचि
- **परिमर्षः**—पुं०—-—परि + मृष् + घञ्—क्रोध
- **परिमलः**—पुं०—-—परि + मल् + अच्—सुगंध, सुवास, सौरभ, महक

- **परिमलः**—पुं°—-—परि + मल् + अच्—सुगंधयुक्त पदार्थों का पीसना
- **परिमलः**—पुं°—-—परि + मल् + अच्—सुगंधद्रव्य
- **परिमलः**—पुं°—-—परि + मल् + अच्—सहवास
- **परिमलः**—पुं°—-—परि + मल् + अच्—विद्वत्सभा
- **परिमलः**—पुं°—-—परि + मल् + अच्—कलंक, धब्बा
- **परिमलित**—वि°—-—परि + मल् + क्त—सुगंधित
- **परिमलित**—वि°—-—परि + मल् + क्त—कलुषित, सौन्दर्य भ्रष्ट
- **परिमाणम्**—नपुं°—-—परि + मा + ल्युट्—मापना, (शक्ति या ताक़त की) माप
- **परिमाणम्**—नपुं°—-—परि + मा + ल्युट्—तोल, संख्या, मूल्य
- **परीमाणम्**—नपुं°—-—परि + मा + ल्युट्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—मापना, (शक्ति या ताक़त की) माप
- **परीमाणम्**—नपुं°—-—परि + मा + ल्युट्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—तोल, संख्या, मूल्य
- **परिमार्गः**—पुं°—-—परि + मार्ग् + घञ्—ढूंढना, खोज करना, तलाश करना, पता लगाना, पदचिह्न देखते हुए खोज निकालना
- **परिमार्गः**—पुं°—-—परि + मार्ग् + घञ्—स्पर्श, सम्पर्क
- **परिमार्गः**—पुं°—-—परि + मार्ग् + घञ्—साफ़ करना, पोछना
- **परिमार्गणम्**—नपुं°—-—परि + मार्ग् + ल्युट्—ढूंढना, खोज करना, तलाश करना, पता लगाना, पदचिह्न देखते हुए खोज निकालना
- **परिमार्गणम्**—नपुं°—-—परि + मार्ग् + ल्युट्—स्पर्श, सम्पर्क
- **परिमार्गणम्**—नपुं°—-—परि + मार्ग् + ल्युट्—साफ़ करना, पोछना
- **परिमार्जनम्**—नपुं°—-—परि + मृज् + णिच् + ल्युट्—मांजना, साफ़ करना, झाड़-पोछ करना
- **परिमार्जनम्**—नपुं°—-—परि + मृज् + णिच् + ल्युट्—घी और शहद से बनी मिठाई
- **परिमित**—भू° क° कृ°—-—परि + मा + क्त—मध्यम, मितव्ययी
- **परिमित**—भू° क° कृ°—-—परि + मा + क्त—सीमित
- **परिमित**—भू° क° कृ°—-—परि + मा + क्त—मापा हुआ, नपातुला
- **परिमित**—भू° क° कृ°—-—परि + मा + क्त—विनियमित, समंजित
- **परिमिताभरण**—वि°—परिमित-आभरण—-—थोड़े आभूषण धारण करने वाला, मध्यमरूप से अलंकृत
- **परिमितायुस्**—वि°—परिमित-आयुस्—-—अल्पायु, थोड़ी उम्र जीने वाला
- **परिमिताहार**—वि°—परिमित-आहार—-—परेहज़गार, मिताहारी, कमभोजन करने वाला
- **परिमितभोजन**—वि°—परिमित-भोजन—-—परेहज़गार, मिताहारी, कमभोजन करने वाला

- **परिमितकथ**—वि°—परिमित-कथ—-—थोड़ा बोलने वाला, मितभाषी, नपे तुले शब्द बोलने वाला
- **परिमितिः**—स्त्री°—-—परि + मा + क्तिन्—माप, परिमाण
- **परिमितिः**—स्त्री°—-—परि + मा + क्तिन्—सीमाबंधन
- **परिमिलनम्**—नपुं°—-—परि + मिल् + ल्युट्—स्पर्श, संपर्क
- **परिमिलनम्**—नपुं°—-—परि + मिल् + ल्युट्—सम्मिश्रण, मेल
- **परिमुखम्**—अव्य° —-—अव्य° सं°—मुँह के सामने, (किसी के) इर्द गिर्द, चारों ओर
- **परिमुग्ध**—वि°—-—परि + मुह् + क्त—भोला भाला, प्रिय, सरल, मनोहर
- **परिमुग्ध**—वि°—-—परि + मुह् + क्त—आकर्षक परन्तु मूर्ख
- **परिमृदित**—भू° क° कृ°—-—परि + मृद् + क्त—पैरों तले रौंदा हुआ, कुचला हुआ, पददलित, दुर्व्यवहारग्रस्त
- **परिमृदित**—भू° क° कृ°—-—परि + मृद् + क्त—आलिंगन, परिरंभण किया हुआ
- **परिमृदित**—भू° क° कृ°—-—परि + मृद् + क्त—मसला हुआ, पीसा हुआ
- **परिमृष्ट**—भू° क° कृ°—-—परि + मृज् + क्त—धोया हुआ, मांजा हुआ, शुद्ध किया हुआ
- **परिमृष्ट**—भू° क° कृ°—-—परि + मृज् + क्त—मसला हुआ, स्पर्श किया हुआ, थपथपाया हुआ
- **परिमृष्ट**—भू° क° कृ°—-—परि + मृज् + क्त—आलिंगन
- **परिमृष्ट**—भू° क° कृ°—-—परि + मृज् + क्त—फैला हुआ, व्याप्त, भरा हुआ
- **परिमेय**—वि°—-—परि + मा + यत्—थोड़े, सीमित
- **परिमेय**—वि°—-—परि + मा + यत्—जो मापा जा सके, गिना जा सके
- **परिमेय**—वि°—-—परि + मा + यत्—सान्त, जिसकी सीमा हो, समापिका
- **परिमोक्षः**—पुं°—-—परि + मोक्ष् + घञ्—हटाया, मुक्त करना
- **परिमोक्षः**—पुं°—-—परि + मोक्ष् + घञ्—मुक्त करना, स्वतंत्र करना, छुटकारा
- **परिमोक्षः**—पुं°—-—परि + मोक्ष् + घञ्—ख़ाली करना, मलत्याग
- **परिमोक्षः**—पुं°—-—परि + मोक्ष् + घञ्—बच निकलना
- **परिमोक्षः**—पुं°—-—परि + मोक्ष् + घञ्—मोक्ष, निर्वाण
- **परिमोक्षणम्**—नपुं°—-—परि + मोक्ष् + ल्युट्—मुक्ति, छुटकारा
- **परिमोक्षणम्**—नपुं°—-—परि + मोक्ष् + ल्युट्—खोल देना
- **परिमोषः**—पुं°—-—परि + मुष् + घञ्—चुराना, लूटाना, चोरी
- **परिमोषिन्**—पुं°—-—परि + मुष् + णिनि—चोर, लुटेरा

- **परिमोहनम्**—नपुं°—————बहकाना, प्रलोभन देना, फुसलाना, मंत्रमुग्ध करना
- **परिमोहनम्**—नपुं°—————व्यामोहित करना, प्रेम में अन्धा करना
- **परिम्लान**—भू° क° कृ°———परि + म्ला + क्त—मुर्झाया हुआ, मूर्छित, कुम्हालाया हुआ
- **परिम्लान**—भू° क° कृ°———परि + म्ला + क्त—श्रान्त, शिथिल
- **परिम्लान**—भू° क° कृ°———परि + म्ला + क्त—क्षीण, निस्तेज, हतप्रभ
- **परिम्लान**—भू° क° कृ°———परि + म्ला + क्त—कलंकित
- **परिरक्षकः**—पुं°———परि + रक्ष् + ण्वुल्—रक्षा करनेवाला, अभिभावक
- **परिरक्षणम्**—नपुं°———परि + रक्ष् + ल्युट्—रक्षा, संधारण, देखभाल करना
- **परिरक्षणम्**—नपुं°———परि + रक्ष् + ल्युट्—ध्यान रखना, बनाये रखना, पालन-पोषण
- **परिरक्षणम्**—नपुं°———परि + रक्ष् + ल्युट्—छुटकारा, बचाव
- **परिरक्षा**—स्त्री°———परि + रक्ष् + अङ् + टाप् च—रक्षा, संधारण, देखभाल करना
- **परिरक्षा**—स्त्री°———परि + रक्ष् + अङ् + टाप् च—ध्यान रखना, बनाये रखना, पालन-पोषण
- **परिरक्षा**—स्त्री°———परि + रक्ष् + अङ् + टाप् च—छुटकारा, बचाव
- **परिरथ्या**—स्त्री°—————गली, सड़क
- **परिरंभः**—पुं°———परि + रभ् + घञ्—आलिंगन करना, अंङ्ग में भर लेना
- **परीरंभः**—पुं°———परि + रभ् + घञ,पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—आलिंगन करना, अंङ्ग में भर लेना
- **परिरंभणम्**—नपुं°———परि + रभ् + ल्युट्—आलिंगन करना, अंङ्ग में भर लेना
- **परिराटिन्**—वि° ——परि + रट् + घिनुण्—जोर से चिल्लाने वाला, चीखने वाला, रट लगाने वाला
- **परिलघु**—वि°—————बहुत हल्का
- **परिलघु**—वि°—————बहुत हल्का या जल्दी पचने वाला
- **परिलघु**—वि°—————बहुत छोटा
- **परिलुप्त**—भू° क° कृ°———परि + लुप् + क्त—अन्तर्बाधित, सबाध, घटाया हुआ
- **परिलुप्त**—भू° क° कृ°———परि + लुप् + क्त—नष्ट, लुप्त
- **परिलेखः**—पुं°———परि + लिख् + पञ्—रूपरेखा, आलेखन, चित्रण, खाका
- **परिलेखः**—पुं°———परि + लिख् + पञ्—चित्र
- **परिलोपः**—पुं°———परि + लुप् + घञ्—क्षतिः
- **परिलोपः**—पुं°———परि + लुप् + घञ्—उपेक्षा, भूलचूक

- **परिवत्सरः**—पुं॰—-—-—वर्ष, एक समूचा वर्ष, वर्ष का आवर्तन
- **परिवर्जनम्**—नपुं॰—-—परि + वृज् + ल्युट्—छोड़ना, त्यागना, तजना
- **परिवर्जनम्**—नपुं॰—-—परि + वृज् + ल्युट्—छोड़ देना, तिलांजलि देना
- **परिवर्जनम्**—नपुं॰—-—परि + वृज् + ल्युट्—वध, हत्या
- **परिवर्तः**—पुं॰—-—परि + वृत् + घञ्—परिक्रमण, (ग्रह आदि का) घूमना
- **परिवर्तः**—पुं॰—-—परि + वृत् + घञ्—कालचक्र, कालक्रम, कालगति
- **परिवर्तः**—पुं॰—-—परि + वृत् + घञ्—युग का अन्त
- **परिवर्तः**—पुं॰—-—परि + वृत् + घञ्—आवृत्ति, पुनरावर्तन
- **परिवर्तः**—पुं॰—-—परि + वृत् + घञ्—परिवर्तन, अदल-बदल
- **परिवर्तः**—पुं॰—-—परि + वृत् + घञ्—प्रत्यावर्तन, पलायन, अपक्रमण
- **परिवर्तः**—पुं॰—-—परि + वृत् + घञ्—वर्ष
- **परिवर्तः**—पुं॰—-—परि + वृत् + घञ्—पुनर्जन्म, आवागमन
- **परिवर्तः**—पुं॰—-—परि + वृत् + घञ्—विनिमय, अदला-बदली
- **परिवर्तः**—पुं॰—-—परि + वृत् + घञ्—पुनरागमन, वापसी
- **परिवर्तः**—पुं॰—-—परि + वृत् + घञ्—आवास
- **परिवर्तः**—पुं॰—-—परि + वृत् + घञ्—किसी पुस्तक का अध्याय या परिच्छेद
- **परिवर्तः**—पुं॰—-—परि + वृत् + घञ्—कुर्मावतार, विष्णु का दूसरा अवतार
- **परीवर्तः**—पुं॰—-—परि + वृत् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—परिक्रमण, (ग्रह आदि का) घूमना
- **परीवर्तः**—पुं॰—-—परि + वृत् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—कालचक्र, कालक्रम, कालगति
- **परीवर्तः**—पुं॰—-—परि + वृत् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—युग का अन्त
- **परीवर्तः**—पुं॰—-—परि + वृत् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—आवृत्ति, पुनरावर्तन
- **परीवर्तः**—पुं॰—-—परि + वृत् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—परिवर्तन, अदल-बदल
- **परीवर्तः**—पुं॰—-—परि + वृत् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—प्रत्यावर्तन, पलायन, अपक्रमण
- **परीवर्तः**—पुं॰—-—परि + वृत् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—वर्ष
- **परीवर्तः**—पुं॰—-—परि + वृत् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—पुनर्जन्म, आवागमन
- **परीवर्तः**—पुं॰—-—परि + वृत् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—विनिमय, अदला-बदली
- **परीवर्तः**—पुं॰—-—परि + वृत् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—पुनरागमन, वापसी

- **परीवर्तः**—पुं°—-—परि + वृत् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—आवास
- **परीवर्तः**—पुं°—-—परि + वृत् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—किसी पुस्तक का अध्याय या परिच्छेद
- **परीवर्तः**—पुं°—-—परि + वृत् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—कुर्मावतार, विष्णु का दूसरा अवतार
- **परिवर्तक**—वि°—-—परि + वृत् + णिच् + ण्वुल्—घुमाने वाला, चक्कर देने वाला
- **परिवर्तक**—वि°—-—परि + वृत् + णिच् + ण्वुल्—बदला चुकाने वाला, वापिस करने वाला
- **परिवर्तनम्**—नपुं°—-—परि + वृत् + ल्युट्—इधर उधर घूमना, इधर उधर मुड़ना (बिस्तर आदि पर) करवटें बदलना
- **परिवर्तनम्**—नपुं°—-—परि + वृत् + ल्युट्—इधर उधर मुँह फिराना, चक्कर काटना, चकराना
- **परिवर्तनम्**—नपुं°—-—परि + वृत् + ल्युट्—क्रान्तिकाल, चक्र का अन्त
- **परिवर्तनम्**—नपुं°—-—परि + वृत् + ल्युट्—बदलना
- **परिवर्तनम्**—नपुं°—-—परि + वृत् + ल्युट्—अदला-बदली, विनिमय
- **परिवर्तनम्**—नपुं°—-—परि + वृत् + ल्युट्—पलटना, उलटना
- **परिवर्तिका**—स्त्री°—-—परि + वृत् + ण्वुल् + टाप्, इत्वम्—लिंग की अग्रत्वचा का सिकुड़ जाना
- **परिवर्तिन्**—वि°—-—परि + वृत् + णिनि—इधर उधर मुड़ने वाला, घूमने वाला
- **परिवर्तिन्**—वि°—-—परि + वृत् + णिनि—सदा प्रत्यावर्ती, वार २ आने वाला
- **परिवर्तिन्**—वि°—-—परि + वृत् + णिनि—बदलने वाला
- **परिवर्तिन्**—वि°—-—परि + वृत् + णिनि—निकट रहने वाला, इधर उधर घूमने वाला
- **परिवर्तिन्**—वि°—-—परि + वृत् + णिनि—प्रत्यावर्ती, पलायन शील
- **परिवर्तिन्**—वि°—-—परि + वृत् + णिनि—विनिमयशील
- **परिवर्तिन्**—वि°—-—परि + वृत् + णिनि—क्षतिपूर्ति करने वाला, बदला देने वाला
- **परिवर्धनम्**—नपुं°—-—परि + वृध् + ल्युट्—बढ़ना, विस्तृत होना
- **परिवर्धनम्**—नपुं°—-—परि + वृध् + ल्युट्—संवर्धन, पालन-पोषण करना
- **परिवर्धनम्**—नपुं°—-—परि + वृध् + ल्युट्—बड़ा होना, वृद्धि
- **परिवसथः**—पुं°—-—परितो वसन्ति अत्र- परि + वस् + अथ—गाँव
- **परिवहः**—पुं°—-—परि + वह + अच्—वायु के सात मार्गों में एक - छठा मार्ग
- **परिवादः**—पुं°—-—परि + वद् + घञ्—कलंक, निन्दा, बदनामी, गाली
- **परिवादः**—पुं°—-—परि + वद् + घञ्—लोकापवाद, कलंक, दूषण, अपकीर्ति
- **परिवादः**—पुं°—-—परि + वद् + घञ्—दोषी ठहराना, दोषारोपण करना

- **परिवादः**—पुं॰—-—परि + वद् + घञ्—सारंगी बजाने का उपकरण
- **परीवादः**—पुं॰—-—परि + वद् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—वायु के सात मार्गों में एक - छठा मार्ग
- **परीवादः**—पुं॰—-—परि + वद् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—कलंक, निन्दा, बदनामी, गाली
- **परीवादः**—पुं॰—-—परि + वद् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—लोकापवाद, कलंक, दूषण, अपकीर्ति
- **परीवादः**—पुं॰—-—परि + वद् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—दोषी ठहराना, दोषारोपण करना
- **परीवादः**—पुं॰—-—परि + वद् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—सारंगी बजाने का उपकरण
- **परिवादकः**—पुं॰—-—परि + वद् + णिच् + ण्वुल्—वादी, अभियोक्ता, दोषारोपक
- **परिवादकः**—पुं॰—-—परि + वद् + णिच् + ण्वुल्—सारंगी बजाने वाला
- **परिवादिन्**—वि॰—-—परि + वद् + णिनि—खरीखोटी सुनाने वाला, निन्दा करने वाला, गाली देने वाला, बुरा-भला कहने वाला
- **परिवादिन्**—वि॰—-—परि + वद् + णिनि—दोषारोपण करने वाला
- **परिवादिन्**—वि॰—-—परि + वद् + णिनि—चीखने वाला, चिल्लाने वाला
- **परिवादिन्**—वि॰—-—परि + वद् + णिनि—निन्दित, कलंकित
- **परिवादिन्**—पुं॰—-—-—दोषारोपण करने वाला, वादी, अभियोक्ता
- **परिवादिनी**—स्त्री॰—-—-—सात तारों की वीणा
- **परिवापः**—पुं॰—-—परि + वप् + घञ्—मुंडन या हजामत करना, मूंडना या बाल काटना
- **परिवापः**—पुं॰—-—परि + वप् + घञ्—बोना
- **परिवापः**—पुं॰—-—परि + वप् + घञ्—जलाशय, पल्वल, पोखर, जोहड़
- **परिवापः**—पुं॰—-—परि + वप् + घञ्—सामान (घरका)
- **परिवापः**—पुं॰—-—परि + वप् + घञ्—नौकर-चाकर, अनुचर वर्ग
- **परीवापः**—पुं॰—-—परि + वप् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—मुंडन या हजामत करना, मूंडना या बाल काटना
- **परीवापः**—पुं॰—-—परि + वप् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—बोना
- **परीवापः**—पुं॰—-—परि + वप् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—जलाशय, पल्वल, पोखर, जोहड़
- **परीवापः**—पुं॰—-—परि + वप् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—सामान (घरका)
- **परीवापः**—पुं॰—-—परि + वप् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—नौकर-चाकर, अनुचर वर्ग
- **परिवापित**—वि॰—-—परि + वप् + णिच् + क्त—मुंडा हुआ
- **परिवारः**—पुं॰—-—परिव्रियते अनेन- परि + वृ + घञ्—नौकर-चाकर, अनुचर वर्ग, टहलुए, अनुयायी
- **परिवारः**—पुं॰—-—परिव्रियते अनेन- परि + वृ + घञ्—ढक्कन, चादर

- **परिवारः**—पुं°—-—परिव्रियते अनेन- परि + वृ + घञ्—म्यान, कोष
- **परीवारः**—पुं°—-—परिव्रियते अनेन- परि + वृ + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—नौकर-चाकर, अनुचर वर्ग, टहलुए, अनुयायी
- **परीवारः**—पुं°—-—परिव्रियते अनेन- परि + वृ + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—ढक्कन, चादर
- **परीवारः**—पुं°—-—परिव्रियते अनेन- परि + वृ + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—म्यान, कोष
- **परिवारणम्**—नपुं°—-—परि + वृ + णिच् + ल्युट्—ढक्कन, लिफ़ाफ़ा
- **परिवारणम्**—नपुं°—-—परि + वृ + णिच् + ल्युट्—नौकर-चाकर, अनुचर
- **परिवारणम्**—नपुं°—-—परि + वृ + णिच् + ल्युट्—दूर हटाना
- **परिवारित**—भू° क° कृ°—-—परि + वृ + णिच् + क्त—परिवेष्टित, लपेटा हुआ, घेरा हुआ
- **परिवारित**—भू° क° कृ°—-—परि + वृ + णिच् + क्त—व्याप्त, फैलाया हुआ
- **परिवारितम्**—नपुं°—-—-—ब्रह्मा का धनुष
- **परिवासः**—पुं°—-—परि + वस् + घञ्—आवास स्थान, ठहरना, टिकना, प्रवास, बसेरा
- **परिवाहः**—पुं°—-—परि + वह् + घञ्— तालाब का
- **परीवाहः**—पुं°—-—परि + वह् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः— तालाब का
- **परिवाहिन्**—वि°—-—परि + वह् + णिनि—छलकता हुआ
- **परिविण्णः**—पुं°—-—परि + विद् + क्त, पक्षे णत्वयोरभावः—अविवाहित बड़ा भाई जिसके छोटे भाई का विवाह हो गया हो
- **परिविन्नः**—पुं°—-—परि + विद् + क्त, पक्षे नत्वयोरभावः—अविवाहित बड़ा भाई जिसके छोटे भाई का विवाह हो गया हो
- **परिवित्तः**—पुं°—-—परि + विद् + क्त—अविवाहित बड़ा भाई जिसके छोटे भाई का विवाह हो गया हो
- **परिवित्तिः**—पुं°—-—परि + विद् + क्तिच्—अविवाहित बड़ा भाई जिसके छोटे भाई का विवाह हो गया हो
- **परिविद्धः**—पुं°—-—परि + व्यध् + क्त—कुबेर का विशेषण
- **परिविंदकः**—पुं°—-—परि + विंद् + ण्वुल—विवाहित छोटा भाई जिसका बड़ा भाई अविवाहित हो
- **परिविंदत्**—पुं°—-—परि + विंद् + शतृ—विवाहित छोटा भाई जिसका बड़ा भाई अविवाहित हो
- **परिविहारः**—पुं°—-—परितो विहारः —इधर उधर सैर करना, घूमना, टहलना
- **परिविह्वल**—वि°—-—-—अत्यन्त व्याकुल, क्षुब्ध या घबड़ाया हुआ
- **परिवृढः**—पुं°—-—परि + वृंह् + क्त—स्वामी, प्रभु, मालिक, प्रधान, मुख्य
- **परिवृत**—भू° क° कृ°—-—परि + वृ + क्त—घिरा हुआ, परिवेष्टित, सेवित
- **परिवृत**—भू° क° कृ°—-—परि + वृ + क्त—प्रच्छन्न, गुप्त
- **परिवृत**—भू° क° कृ°—-—परि + वृ + क्त—व्याप्त, फैला हुआ

- **परिवृत**—भू॰ क॰ कृ॰—-—परि + वृ + क्त—ज्ञात
- **परिवृत्त**—भू॰ क॰ कृ॰—-—परि + वृत् + क्त—घुमा हुआ, मोड़ा हुआ अर्धमुखी
- **परिवृत्त**—भू॰ क॰ कृ॰—-—परि + वृत् + क्त—प्रत्यावर्तित पीछे मुड़ा हुआ
- **परिवृत्त**—भू॰ क॰ कृ॰—-—परि + वृत् + क्त—अबला-बदली किया हुआ, विनिमय किया हुआ
- **परिवृत्त**—भू॰ क॰ कृ॰—-—परि + वृत् + क्त—समाप्त किया हुआ, अन्त किया हुआ
- **परिवृत्तम्**—नपुं॰—-—-—आलिंगन
- **परिवृत्तिः**—स्त्री॰—-—परि + वृत् + क्तिन्—क्रांति
- **परिवृत्तिः**—स्त्री॰—-—परि + वृत् + क्तिन्—वापसी, लौटना
- **परिवृत्तिः**—स्त्री॰—-—परि + वृत् + क्तिन्—विनिमय,अदला-बदली
- **परिवृत्तिः**—स्त्री॰—-—परि + वृत् + क्तिन्—अन्त, समाप्ति
- **परिवृत्तिः**—स्त्री॰—-—परि + वृत् + क्तिन्—घेरा
- **परिवृत्तिः**—स्त्री॰—-—परि + वृत् + क्तिन्—किसी स्थान पर टिकना, बसना
- **परिवृत्तिः**—स्त्री॰—-—परि + वृत् + क्तिन्—एक अलंकार जिसमें किसी समान, कम या बड़ी वस्तु से विनिमय हो
- **परिवृत्तिः**—स्त्री॰—-—परि + वृत् + क्तिन्—अर्थ को बिना बदले एक शब्द के स्थान में दूसरा शब्द रखना
- **परिवृद्धिः**—स्त्री॰, पुं॰—-—-—संवर्धन, बढ़ती, उन्नति
- **परिवेत्तृ**—पुं॰—-—-—विवाहित छोटा भाई जिसका बड़ा भाई अविवाहित हो
- **परिवेतदकः**—पुं॰—-—-—विवाहित छोटा भाई जिसका बड़ा भाई अविवाहित हो
- **परिवेदनम्**—नपुं॰—-—परि + विद् + ल्युट्—बड़े भाई के अविवाहित रहते छोटे भाई का विवाह
- **परिवेदनम्**—नपुं॰—-—परि + विद् + ल्युट्—विवाह
- **परिवेदनम्**—नपुं॰—-—परि + विद् + ल्युट्—पूरा या सही ज्ञान
- **परिवेदनम्**—नपुं॰—-—परि + विद् + ल्युट्—उपलब्धि, अधिग्रहण
- **परिवेदनम्**—नपुं॰—-—परि + विद् + ल्युट्—अग्न्याधान
- **परिवेदनम्**—नपुं॰—-—परि + विद् + ल्युट्—सर्वव्याप्ति, विश्वव्यापी या विश्वसत्ता
- **परिवेदना**—स्त्री॰—-—-—समझदारी, बुद्धिमानी
- **परिवेदना**—स्त्री॰—-—-—बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता
- **परिवेदनीया**—स्त्री॰—-—परि + विद् + अनीयर् + टाप्—उस छोटे भाई की पत्नी जिसका बड़ा भाई अविवाहित हो
- **परिवेदिनी**—स्त्री॰—-—परि + विद् + णिनि ङीप्—उस छोटे भाई की पत्नी जिसका बड़ा भाई अविवाहित हो

- **परिवेशः**—पुं°—-—परि + विश् + घञ्—भोजन के समय सेवा करना, भोजन बांटना, भोजन परोसना
- **परिवेशः**—पुं°—-—परि + विश् + घञ्—वृत्त, चक्र, (दीप्ति) मंडल
- **परिवेशः**—पुं°—-—परि + विश् + घञ्—(विशेषतः) सूर्यमंडल या चन्द्रमण्डल
- **परिवेशः**—पुं°—-—परि + विश् + घञ्—वृत्त की परिधि
- **परिवेशः**—पुं°—-—परि + विश् + घञ्—सूर्यबिंब, चन्द्रबिंब
- **परिवेशः**—पुं°—-—परि + विश् + घञ्—कोई वस्तु जो घेरती है या रक्षा करती है
- **परिवेषः**—पुं°—-—परि + विष् + घञ्—भोजन के समय सेवा करना, भोजन बांटना, भोजन परोसना
- **परिवेषः**—पुं°—-—परि + विष् + घञ्—वृत्त, चक्र, (दीप्ति) मंडल
- **परिवेषः**—पुं°—-—परि + विष् + घञ्—(विशेषतः) सूर्यमंडल या चन्द्रमण्डल
- **परिवेषः**—पुं°—-—परि + विष् + घञ्—वृत्त की परिधि
- **परिवेषः**—पुं°—-—परि + विष् + घञ्—सूर्यबिंब, चन्द्रबिंब
- **परिवेषः**—पुं°—-—परि + विष् + घञ्—कोई वस्तु जो घेरती है या रक्षा करती है
- **परीवेशः**—पुं°—-—परि + विश् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—भोजन के समय सेवा करना, भोजन बांटना, भोजन परोसना
- **परीवेशः**—पुं°—-—परि + विश् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—वृत्त, चक्र, (दीप्ति) मंडल
- **परीवेशः**—पुं°—-—परि + विश् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—(विशेषतः) सूर्यमंडल या चन्द्रमण्डल
- **परीवेशः**—पुं°—-—परि + विश् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—वृत्त की परिधि
- **परीवेशः**—पुं°—-—परि + विश् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—सूर्यबिंब, चन्द्रबिंब
- **परीवेशः**—पुं°—-—परि + विश् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—कोई वस्तु जो घेरती है या रक्षा करती है
- **परीवेषः**—पुं°—-—परि + विष् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—भोजन के समय सेवा करना, भोजन बांटना, भोजन परोसना
- **परीवेषः**—पुं°—-—परि + विष् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—वृत्त, चक्र, (दीप्ति) मंडल
- **परीवेषः**—पुं°—-—परि + विष् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—(विशेषतः) सूर्यमंडल या चन्द्रमण्डल
- **परीवेषः**—पुं°—-—परि + विष् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—वृत्त की परिधि
- **परीवेषः**—पुं°—-—परि + विष् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—सूर्यबिंब, चन्द्रबिंब
- **परीवेषः**—पुं°—-—परि + विष् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—कोई वस्तु जो घेरती है या रक्षा करती है
- **परिवेषकः**—पुं°—-—परि + विष् + ण्वुल्—भोजन परोसने वाला
- **परिवेषणम्**—नपुं°—-—परि + विष् + ल्युट्—भोजन परोसना, (सेवा के लिए) प्रस्तुत रहना, भोजन वितरण करना
- **परिवेषणम्**—नपुं°—-—परि + विष् + ल्युट्—लपेटना, घेरना

- **परिवेषणम्**—नपुं०—-—परि + विष् + ल्युट्—सूर्यमंडल, चन्द्रमंडल
- **परिवेषणम्**—नपुं०—-—परि + विष् + ल्युट्—परिधि
- **परिवेष्टनम्**—नपुं०—-—परि + वेष्ट् + ल्युट्—घेरना, लपेटना
- **परिवेष्टनम्**—नपुं०—-—परि + वेष्ट् + ल्युट्—परिधि
- **परिवेष्टनम्**—नपुं०—-—परि + वेष्ट् + ल्युट्—ढक्कन, आवरण
- **परिवेष्ट्ट**—पुं०—-—परि + वेष्ट् + तुच्—भोजन के समय सेवा करने वाला, भोजन परोसने वाला
- **परिव्ययः**—पुं०—-—-—लागत, मूल्य
- **परिव्ययः**—पुं०—-—-—मिर्चमसाला
- **परिव्याधः**—पुं०—-—परि + व्यध् + ण—नरकुल या सरकंडे की एक जाति
- **परिव्रज्या**—स्त्री०—-—परि + व्रज् + क्यप् + टाप्—चहलकदमी करना, जगह जगह घूमते फिरना
- **परिव्रज्या**—स्त्री०—-—परि + व्रज् + क्यप् + टाप्—सन्यासी होना, साधु महात्माओं का जीवन बिताना
- **परिव्रज्या**—स्त्री०—-—परि + व्रज् + क्यप् + टाप्—सांसारिक मोहमाया का त्याग, वैराग्य में अनुराग, धार्मिक साधना
- **परिव्राज्**—पुं०—-—परित्यज्य सर्वान् विषयभोगान् व्रजति परि + व्रज् + क्विप्—भ्रमणशील साधु, अवधूत, तपस्वी, सन्यासी (चौथे आश्रम में) जिसने सांसारिक मायामोह का त्याग कर दिया हो
- **परिव्राजः**—पुं०—-—परित्यज्य सर्वान् विषयभोगान् व्रजति परि + व्रज् + घञ्—भ्रमणशील साधु, अवधूत, तपस्वी, सन्यासी (चौथे आश्रम में) जिसने सांसारिक मायामोह का त्याग कर दिया हो
- **परिव्राजकः**—पुं०—-—परित्यज्य सर्वान् विषयभोगान् व्रजति परि + व्रज् + ण्वुल्—भ्रमणशील साधु, अवधूत, तपस्वी, सन्यासी (चौथे आश्रम में) जिसने सांसारिक मायामोह का त्याग कर दिया हो
- **परिशाश्वत**—वि०—-—-—सदा के लिए उसी रूप में बना रहने वाला
- **परिशिष्ट**—वि०—-—परि + शिष् + क्त—छोड़ा हुआ, बचा हुआ
- **परिशिष्टम्**—नपुं०—-—परि + शिष् + क्त—सम्पूरक, अतिरिक्त
- **परिशीलनम्**—नपुं०—-—परि + शील् + ल्युट्—स्पर्श, सम्पर्क
- **परिशीलनम्**—नपुं०—-—परि + शील् + ल्युट्—अनवरत सम्पर्क, आपसीमेलजोल, पत्र व्यवहार
- **परिशीलनम्**—नपुं०—-—परि + शील् + ल्युट्—अध्ययन, (किसी वस्तु में) आसक्ति, स्थिर या निश्चित वृत्ति
- **परिशुद्धिः**—स्त्री०—-—-—पूर्ण शुद्धि
- **परिशुद्धिः**—स्त्री०—-—-—दोष-शुद्धि, रिहाई
- **परिशुष्क**—भू० क० कृ०—-—परि + शुष् + क्त—पूरी तरह सूखा हुआ, सुखाया हुआ, तपाया हुआ
- **परिशुष्क**—भू० क० कृ०—-—परि + शुष् + क्त— मुर्झाया हुआ, कुम्हलाया हुआ, (गालों की भांति) चिपका हुआ

- **परिशुष्कम्**—नपुं॰—-—-—एक प्रकार का तला हुआ मांस
- **परिशून्य**—वि॰—-—-—बिल्कुल खाली
- **परिशून्य**—वि॰—-—-—सर्वथा स्वतन्त्र, नितान्त शून्य
- **परिशृतः**—पुं॰—-—परि + शृ + क्त—तीक्ष्ण मदिरा
- **परिशेषः**—पुं॰—-—परि + शिष् + घञ्—बचा हुआ, बाकी
- **परिशेषः**—पुं॰—-—परि + शिष् + घञ्—परिशिष्ट
- **परिशेषः**—पुं॰—-—परि + शिष् + घञ्—समाप्ति, उपसंहार, संपूर्ति
- **परीशेषः**—पुं॰—-—परि + शिष् + घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः—बचा हुआ, बाकी
- **परीशेषः**—पुं॰—-—परि + शिष् + घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः—परिशिष्ट
- **परीशेषः**—पुं॰—-—परि + शिष् + घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः—समाप्ति, उपसंहार, संपूर्ति
- **परिशोधः**—पुं॰—-—परि + शुध्—शुद्ध करना, मांजना
- **परिशोधः**—पुं॰—-—परि + शुध्—छुटकारा, भारावतरण, (ऋण आदि का) भुगतान
- **परिशोषः**—पुं॰—-—परि + शुप् + घञ्—बिल्कुल सूख जाना, पूरी तरह भुन जाना
- **परिश्रमः**—पुं॰—-—परि + श्रम् + घञ्—थकान, थक कर चूर २ होना, कष्ट, पीड़ा
- **परिश्रमः**—पुं॰—-—परि + श्रम् + घञ्—चेष्टा, उद्योग, गहन अध्ययन, लगातार व्यस्त रहना
- **परिश्रयः**—पुं॰—-—परि + श्रि + अच्—सम्मिलन, सभा
- **परिश्रयः**—पुं॰—-—परि + श्रि + अच्—शरण, आश्रय
- **परिश्रान्तिः**—स्त्री॰—-—परि + श्रम् + क्तिन्—थकान, ऊब, कष्ट, थक कर चूर चूर होना
- **परिश्रान्तिः**—स्त्री॰—-—परि + श्रम् + क्तिन्—उद्योग, चेष्टा
- **परिश्लेषः**—पुं॰—-—परि + श्लिष् + घञ्—आलिंगन
- **परिषद्**—स्त्री॰—-—परितः सीदन्ति अस्याम् परि + सद् + क्विप्—सभा, सम्मिलन, मन्त्राणासभा, श्रोतृगण
- **परिषद्**—स्त्री॰—-—परितः सीदन्ति अस्याम् परि + सद् + क्विप्—धर्मसभा, मीमांसासभा
- **परिषदः**—पुं॰—-—परितः सीदति- परि + सद् + अच्—किसी सभा का सदस्य या मेंबर
- **परिषद्यः**—पुं॰—-—परितः सीदति- परि + सद् + यत्—किसी सभा का सदस्य या मेंबर
- **परिषेकः**—पुं॰—-—परि + सिच् + घञ्—पानी छिड़कना या उडेलना, गीला या तर करना
- **परिषेचनम्**—नपुं॰—-—परि + सिच् + ल्युट्—पानी छिड़कना या उडेलना, गीला या तर करना
- **परिष्कन्न**—वि॰—-—परि + स्कन्द् + क—दूसरे से पालित

- **परिष्कण्ण**—वि०—-—परि + स्कन्द् + क्त, णत्वं —पोष्यपुत्र, जिसे किसी अपरिचित ने पाला पोसा हो
- **परिष्कन्द**—वि०—-—परि + स्कन्द् + क्त—दूसरे के द्वारा पाला गया
- **परिष्कन्द**—वि०—-—परि + स्कन्द् + घञ्—दूसरे के द्वारा पाला गया
- **परिष्कन्दः**—पुं०—-—परि + स्कन्द् + घञ्—पोष्य पुत्र
- **परिष्कन्दः**—पुं०—-—परि + स्कन्द् + घञ्—भृत्य, सेवक
- **परिष्कन्दः**—पुं०—-—परि + स्कन्द् + घञ्—पोष्य पुत्र
- **परिष्कन्दः**—पुं०—-—परि + स्कन्द् + घञ्—भृत्य, सेवक
- **परिष्कारः**—पुं०—-—परि + कृ + अप्, सुट्, षत्वम्—सजावट, अलंकृत करना
- **परिष्कारः**—पुं०—-—परि + कृ + घञ्, सुट् षत्वम्—सजावट, आभूषण, अलंकरण
- **परिष्कारः**—पुं०—-—परि + कृ + घञ्, सुट् षत्वम्—पाचनक्रिया, खाना पकाना
- **परिष्कारः**—पुं०—-—परि + कृ + घञ्, सुट् षत्वम्—दीक्षा, आरंभिक संस्कारों द्वारा पवित्रीकरण
- **परिष्कारः**—पुं०—-—परि + कृ + घञ्, सुट् षत्वम्—(घर का) सामान
- **परिष्कृत**—भू० क० कृ०—-—परि + कृ + क्त, सुट्, षत्वम्—अलंकृत, सजाया हुआ
- **परिष्कृत**—भू० क० कृ०—-—परि + कृ + क्त, सुट्, षत्वम्—पकाया गया, प्रसाधित किया गया
- **परिष्कृत**—भू० क० कृ०—-—परि + कृ + क्त, सुट्, षत्वम्—आरंभिक संस्कारों द्वारा अभिमन्त्रित
- **परिष्क्रिया**—स्त्री०—-—परि + कृ + श + टाप्, सुट्—अलंकरण, सजावट, शृंगार
- **परिष्टोमः**—पुं०—-—परि + स्तु + मन्, षत्वं —हाथी की रंगीन झूल
- **परिष्टोमः**—पुं०—-—परि + स्तु + मन्, षत्वं —आच्छादन, आवरण
- **परिस्तोमः**—पुं०—-—परि + स्तु + मन्—हाथी की रंगीन झूल
- **परिस्तोमः**—पुं०—-—परि + स्तु + मन्—आच्छादन, आवरण
- **परिष्पन्दः**—पुं०—-—परि + स्पंद् + घञ्—नौकर-चाकर, अनुचर
- **परिष्पन्दः**—पुं०—-—परि + स्पंद् + घञ्—(फूलों से) केश शृंगार
- **परिष्पन्दः**—पुं०—-—परि + स्पंद् + घञ्—शृंगार, सजावट
- **परिष्पन्दः**—पुं०—-—परि + स्पंद् + घञ्—धड़कन, थरथराहट, धकधक, स्पंदन
- **परिष्पन्दः**—पुं०—-—परि + स्पंद् + घञ्—खाद्यसामग्री, संवर्धन
- **परिष्पन्दः**—पुं०—-—परि + स्पंद् + घञ्—कुचलना
- **परिस्पन्दः**—पुं०—-—परि + स्पंद् + घञ्, षत्वं —नौकर-चाकर, अनुचर

- **परिस्पन्दः**—पुं°—-—परि + स्पंद् + घञ्, षत्वं —(फूलों से) केश शृंगार
- **परिस्पन्दः**—पुं°—-—परि + स्पंद् + घञ्, षत्वं —शृंगार, सजावट
- **परिस्पन्दः**—पुं°—-—परि + स्पंद् + घञ्, षत्वं —धड़कन, थरथराहट, धकधक, स्पंदन
- **परिस्पन्दः**—पुं°—-—परि + स्पंद् + घञ्, षत्वं —खाद्यसामग्री, संवर्धन
- **परिस्पन्दः**—पुं°—-—परि + स्पंद् + घञ्, षत्वं —कुचलना
- **परिष्वक्त**—भू° क° कृ°—-—परि + स्वंज् + क्त—परिरब्ध आलिंगित या आलिंगनबद्ध
- **परिष्वङ्गः**—पुं°—-—परि + स्वंज् + घञ्—आलिंगन
- **परिष्वङ्गः**—पुं°—-—परि + स्वंज् + घञ्—स्पर्श, सम्पर्क, मेल-मिलाप
- **परिसंवत्सर**—वि°—-—ऊर्ध्व संवत्सरात्- अव्य° स°—पूरा एक वर्ष का
- **परिसंवत्सरः**—पुं°—-—ऊर्ध्व संवत्सरात्- अव्य° स°—पूरा वर्ष
- **परिसंवत्सरात्**—पुं°—-—ऊर्ध्व संवत्सरात्- अव्य° स°—पूरे एक वर्ष से ऊपर
- **परिसंख्या**—स्त्री°—-—परि + सम् + ख्या + अङ + टाप्—गिनती, संगणना
- **परिसंख्या**—स्त्री°—-—परि + सम् + ख्या + अङ + टाप्—योगफल, जोड़, पूर्ण संख्या
- **परिसंख्या**—स्त्री°—-—परि + सम् + ख्या + अङ + टाप्—अपाकरण, विशेष विवरण
- **परिसंख्या**—स्त्री°—-—परि + सम् + ख्या + अङ + टाप्—विशेष उल्लेख या एकान्तिक विशेष विवरण
- **परिसंख्यात**—भू° क° कृ°—-—परि + सम् + ख्या + अङ +क्त—गिना हुआ, हिसाब लगाया हुआ
- **परिसंख्यात**—भू° क° कृ°—-—परि + सम् + ख्या + अङ +क्त—एकान्तिकरूप से विशिष्ट या निर्दिष्ट
- **परिसंख्यानम्**—नपुं°—-—परि + संख्या + ल्युट्—गिनती, जोड़, पूर्णसंख्या
- **परिसंख्यानम्**—नपुं°—-—परि + संख्या + ल्युट्—एकान्तिक विशेष निर्देश
- **परिसंख्यानम्**—नपुं°—-—परि + संख्या + ल्युट्—सही अनुमान, ठीक अंदाजा
- **परिसञ्चरः**—पुं°—-—परि + सम् + चर् + अच्—विश्वप्रलय का समय
- **परिसमापन**—स्त्री°—-—परि + सम् + आप् + ल्युट्—समाप्त करना, पूरा करना
- **परिसमाप्तिः**—स्त्री°—-—परि + सम् + आप् + क्तिन्—समाप्त करना, पूरा करना
- **परिसमूहनम्**—नपुं°—-—परि + सम् + ऊह् + ल्युट्—एकत्र करना, ढेर लगाना
- **परिसमूहनम्**—नपुं°—-—परि + सम् + ऊह् + ल्युट्—यज्ञाग्नि के चारों ओर (विशेष रीति से) जल छिड़कना
- **परिसरः**—पुं°—-—परि + सृ + घ—तट, किनारा, सामीप्य, आसपास, पड़ौस, पर्यावरण (किसी नदी, पहाड़ या नगर का)
- **परिसरः**—पुं°—-—परि + सृ + घ—स्थिति, स्थान

- **परिसरः**—पुं°—-—परि + सृ + घ—चौड़ाई, अर्ज
- **परिसरः**—पुं°—-—परि + सृ + घ—मृत्यु
- **परिसरः**—पुं°—-—परि + सृ + घ—नियम, विधि
- **परिसरणम्**—नपुं°—-—परि + सृ + ल्युट्—इधर-उधर दौड़ना
- **परिसर्पः**—पुं°—-—परि + सृप् + घञ्—इधर-उधर घूमना
- **परिसर्पः**—पुं°—-—परि + सृप् + घञ्—खोज में निकलना, पीछा करना, अनुसरण करना
- **परिसर्पः**—पुं°—-—परि + सृप् + घञ्—घेरना, मण्डलाकार करना
- **परिसर्पणम्**—नपुं°—-—परि + सृप् + ल्युट्—चलना, रेंगना
- **परिसर्पणम्**—नपुं°—-—परि + सृप् + ल्युट्—इधर-उधर दौड़ना, उड़ना, भागना
- **परिसर्या**—स्त्री°—-—परि + सृ + श + यक् + टाप्—इधर उधर घूमना फिरना, प्रदक्षिणा, फेरी
- **परीसर्या**—स्त्री°—-—परि + सृ + श + यक् + टाप् पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—इधर उधर घूमना फिरना, प्रदक्षिणा, फेरी
- **परिसारः**—पुं°—-—परि + सृ + श + यक् + घञ्—इधर उधर घूमना फिरना, प्रदक्षिणा, फेरी
- **परीसारः**—पुं°—-—परि + सृ + श + यक् + टाप् पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—इधर उधर घूमना फिरना, प्रदक्षिणा, फेरी
- **परिस्तरणम्**—नपुं°—-—परि + स्तृ + ल्युट्—बिछाना, फैलाना, इधर उधर बखेरना
- **परिस्तरणम्**—नपुं°—-—परि + स्तृ + ल्युट्—आवरण, ढक्कन
- **परिस्फुट**—वि°, पुं°—-—-—सर्वथा समतल, व्यक्त, स्पष्टगोचर
- **परिस्फुट**—वि°, पुं°—-—-—पूर्णविकसित, फूला हुआ, बढ़ा हुआ
- **परिस्फुरणम्**—नपुं°—-—परि + स्फुर् + ल्युट्—कंपकंपी, थरथरी
- **परिस्फुरणम्**—नपुं°—-—परि + स्फुर् + ल्युट्—कली का खिलना
- **परिस्यंदः**—पुं°—-—परि + स्यन्द् + घञ्—रसना, बूंद २ टपकना, चूना
- **परिस्यंदः**—पुं°—-—परि + स्यन्द् + घञ्—बहाव, धारा
- **परिस्यंदः**—पुं°—-—परि + स्यन्द् + घञ्—अनुचरवर्ग
- **परिस्रवः**—पुं°—-—परि + स्रु + अप्—बहना, बहाव
- **परिस्रवः**—पुं°—-—परि + स्रु + अप्—नीचे सरकना
- **परिस्रवः**—पुं°—-—परि + स्रु + अप्—नदी, निर्झर
- **परिस्रावः**—पुं°—-—परि + स्रु + णिच् + अच्—निकास, निस्राव
- **परिस्रुत्**—पुं°—-—परि + स्रु + क्विप् + तुक्—एक प्रकार की नशीली शराब

- **परिस्रुत्**—पुं°—-—परि + स्रु + क्विप् + तुक्—रिसना, टपकना, बहना
- **परिहत**—वि°—-—परि + हन् + क्त—ढीला किया हुआ
- **परिहरणम्**—नपुं°—-—परि + हृ + ल्युट्—छोड़ना, तजना, तिलांजलि देना
- **परिहरणम्**—नपुं°—-—परि + हृ + ल्युट्—टालना, कतराना
- **परिहरणम्**—नपुं°—-—परि + हृ + ल्युट्—निराकरण करना
- **परिहरणम्**—नपुं°—-—परि + हृ + ल्युट्—पकड़ना, ले जाना
- **परिहारः**—पुं°—-—परि + हृ + घञ्—छोड़ना, तजना, तिलांजलि देना, त्याग देना
- **परिहारः**—पुं°—-—परि + हृ + घञ्—हटाना, दूर करना
- **परिहारः**—पुं°—-—परि + हृ + घञ्—निराकरण करना, निवारण करना
- **परिहारः**—पुं°—-—परि + हृ + घञ्—उल्लेख न करना, भूल, चूक
- **परिहारः**—पुं°—-—परि + हृ + घञ्—आरक्षण, गुप्त रखना
- **परिहारः**—पुं°—-—परि + हृ + घञ्—गाँव या नगर के चारों ओर सामान्य भूखण्ड
- **परिहारः**—पुं°—-—परि + हृ + घञ्—विशेष अनुदान, छूट, विशेषाधिकार, शुक्ल से माफ़ी या छुटकारा
- **परिहारः**—पुं°—-—परि + हृ + घञ्—तिरस्कार, अनादर
- **परिहारः**—पुं°—-—परि + हृ + घञ्—आपत्ति
- **परीहारः**—पुं°—-—परि + हृ + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—छोड़ना, तजना, तिलांजलि देना, त्याग देना
- **परीहारः**—पुं°—-—परि + हृ + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—हटाना, दूर करना
- **परीहारः**—पुं°—-—परि + हृ + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—निराकरण करना, निवारण करना
- **परीहारः**—पुं°—-—परि + हृ + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—उल्लेख न करना, भूल, चूक
- **परीहारः**—पुं°—-—परि + हृ + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—आरक्षण, गुप्त रखना
- **परीहारः**—पुं°—-—परि + हृ + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—गाँव या नगर के चारों ओर सामान्य भूखण्ड
- **परीहारः**—पुं°—-—परि + हृ + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—विशेष अनुदान, छूट, विशेषाधिकार, शुक्ल से माफ़ी या छुटकारा
- **परीहारः**—पुं°—-—परि + हृ + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—तिरस्कार, अनादर
- **परीहारः**—पुं°—-—परि + हृ + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः—आपत्ति
- **परिहाणिः**—स्त्री°, पुं°—-—-—घटी, कमी, नुक़सान
- **परिहाणिः**—स्त्री°, पुं°—-—-—मुर्झाना, क्षीण होना
- **परिहानिः**—स्त्री°, पुं°—-—-—घटी, कमी, नुक़सान

- **परिहानिः**—स्त्री°, पुं°———–—मुर्झाना, क्षीण होना
- **परिहार्य**—वि°——–—परि + हृ + घञ्—कतराये जाने के योग्य, टाले जाने के योग्य, जिससे बचा जाय, जिसे ले जाया जाय या दूर किया जा
- **परिहार्यः**—पुं°——–—परि + हृ + घञ्—कंकण
- **परिहासः**—पुं°——–—परि + हस् + घञ्—मख़ौल, मज़ाक, हँसी, ठट्ठा
- **परिहासः**—पुं°——–—परि + हस् + घञ्—हँसी उड़ाना, उपहास करना
- **परीहासः**—पुं°——–—परि + हस् + घञ्, दीर्घः—मख़ौल, मज़ाक, हँसी, ठट्ठा
- **परीहासः**—पुं°——–—परि + हस् + घञ्, दीर्घः—हँसी उड़ाना, उपहास करना
- **परिहृत**—भू° क° कृ°——–—परि + हृ + क्त—कतराया हुआ टाला हुआ
- **परिहृत**—भू° क° कृ°——–—परि + हृ + क्त—छोड़ा हुआ, परित्यक्त
- **परिहृत**—भू° क° कृ°——–—परि + हृ + क्त—निराकृत, अपास्त
- **परिहृत**—भू° क° कृ°——–—परि + हृ + क्त—लिया हुआ, पकड़ा हुआ
- **परीक्षकः**—पुं°——–—परि + ईक्ष् + ण्वुल्—परीक्षा लेने वाला, जाँच करने वाला, न्याय करने वाला
- **परीक्षणम्**—नपुं°——–—परि + ईक्ष् + ल्युट्—जाँच पड़ताल करना, परखना, इम्तहान लेना
- **परीक्षा**—स्त्री°——–—परि + ईक्ष् + अ + टाप्—इम्तहान, जाँच, परख
- **परीक्षा**—स्त्री°——–—परि + ईक्ष् + अ + टाप्—जाँच-पड़ताल के विविध प्रकार
- **परीक्षित्**—पुं°——–—परि + क्षि + क्विप्, तुक्, उपसर्गस्य दीर्घः—अर्जुन का पौत्र, अभिमन्यु का पुत
- **परीक्षित**—भू° क° कृ°——–—परि + ईक्ष् + क्त—परखा किया, जाँच पड़ताल की गई
- **परीत**—भू° क° कृ°——–—परि + इ + क्त—घिरा हुआ, पर्यावृत
- **परीत**—भू° क° कृ°——–—परि + इ + क्त—समाप्त हुआ, बीता हुआ
- **परीत**—भू° क° कृ°——–—परि + इ + क्त—विगत, व्यतीत
- **परीत**—भू° क° कृ°——–—परि + इ + क्त—पकड़ा हुआ, अधिकार में किया हुआ, भरा हुआ
- **परीताप**—पुं°———–—अत्यंत या झुलसा देने वाली गर्मी,पीड़ा, वेदना, व्यथा, शोक,विलाप, मातम, शोक,कांपना, भय
- **परीपाक**—पुं°———–—पूरी तरह से पकाया जाना या संवारा जाना,पचना,पकजाना, परिपक्वन, विकास, पूर्णता,फल, नतीजा, परिणाम
- **परीवार**—पुं°———–—नौकर-चाकर, अनुचर वर्ग, टहलुए, अनुयायी,ढक्कन, चादर,म्यान, कोष
- **परीवाह**—पुं°———–—तालाब का
- **परीहास**—पुं°———–—मख़ौल, मज़ाक, हँसी, ठट्ठा,हँसी उड़ाना, उपहास करना,
- **परीप्सा**—स्त्री°——–—परि + आप् + सन् + अ + टाप्—प्राप्त करने की इच्छा

- **परीप्सा**—स्त्री॰—-—परि + आप् + सन् + अ + टाप्—जल्दी, शीघ्रता
- **परीरम्**—नपुं॰—-—पृ + ईरन्—एक फल
- **परीरणम्**—नपुं॰—-—परि + ईर् + ल्युट्—कछुवा
- **परीरणम्**—नपुं॰—-—परि + ईर् + ल्युट्—छड़ी
- **परीरणम्**—नपुं॰—-—परि + ईर् + ल्युट्—पोशाक, वेशभूषा
- **परीष्टिः**—स्त्री॰—-—परि + इष् + क्तिन्—अनुसंधान, पूछताछ, गवेषणा
- **परीष्टिः**—स्त्री॰—-—परि + इष् + क्तिन्—सेवा, परिचर्या
- **परीष्टिः**—स्त्री॰—-—परि + इष् + क्तिन्—आदर, पूजा, श्रद्धांजलि
- **परुः**—पुं॰—-—पृ + उ—जोड़, गाँठ
- **परुः**—पुं॰—-—पृ + उ—अवयव, अंग
- **परुः**—पुं॰—-—पृ + उ—समुद्र
- **परुः**—पुं॰—-—पृ + उ—स्वर्ग, बैकुण्ठ
- **परुः**—पुं॰—-—पृ + उ—पहाड़
- **परुत्**—अव्य॰—-—पूर्वास्मिन् वत्सरे- इति पूर्वस्य परभावः उत् च—गत वर्ष, पिछला साल
- **परुद्वारः**—पुं॰—-—-—घोड़ा
- **परुष**—वि॰—-—पृ + उषन्—कठोर, रूखा, सख्त, कड़ा
- **परुष**—वि॰—-—पृ + उषन्—(शब्द आदि) कटु, अपभाषित, निष्ठुर, निष्करुण, क्रूर, निर्मम (वाक्)
- **परुष**—वि॰—-—पृ + उषन्—(शब्द) कर्णकटु, अरुचिकर
- **परुष**—वि॰—-—पृ + उषन्—रूखा, स्थूल, खुरदरा, (बाल) मैला-कुचैला
- **परुष**—वि॰—-—पृ + उषन्—तीक्ष्ण, प्रचण्ड, मजबूत, उत्सुक, (वायु आदि) वेधक
- **परुष**—वि॰—-—पृ + उषन्—ठोस, गाढ़ा
- **परुष**—वि॰—-—पृ + उषन्—मलिन, मैला
- **परुषम्**—नपुं॰—-—-—कठोर या दुर्वचनयुक्त भाषण, अपभाषण
- **परुषेतर**—वि॰—परुष-इतर—-—जो रूखा न हो, कोमल, मृदु
- **परुषोक्तिः**—स्त्री॰—परुष-उक्तिः—-—अपभाषित
- **परुषवचनम्**—नपुं॰—परुष-वचनम्—-—अपभाषित
- **परुस्**—नपुं॰—-—पृ + उस्—सन्धि, ग्रन्थि, जोड़, गाँठ

- **परुस्**—नपुं°——–पृ + उस्—अवयव, शरीर का अंग
- **परेत**—भू° क° कृ°——–पर + इ + त—दिवंगत, मृत्युप्राप्त, मृत
- **परेतः**—पुं°——–पर + इ + त—प्रेत
- **परेतभर्तृ**—पुं°—परेत-भर्तृ——–मृत्यु का देवता, यमराज
- **परेतराज्**—पुं°—परेत-राज्——–मृत्यु का देवता, यमराज
- **परेतभूमिः**—स्त्री°—परेत-भूमिः——–कब्रिस्तान
- **परेतवासः**—पुं°—परेत-वासः——–कब्रिस्तान
- **परेद्यवि**—अव्य°——–परस्मिन् अहनि, नि° साधु°—दूसरे दिन, और दिन
- **परेद्युः**—अव्य°——–परस्मिन् अहनि, नि° साधु°—दूसरे दिन, और दिन
- **परेष्टुः**—स्त्री°——–पर + इस + तु—वह गाय जो कई बार ब्या चुकी हो
- **परेष्टुका**—स्त्री°——–परेष्टु + कन् + टाप्—वह गाय जो कई बार ब्या चुकी हो
- **परोक्ष**—वि°——–अक्ष्णः परम- अ° स°—दृष्टिपरास से परे, या बाहर, जो दिखाई न दे, अगोचर
- **परोक्ष**—वि°——–अक्ष्णः परम- अ° स°—अनुपस्थित
- **परोक्ष**—वि°——–अक्ष्णः परम- अ° स°—गुप्त, अज्ञात, अपरिचित
- **परोक्षः**—पुं°————–सन्यासी
- **परोक्षम्**—नपुं°————–अनुपस्थिति अगोचरता
- **परोक्षम्**—नपुं°————–भूतकाल (जो वक्ता ने न देखा हो)
- **परोक्षभोगः**—पुं°—परोक्ष-भोगः——–स्वामी की अनुपस्थिति में किसी वस्तु का उपभोग
- **परोक्षवृत्ति**—वि°—परोक्ष-वृत्ति——–आँखो से दूर रहने वाला
- **परोक्षवृत्तिः**—स्त्री°—परोक्ष-वृत्तिः——–अदृष्ट और अज्ञात जीवन
- **परोष्टिः**—स्त्री°——–पर + उष् + क्तिन्—तेलचट्टा (झींगर के आकार काले रंग का एक कीड़ा)
- **परोष्णी**—स्त्री°——–पर + उष् + क्तिन्,परः शत्रुः उष्णो यस्याः ब° स°—तेलचट्टा (झींगर के आकार काले रंग का एक कीड़ा)
- **पर्जन्यः**—पुं°——–पृष् + शन्य, नि° षकारस्य जकारः—बरसने वाला मेघ, गरजने वाला बादल, बादल या मेघ
- **पर्जन्यः**—पुं°——–पृष् + शन्य, नि° षकारस्य जकारः—बारिश
- **पर्जन्यः**—पुं°——–पृष् + शन्य, नि° षकारस्य जकारः—वृष्टि का देवता अर्थात् इन्द्र
- **पर्ण्**—चुरा° उभ° <पर्णयति>, <पर्णयते>————–हराभरा करना
- **पर्णम्**—नपुं°——–पर्ण् + अच्—पंख, बाजू

- **पर्णम्**—नपुं॰—-—पर्ण् + अच्—बाण का पंख
- **पर्णम्**—नपुं॰—-—पर्ण् + अच्—पत्ता
- **पर्णम्**—नपुं॰—-—पर्ण् + अच्—पान का पत्ता
- **पर्णः**—पुं॰—-—-—ढाक का पेड़
- **पर्णाशनम्**—नपुं॰—पर्णम्-अशनम्—-—पत्ते खाकर जीना
- **पर्णाशनः**—पुं॰—पर्णम्-अशनः—-—बादल
- **पर्णासिः**—पुं॰—पर्णम्-असिः—-—काली तुलसी
- **पर्णाहार**—वि॰—पर्णम्-आहार—-—पत्ते खाकर निर्वाह करने वाला
- **पर्णोटजम्**—नपुं॰—पर्णम्-उटजम्—-—पत्तों की कुटिया, साधुओं की झोपड़ी, आश्रम
- **पर्णकारः**—पुं॰—पर्णम्-कारः—-—पनवाड़ी, तमोली, पान बेचने वाला
- **पर्णकुटिका**—स्त्री॰—पर्णम्-कुटिका—-—पत्तों की बनी कुटिया
- **पर्णकृच्छ्रः**—पुं॰—पर्णम्-कृच्छ्रः—-—प्रायश्चित्त संबंधी साधना जिसमें प्रायश्चित्तकार को पाँच दिन तक पत्ते और कुशाओं का का काढ़ा पीकर रहना पड़ता है
- **पर्णखंडः**—पुं॰—पर्णम्-खंडः—-—फूलपत्तों के बिना वृक्ष
- **पर्णखंडम्**—नपुं॰—पर्णम्-खंडम्—-—पत्तों का ढेर
- **पर्णचीरपटः**—पुं॰—पर्णम्-चीरपटः—-—शिव का विशेषण
- **पर्णचोरकः**—पुं॰—पर्णम्-चोरकः—-—एक प्रकार का सुगंध द्रव्य
- **पर्णनरः**—पुं॰—पर्णम्-नरः—-—पत्तों से बनाया गया पुतला जो अप्राप्त शव की जगह रखकर जलाया जाता है
- **पर्णमेदिनी**—स्त्री॰—पर्णम्-मेदिनी—-—प्रियंगुलता
- **पर्णभोजनः**—पुं॰—पर्णम्-भोजनः—-—बकरी
- **पर्णमुच**—पुं॰—पर्णम्-मुच्—-—जाड़े की मौसम, शिर्शिर ऋतु
- **पर्णमृगः**—पुं॰—पर्णम्-मृगः—-—वृक्षों की शाखाओं पर रहने वाला जंगली जानवर
- **पर्णरुह्**—पुं॰—पर्णम्-रुह्—-—वसंत ऋतु
- **पर्णलता**—स्त्री॰—पर्णम्-लता—-—पान की बेल
- **पर्णवीटिका**—स्त्री॰—पर्णम्-वीटिका—-—पान का बीड़ा
- **पर्णशय्या**—स्त्री॰—पर्णम्-शय्या—-—पत्तों की सेज
- **पर्णशाला**—स्त्री॰—पर्णम्-शाला—-—पत्तों की बनी कुटिया, साधुओं का

- **पर्णल**—वि०—-—पर्ण + लच्—पत्तों से भरा हुआ, पत्तों वाला
- **पर्णसिः**—पुं०—-—पृ+असि,णुक्—पानी के मध्य खड़ा भवन, ग्रीष्म भवन
- **पर्णसिः**—पुं०—-—पृ+असि,णुक्—कमल
- **पर्णसिः**—पुं०—-—पृ+असि,णुक्—शाक सब्जी
- **पर्णसिः**—पुं०—-—पृ+असि,णुक्—सजावट, प्रसाधन, शृंगार
- **पर्णिन्**—पुं०—-—पर्ण + इनि—वृक्ष
- **पर्णिल**—वि०—-—पर्ण + इलच्—पत्तों से भरा हुआ, पत्तों वाला
- **पर्द्**—भ्वा० आ० <पर्दते>—-—-—पाद मारना, अपानवायु छोड़ना
- **पर्दः**—पुं०—-—पर्द + अच्—केश समूह, घना बाल
- **पर्दः**—पुं०—-—पर्द + अच्—पाद, अपान वायु
- **पर्पः**—पुं०—-—पृ + प—नया उगा घास
- **पर्पः**—पुं०—-—पृ + प—पंगु-पीठ, पंगुगाड़ी
- **पर्पः**—पुं०—-—पृ + प—घर
- **पर्परीकः**—पुं०—-—पृ + ईकन्—सूर्य
- **पर्परीकः**—पुं०—-—पृ + ईकन्—आग
- **पर्परीकः**—पुं०—-—पृ + ईकन्—जलाशय, तालाब
- **पर्यक्**—अव्य० —-—परि + अंच् + क्विप्—चारों ओर, सब दिशाओं में
- **पर्यकः**—पुं०—-—परिगतः अङ्कम्-अत्या० स०—खाट, पलंग, सोफा
- **पर्यकः**—पुं०—-—परिगतः अङ्कम्-अत्या० स०—अरूमाली
- **पर्यकः**—पुं०—-—परिगतः अङ्कम्-अत्या० स०—समाधि-अवस्था में योगी के बैठने की विशेष अंगस्थिति- योगासन
- **पर्यकः**—पुं०—-—परिगतः अङ्कम्-अत्या० स०—वीरासन
- **पर्यकबन्धः**—पुं०—पर्यकः-बन्धः—-—जांघ के सहारे बैठने की स्थिति
- **पर्यकभोगिन्**—पुं०—पर्यकः-भोगिन्—-—एक प्रकार का साँप
- **पर्यटनम्**—नपुं०—-—परि + अट् + ल्युट्—घूमना, इधर उधर भ्रमण करना, यात्रा करना
- **पर्यटितम्**—नपुं०—-—परि + अट् + क्त—घूमना, इधर उधर भ्रमण करना, यात्रा करना
- **पर्यनुयोगः**—पुं०—-—परि + अनु + युज् + घञ्—किसी उक्ति का खंडन करने के उद्देश्य से पूछताछ
- **पर्यत**—वि०—-—-—से सीमा बद्ध, तक फैला हुआ

- **पर्यंतः**—वि०—-—-—आवर्त, परिधि
- **पर्यंतः**—वि०—-—-—गोट, किनारा, मगजी, चरमसीमा, हद
- **पर्यंतः**—वि०—-—-—पार्श्व, कक्ष
- **पर्यंतः**—वि०—-—-—अन्त, उपसंहार, समाप्ति
- **पर्यंतदेशः**—पुं०—पर्यंतः-देशः—-—मिला हुआ या जुड़ा हुआ प्रदेश
- **पर्यंतभूः**—स्त्री०—पर्यंतः-भूः—-—मिला हुआ या जुड़ा हुआ प्रदेश
- **पर्यंतभूमिः**—स्त्री०—पर्यंतः-भूमिः—-—मिला हुआ या जुड़ा हुआ प्रदेश
- **पर्यंतपर्वतः**—पुं०—पर्यंतः-पर्वतः—-—संलग्न पहाड़
- **पर्यंतिका**—स्त्री०—-—-—अच्छे गुणों की हानि, भ्रष्टाचार, नैतिक पतन
- **पर्यय**—पुं०—-—परि + इ + अच्—क्रान्ति, पतन, निःश्वास
- **पर्यय**—पुं०—-—परि + इ + अच्—(समय की) बर्बादी, या खोना
- **पर्यय**—पुं०—-—परि + इ + अच्—परिवर्तन, अदल-बदल
- **पर्यय**—पुं०—-—परि + इ + अच्—उलट-पुलट, अव्यवस्था, अनियमितता
- **पर्यय**—पुं०—-—परि + इ + अच्—शास्त्रीय मर्यादा का अतिक्रमण, कर्तव्य की अवहेलना
- **पर्यय**—पुं०—-—परि + इ + अच्—विरोध
- **पर्ययणम्**—नपुं०—-—परि + अय् + ल्युट्—चारों ओर घूमना, प्रदक्षिणा
- **पर्ययणम्**—नपुं०—-—परि + अय् + ल्युट्—घोड़े की जीन
- **पर्यवदात**—वि०—-—-—पूरी तरह शुद्ध पवित्र
- **पर्यवरोधः**—पुं०—-—-—बाधा, विघ्न
- **पर्यवसित**—भू० क० कृ०—-—परि + अव + सो + क्त—समाप्त किया गया, अन्त तक किया हुआ, पूरा किया हुआ
- **पर्यवसित**—भू० क० कृ०—-—परि + अव + सो + क्त—नष्ट, लुप्त
- **पर्यवसित**—भू० क० कृ०—-—परि + अव + सो + क्त—निर्धारित
- **पर्यवस्था**—स्त्री०—-—परि + अव + स्था + अङ् + टाप्—विरोध, मुकाबला, बाधा
- **पर्यवस्था**—स्त्री०—-—परि + अव + स्था + अङ् + टाप्—वैपरीत्य
- **पर्यवस्थानम्**—नपुं०—-—परि + अव + स्था + अङ् + ल्युट्—विरोध, मुकाबला, बाधा
- **पर्यवस्थानम्**—नपुं०—-—परि + अव + स्था + अङ् + ल्युट्—वैपरीत्य
- **पर्यश्रु**—वि०—-—प्रा० ब० स०—आँसुओं से भरा हुआ,अश्रुपरिप्लावित, आँसू बहाने वाला, अश्रुयुक्त

- **पर्यसनम्**—नपुं°—–—परि + अस् + ल्युट्—फेंकना, इधर उधर डालना
- **पर्यसनम्**—नपुं°—–—परि + अस् + ल्युट्—भेजना, धकेलना
- **पर्यसनम्**—नपुं°—–—परि + अस् + ल्युट्—भेज देना
- **पर्यसनम्**—नपुं°—–—परि + अस् + ल्युट्—स्थगित करना
- **पर्यस्त**—भू° क° कृ°—–—परि + अस् + क्त—इधर उधर फेंका गया, बखेरा गया
- **पर्यस्त**—भू° क° कृ°—–—परि + अस् + क्त—घेरा हुआ, मण्डलाकृतः
- **पर्यस्त**—भू° क° कृ°—–—परि + अस् + क्त—उलटाया गया, उथला हुआ
- **पर्यस्त**—भू° क° कृ°—–—परि + अस् + क्त—पदच्युत, एक ओर रक्खा हुआ
- **पर्यस्त**—भू° क° कृ°—–—परि + अस् + क्त—प्रहार किया हुआ, चोट पहुँचाया हुआ, मारा हुआ
- **पर्यस्तिः**—स्त्री°—–—परि + अस् + क्तिन्—वीरासन, पलंग
- **पर्यस्तिका**—स्त्री°—–—परि + अस् + टाप्—वीरासन, पलंग
- **पर्याकुल**—वि°, पुं°—–—–—मैला, गंदा (पानी आदि)
- **पर्याकुल**—वि°, पुं°—–—–—अव्यवस्थित, उद्विग्न, भयभीत
- **पर्याकुल**—वि°, पुं°—–—–—क्रमहीन, अव्यवस्थित, उथल-पुथल
- **पर्याकुल**—वि°, पुं°—–—–—उत्तेजित, क्षुब्ध, घबराया हुआ
- **पर्याकुल**—वि°, पुं°—–—–—भरा हुआ, पूरा
- **पर्याणम्**—नपुं°—–—परि + या + ल्युट्, पृषो°—जीन, काठी
- **पर्याप्त**—भू° क° कृ°—–—परि + अप् + क्त—प्राप्त किया हुआ, हासिल किया हुआ, उपलब्ध
- **पर्याप्त**—भू° क° कृ°—–—परि + अप् + क्त—समाप्त किया हुआ, पूरा किया हुआ
- **पर्याप्त**—भू° क° कृ°—–—परि + अप् + क्त—भरा हुआ, पूर्ण, समस्त, सारा, समग्र
- **पर्याप्त**—भू° क° कृ°—–—परि + अप् + क्त—योग्य, सक्षम, यथेष्ट
- **पर्याप्त**—भू° क° कृ°—–—परि + अप् + क्त—काफी, यथोचित
- **पर्याप्तम्**—नपुं°—–—–—स्वेच्छापूर्वक, तत्परता के साथ
- **पर्याप्तम्**—नपुं°—–—–—ससन्तोष, काफी, यथेष्ट रूप से
- **पर्याप्तम्**—नपुं°—–—–—पूरी तरह से, योग्यतापूर्वक, सक्षमता के साथ
- **पर्याप्तिः**—स्त्री°—–—परि + आप् + क्तिन्—प्राप्त करना, अधिग्रहण
- **पर्याप्तिः**—स्त्री°—–—परि + आप् + क्तिन्—अन्त, उपसंहार, समाप्ति

- **पर्याप्तिः**—स्त्री°—-—परि + आप् + क्तिन्—काफी, पूर्णता, यथेष्टता
- **पर्याप्तिः**—स्त्री°—-—परि + आप् + क्तिन्—तृप्ति, संतोष
- **पर्याप्तिः**—स्त्री°—-—परि + आप् + क्तिन्—साधारण, प्रहार को रोकना
- **पर्याप्तिः**—स्त्री°—-—परि + आप् + क्तिन्—उपयुक्तता, सक्षमता
- **पर्यायः**—पुं°—-—परि + इ + घञ्—चक्कर लगाना, क्रान्ति
- **पर्यायः**—पुं°—-—परि + इ + घञ्—(समय की) समाप्ति, व्यतीत होना, बीतना
- **पर्यायः**—पुं°—-—परि + इ + घञ्—नियमित परावर्तन, या आवृत्ति
- **पर्यायः**—पुं°—-—परि + इ + घञ्—बारी, उत्तराधिकार, उचित या नियमित क्रम
- **पर्यायः**—पुं°—-—परि + इ + घञ्—प्रणाली व्यवस्था
- **पर्यायः**—पुं°—-—परि + इ + घञ्—तरीका, रीति, प्रक्रिया की प्रणाली
- **पर्यायः**—पुं°—-—परि + इ + घञ्—समानार्थक, पर्यायवाची
- **पर्यायः**—पुं°—-—परि + इ + घञ्—सृष्टि, निर्माण, तैयारी, रचना
- **पर्यायः**—पुं°—-—परि + इ + घञ्—धर्म, गुण
- **पर्यायः**—पुं°—-—परि + इ + घञ्—एक अलंकार
- **पर्यायेण**—क्रि°वि°—-—-—बारी बारी से, उत्तरोत्तर, नंबरवार, नियमित क्रम से
- **पर्यायेण**—क्रि°वि°—-—-—यथावसर, कभी कभी
- **पर्यायोक्तम्**—नपुं°—पर्यायः-उक्तम्—-—एक अलंकार, घुमाफिरा कर कहना, वक्रोक्ति या वाक्प्रपंच से कहने की रीति
- **पर्यायच्युत**—वि°—पर्यायः-च्युत—-—गुप्त रूप से उखाड़ा हुआ, जिसका स्थान छलपूर्वक ले लिया गया है
- **पर्यायवचनम्**—नपुं°—पर्यायः-वचनम्—-—समानार्थक
- **पर्यायशब्दः**—पुं°—पर्यायः-शब्दः—-—समानार्थक
- **पर्यायशयनम्**—नपुं°—पर्यायः-शयनम्—-—बारी २ सोना और चौकसी रखना
- **पर्याली**—अव्य°—-—परि + आ + अल् + ई—हानि या क्षति को (हिंसन) अभिव्यक्त करने वाला अव्यय जो प्रायः कृ, भू या अस् से पूर्व लगाया जाता है
- **पर्यालोचनम्**—नपुं°—-—परि + आ + लोच् + ल्युट्—सावधानता, समीक्षा, विचार, परिपक्व विमर्श
- **पर्यालोचनम्**—नपुं°—-—परि + आ + लोच् + ल्युट्—जानना, पहचानना
- **पर्यालोचना**—स्त्री°—-—परि + आ + लोच् + ल्युट्—जानना, पहचानना
- **पर्यावर्तः**—पुं°—-—परि + आ + वृत् + घञ्—वापिस आना, प्रत्यागमन
- **पर्यावर्तनम्**—नपुं°—-—परि + आ + वृत् + ल्युट्—वापिस आना, प्रत्यागमन

- **पर्याविल**—वि°—–——–बड़ा गदला, मैला, मिट्टी में भरा हुआ
- **पर्यासः**—पुं°——–परि + अस् + घञ्—अन्त, उपसंहार, समाप्ति
- **पर्यासः**—पुं°——–परि + अस् + घञ्—परावर्तन, क्रान्ति
- **पर्यासः**—पुं°——–परि + अस् + घञ्—उलटा क्रम या स्थिति
- **पर्याहारः**—पुं°—–—परि + आ + हृ + घञ्—बोझा घोने के लिए कंधों पर रक्खा गया जूआ
- **पर्याहारः**—पुं°—–—परि + आ + हृ + घञ्—ले जाना
- **पर्याहारः**—पुं°—–—परि + आ + हृ + घञ्—बोझा, भार
- **पर्याहारः**—पुं°—–—परि + आ + हृ + घञ्—धड़ा
- **पर्याहारः**—पुं°—–—परि + आ + हृ + घञ्—अनाज को भंडार में रखना
- **पर्युक्षणम्**—नपुं°—–—परि + उक्ष् + ल्युट्—बिना किसी मन्त्रोच्चारण के चारों ओर चुपचाप जल के छींटे देना
- **पर्युत्थानम्**—नपुं°—–—परि + उद् + स्था + ल्युट्—खड़ा होना
- **पर्युत्सुक**—वि°—–——–शोक पूर्ण, ख़ेद युक्त, खिन्न, दुःखद
- **पर्युत्सुत्वम्**—नपुं°—–——–शोक
- **पर्युत्सुत्वम्**—नपुं°—–——–अत्यन्त इच्छुक, आतुर, सोत्सुक, प्रबल इच्छा रखने वाला
- **पर्युदञ्चनम्**—नपुं°——–परि + उध् + अञ्च् + ल्युट्—ऋण, उधार
- **पर्युदञ्चनम्**—नपुं°——–परि + उध् + अञ्च् + ल्युट्—उधार लेना, उठाना, उद्धार करना
- **पर्युदस्त**—भू° क° कृ°—–—परि + उद् + अस् + क्त—बर्हिष्कृत किया हुआ, निकाला हुआ
- **पर्युदस्त**—भू° क° कृ°—–—परि + उद् + अस् + क्त—रोका गया (नियमित) आपत्ति उठाई गई
- **पर्युदासः**—पुं°——–परि + उद् + अस् + घञ्—अपवाद, निषेध सूचक नियम या विधि
- **पर्युपस्थानम्**—नपुं°——–परि + उप + स्था + ल्युट्—सेवा, टहल, उपस्थिति
- **पर्युपासनम्**—नपुं°——–परि + उप + आस् + ल्युट्—पूजा, सम्मान, सेवा
- **पर्युपासनम्**—नपुं°——–परि + उप + आस् + ल्युट्—मित्रता, शिष्टता
- **पर्युपासनम्**—नपुं°——–परि + उप + आस् + ल्युट्—पास पास बैठाना
- **पर्युप्तिः**—स्त्री°——–परि + वप् + क्तिन्—बोना, बीजना
- **पर्युषणम्**—नपुं°——–परि + उष् + ल्युट्—पूजा, अर्चा, सेवा
- **पर्युषित**—वि°——–परि + वस् + क्त—बासी, जो ताजा न हो
- **पर्युषित**—वि°——–परि + वस् + क्त—फीका

- **पर्युषित**—वि°———परि + वस् + क्त—मूर्ख
- **पर्युषित**—वि°———परि + वस् + क्त—घमंडी
- **पर्येषणम्**—नपुं°———परि + इष् + ल्युट्—तर्क द्वारा गवेषणा
- **पर्येषणम्**—नपुं°———परि + इष् + ल्युट्—खोज, सामान्य पूछ-ताछ
- **पर्येषणम्**—नपुं°———परि + इष् + ल्युट्—श्रद्धांजलि, पूजा
- **पर्येषणा**—स्त्री°———परि + इष् + ल्युट्—तर्क द्वारा गवेषणा
- **पर्येषणा**—स्त्री°———परि + इष् + ल्युट्—खोज, सामान्य पूछ-ताछ
- **पर्येषणा**—स्त्री°———परि + इष् + ल्युट्—श्रद्धांजलि, पूजा
- **पर्येष्टिः**—स्त्री°———परि + इष् + क्तिन्—खोज, पूछ-ताछ
- **पर्वकम्**—नपुं°———पर्वणा ग्रन्थिना कायति- पर्वन् + कै + क—घुटने का जोड़
- **पर्वणी**—स्त्री°———पर्व् + ल्युट्, स्त्रियां ङीप्—पूर्णिमा, या शुक्लप्रतिपदा
- **पर्वणी**—स्त्री°———पर्व् + ल्युट्, स्त्रियां ङीप्—उत्सव
- **पर्वणी**—स्त्री°———पर्व् + ल्युट्, स्त्रियां ङीप्—आँख की संधि का विशेष रोग
- **पर्वतः**—पुं°———पर्व् + अचच्—पहाड़, गिरि
- **पर्वतः**—पुं°———पर्व् + अचच्—चट्टान
- **पर्वतः**—पुं°———पर्व् + अचच्—कृत्रिम पहाड़ या ढेर
- **पर्वतः**—पुं°———पर्व् + अचच्—'सात' की संख्या
- **पर्वतः**—पुं°———पर्व् + अचच्—वृक्ष
- **पर्वतारिः**—पुं°—पर्वतः-अरिः———इन्द्र का विशेषण
- **पर्वतात्मजः**—पुं°—पर्वतः-आत्मजः———मैनाक पर्वत का विशेषण
- **पर्वतात्मजा**—स्त्री°—पर्वतः-आत्मजा———पार्वती का विशेषण
- **पर्वताधारा**—स्त्री°—पर्वतः-आधारा———पृथ्वी
- **पर्वताशयः**—पुं°—पर्वतः-आशयः———बादल
- **पर्वताश्रयः**—पुं°—पर्वतः-आश्रयः———शरभ नामक काल्पनिक जंतु
- **पर्वतकाकः**—पुं°—पर्वतः-काकः———पहाड़ी कौवा
- **पर्वतजा**—स्त्री°—पर्वतः-जा———नदी
- **पर्वतपतिः**—पुं°—पर्वतः-पतिः———हिमालय पहाड़ का विशेषण

- **पर्वतमोचा**—स्त्री°—पर्वतः-मोचा—-—पहाड़ी केला
- **पर्वतराज्**—पुं°—पर्वतः-राज्—-—विशाल पहाड़
- **पर्वतराज्**—पुं°—पर्वतः-राज्—-—पर्वतों का स्वामी हिमालय
- **पर्वतराजः**—पुं°—पर्वतः-राजः—-—विशाल पहाड़
- **पर्वतराजः**—पुं°—पर्वतः-राजः—-—पर्वतों का स्वामी हिमालय
- **पर्वतस्थ**—वि°—पर्वतः-स्थ—-—पहाड़ी, पर्वत पर स्थित
- **पर्वन्**—नपुं°—-—पृ + वनिप्—गांठ, जोड़
- **पर्वन्**—नपुं°—-—पृ + वनिप्—अवयव, अंग
- **पर्वन्**—नपुं°—-—पृ + वनिप्—अंश, भाग, खण्ड
- **पर्वन्**—नपुं°—-—पृ + वनिप्—पुस्तक, अध्याय
- **पर्वन्**—नपुं°—-—पृ + वनिप्—जीने की सीढ़ी
- **पर्वन्**—नपुं°—-—पृ + वनिप्—अवधि, निश्चित समय
- **पर्वन्**—नपुं°—-—पृ + वनिप्—विशेष कर, चन्द्रमा के चार परिवर्तन अर्थात् दोनों पक्ष की अष्टमी पूर्णिमा तथा अमावस्या
- **पर्वन्**—नपुं°—-—पृ + वनिप्—चन्द्रमा के परिवर्तन काल के अवसर पर अनुष्ठित यज्ञ
- **पर्वन्**—नपुं°—-—पृ + वनिप्—पूर्णिमा या अमावस्या
- **पर्वन्**—नपुं°—-—पृ + वनिप्—सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण
- **पर्वन्**—नपुं°—-—पृ + वनिप्—उत्सर्व, त्योहार, हर्ष का अवसर
- **पर्वन्**—नपुं°—-—पृ + वनिप्—सामान्य अवसर
- **पर्वकालः**—पुं°—पर्वन्-कालः—-—चन्द्रमा का आवर्तिक परिवर्तन
- **पर्वकालः**—पुं°—पर्वन्-कालः—-—वह काल जब चन्द्रमा पर्वसन्धि में से गुजरता है (मिलते या निकलते समय)
- **पर्वकारिन्**—पुं°—पर्वन्-कारिन्—-—वह ब्राह्मण जो अमावस्या आदि के आवर्तिक अनुष्ठान या संस्कारो को अपने लाभ के कारण सामान्य दिनों में करता है
- **पर्वगामिन्**—पुं°—पर्वन्-गामिन्—-—पर्व आदि शास्त्र निषिद्ध अवसरों पर भी अपनी पत्नी से मैथुन करने वाला व्यक्ति
- **पर्वधिः**—पुं°—पर्वन्-धिः—-—चन्द्रमा
- **पर्वयोनिः**—स्त्री°—पर्वन्-योनिः—-—बेत, नरकुल
- **पर्वरुह्**—पुं°—पर्वन्-रुह्—-—अनार का वृक्ष

- **पर्वसन्धिः**—पुं०—पर्वन्-सन्धिः—-—पूर्णिमा या अमावस्या तथा प्रतिपदा के मध्य का समय, अर्थात् पूर्णिमा या अमावस्या की समाप्ति पर प्रतिपदा आरम्भ
- **पर्शुः**—पुं०—-—परं शत्रुं श्रृणाति- पर + शृ + कु स च डित् वा स्पृशति शत्रून्- स्पृश् + शुन्, पृ आदेशः—कुठार, कुल्हाड़ी
- **पर्शुः**—पुं०—-—परं शत्रुं श्रृणाति- पर + शृ + कु स च डित् वा स्पृशति शत्रून्- स्पृश् + शुन्, पृ आदेशः—शस्त्र, हथियार
- **पर्शुपाणिः**—पुं०—पर्शुः-पाणिः—-—गणेश का विशेषण
- **पर्शुपाणिः**—पुं०—पर्शुः-पाणिः—-—परशुराम का विशेषण
- **पर्शुका**—स्त्री०—-—पर्शुं= कन् + टाप्—पसली
- **पर्श्वधः**—पुं०—-—परश्व + धा + क, पृषो०—कुल्हाड़ी, कुठार, फरसा
- **पर्षद्**—स्त्री०—-—पृष् + आदि—सभा, सम्मिलन, सम्मर्द
- **पर्षद्**—स्त्री०—-—पृष् + आदि—विशेषकर धर्मसभा
- **पलः**—पुं०—-—पल् + अच्—पुआल, भूसी
- **पलम्**—नपुं०—-—-—मांस, आमिष
- **पलम्**—नपुं०—-—-—कर्ष का तोल
- **पलम्**—नपुं०—-—-—तरल पदार्थों को मापने का मान
- **पलम्**—नपुं०—-—-—समय मापने का मान
- **पलाग्निः**—पुं०—पलः-अग्निः—-—पित्त
- **पलाङ्गः**—पुं०—पलः-अङ्गः—-—कछुवा
- **पलादः**—पुं०—पलः-अदः—-—पिशाच, राक्षस
- **पलक्षारः**—पुं०—पलः-क्षारः—-—रुधिर
- **पलगण्डः**—पुं०—पलः-गण्डः—-—पलस्तर करने वाला, राज
- **पलप्रियः**—पुं०—पलः-प्रियः—-—राक्षस
- **पलप्रियः**—पुं०—पलः-प्रियः—-—पहाड़ी कौवा
- **पलभा**—स्त्री०—पलः-भा—-—मध्याह्न की विषुवीय छाया
- **पलङ्कट**—वि०—-—पलं मांस कटति- पल् + काट् + खच्, मुम्—भीरु, बुजदिल
- **पलङ्करः**—पुं०—-—पलं मांस करोति- पलम् + कृ + अच्, द्वितीया या अलुक्—पित्त
- **पलङ्कषः**—पुं०—-—पलं कषति- पलम् + कष् + अच्, द्वितीयाया अलुक्—राक्षस, पिशाच, दानव
- **पलङ्कषलम्**—नपुं०—-—पलं कषति- पलम् + कष् + अच्, द्वितीयाया अलुक्—मांस

- **पलङ्कषलम्**—नपुं°—-—पलं कषति- पलम् + कष् + अच्, द्वितीयाया अलुक्—कीचड़, दलदल
- **पलङ्कषलम्**—नपुं°—-—पलं कषति- पलम् + कष् + अच्, द्वितीयाया अलुक्—पिसे हुए तिल व चीनी मिला कर बनाई गई मिठाई, गजक
- **पलङ्कषज्वरः**—पुं°—पलङ्कषः-ज्वरः—-—पहाड़ी कौवा
- **पलङ्कषज्वरः**—पुं°—पलङ्कषः-ज्वरः—-—राक्षस
- **पलङ्कषप्रियः**—पुं°—पलङ्कषः-प्रियः—-—पहाड़ी कौवा
- **पलङ्कषप्रियः**—पुं°—पलङ्कषः-प्रियः—-—राक्षस
- **पलवः**—पुं°—-—पल + वा + क—मछलियाँ पकड़ने का जाल या टोकरी
- **पलाण्डु**—पुं°—-—पलस्य मांसस्य अंडामिव-पलं + अंड् + कु—प्याज
- **पलापम्**—नपुं°—-—पलं मासम् आप्यते बाहुल्येन अत्र- पल + आप् + घञ्—हाथी की पुटपुड़ी
- **पलापम्**—नपुं°—-—पलं मासम् आप्यते बाहुल्येन अत्र- पल + आप् + घञ्—पगहा, रस्सी
- **पलायनम्**—नपुं°—-—परा + अय् + ल्युट् रस्य लः—भागना, लौटना, उड़ान, बच निकलना
- **पलायित**—भू° क° कृ°—-—परा + अय् + क्त—भागा हुआ, लौटा हुआ, दौड़ा हुआ, बच निकला हुआ
- **पलालः**—पुं°—-—पल + कालन्—पुआल, भूसी
- **पलालम्**—नपुं°—-—-—पुआल, भूसी
- **पलालदोहदः**—पुं°—पलालः-दोहदः—-—आम का वृक्ष
- **पलालिः**—पुं°—-—पल + अल् + इन्—माँस का ढेर
- **पलाशः**—पुं°—-—पल + अश् + अण्—एक वृक्ष, ढाक का पेड़
- **पलाशम्**—नपुं°—-—पल + अश् + अण्—इस वृक्ष का फूल
- **पलाशम्**—नपुं°—-—पल + अश् + अण्—पत्ता, पंखड़ी
- **पलाशम्**—नपुं°—-—पल + अश् + अण्—हरा रंग
- **पलाशिन्**—पुं°—-—पलाश + इन्—ढाक का पेड़
- **पलिक्नी**—स्त्री°—-—पलित + अच्, तस्य क्न, ङीप्—बूढ़ी स्त्री जिसके बाल सफेद हो गये हों
- **पलिक्नी**—स्त्री°—-—पलित + अच्, तस्य क्न, ङीप्—पहली बार ही ब्याई हुई गौ, बालगर्भिणी
- **पलिघः**—पुं°—-—परि + हन् + अप्, आदेशः, रस्य लः—शीशे का बर्तन, घड़ा
- **पलिघः**—पुं°—-—परि + हन् + अप्, आदेशः, रस्य लः—फसील, परकोटा
- **पलिघः**—पुं°—-—परि + हन् + अप्, आदेशः, रस्य लः—लोहे की गदा
- **पलिघः**—पुं°—-—परि + हन् + अप्, आदेशः, रस्य लः—गोशाला, गोगृह

- **पलित**—वि°—-—पल् + क्त—भूरा, धवल, सफेद बालों वाला, बृद्ध, बूढ़ा
- **पलितम्**—नपुं°—-—पल् + क्त—सफेद बाल या बालों की सफेदी जो बुढ़ापे के कारण हुई हो
- **पलितम्**—नपुं°—-—पल् + क्त—अधिक या अलंकृत केश
- **पलितङ्करण**—वि°—-—अपलितं पलितं क्रियतेऽनेन - पलित + कृ + ख्युन्, मुम्—सफेद करने वाला
- **पलितम्भविष्णु**—वि°—-—अपलितं पलितो भवति-पलित + भू + खिष्णुच्, मुम्—सफेद होने वाला
- **पल्यङ्कः**—पुं°—-—परितः अंक्यतेऽत्र, परि + अंक् + घञ् रस्य लः—पलंग, खाट
- **पल्ययनम्**—नपुं°—-—परि + अय् + ल्युट्, रस्यलः—जीन, काठी
- **पल्ययनम्**—नपुं°—-—परि + अय् + ल्युट्, रस्यलः—रास, लगाम
- **पल्लः**—पुं°—-—पल्ल् + अच्—अनाज का बड़ा भंडार, खत्ती
- **पल्लवः**—पुं°—-—पल् + क्विप्= पल्, लू + अप्= लव, पल् चासौ लवश्च कर्म° स°—अंकुर, कोंपल, टहनी
- **पल्लवः**—पुं°—-—पल् + क्विप्= पल्, लू + अप्= लव, पल् चासौ लवश्च कर्म° स°—कली, मंजरी
- **पल्लवः**—पुं°—-—पल् + क्विप्= पल्, लू + अप्= लव, पल् चासौ लवश्च कर्म° स°—विस्तार, फलाव, अभिस्तृति
- **पल्लवः**—पुं°—-—पल् + क्विप्= पल्, लू + अप्= लव, पल् चासौ लवश्च कर्म° स°—लालरंग, महावर, अलक्त
- **पल्लवः**—पुं°—-—पल् + क्विप्= पल्, लू + अप्= लव, पल् चासौ लवश्च कर्म° स°—सामर्थ्य, शक्ति
- **पल्लवः**—पुं°—-—पल् + क्विप्= पल्, लू + अप्= लव, पल् चासौ लवश्च कर्म° स°—घास की पत्ती
- **पल्लवः**—पुं°—-—पल् + क्विप्= पल्, लू + अप्= लव, पल् चासौ लवश्च कर्म° स°—कंकण, बाजूबंद
- **पल्लवः**—पुं°—-—पल् + क्विप्= पल्, लू + अप्= लव, पल् चासौ लवश्च कर्म° स°—प्रेम, केलि
- **पल्लवः**—पुं°—-—पल् + क्विप्= पल्, लू + अप्= लव, पल् चासौ लवश्च कर्म° स°—चञ्चलता
- **पल्लवम्**—नपुं°—-—पल् + क्विप्= पल्, लू + अप्= लव, पल् चासौ लवश्च कर्म° स°—अंकुर, कोंपल, टहनी
- **पल्लवम्**—नपुं°—-—पल् + क्विप्= पल्, लू + अप्= लव, पल् चासौ लवश्च कर्म° स°—कली, मंजरी
- **पल्लवम्**—नपुं°—-—पल् + क्विप्= पल्, लू + अप्= लव, पल् चासौ लवश्च कर्म° स°—विस्तार, फलाव, अभिस्तृति
- **पल्लवम्**—नपुं°—-—पल् + क्विप्= पल्, लू + अप्= लव, पल् चासौ लवश्च कर्म° स°—लालरंग, महावर, अलक्त
- **पल्लवम्**—नपुं°—-—पल् + क्विप्= पल्, लू + अप्= लव, पल् चासौ लवश्च कर्म° स°—सामर्थ्य, शक्ति
- **पल्लवम्**—नपुं°—-—पल् + क्विप्= पल्, लू + अप्= लव, पल् चासौ लवश्च कर्म° स°—घास की पत्ती
- **पल्लवम्**—नपुं°—-—पल् + क्विप्= पल्, लू + अप्= लव, पल् चासौ लवश्च कर्म° स°—कंकण, बाजूबंद
- **पल्लवम्**—नपुं°—-—पल् + क्विप्= पल्, लू + अप्= लव, पल् चासौ लवश्च कर्म° स°—प्रेम, केलि
- **पल्लवम्**—नपुं°—-—पल् + क्विप्= पल्, लू + अप्= लव, पल् चासौ लवश्च कर्म° स°—चञ्चलता

- **पल्लवः**—पुं°—-—-—स्वेच्छाचारी
- **पल्लवाङ्कुरः**—पुं°—पल्लवः-अङ्कुरः—-—शाखा
- **पल्लवाधारः**—पुं°—पल्लवः-आधारः—-—शाखा
- **पल्लवास्त्रः**—पुं°—पल्लवः-अस्त्रः—-—कामदेव का विशेषण
- **पल्लवद्रुः**—पुं°—पल्लवः-द्रुः—-—अशोक वृक्ष
- **पल्लवकः**—पुं°—-—पल्लव + कै + क—स्वेच्छाचारी
- **पल्लवकः**—पुं°—-—पल्लव + कै + क—लौंडा, गांडू
- **पल्लवकः**—पुं°—-—पल्लव + कै + क—रंडी का प्रेमी
- **पल्लवकः**—पुं°—-—पल्लव + कै + क—अशोक वृक्ष
- **पल्लवकः**—पुं°—-—पल्लव + कै + क—एक प्रकार की मछली
- **पल्लवकः**—पुं°—-—पल्लव + कै + क—अंकुर
- **पल्लविकः**—पुं°—-—पल्लवः शृंगारो रसः अस्ति अस्य- पल्लव + ठन्—स्वेच्छाचारी, रसिया
- **पल्लविकः**—पुं°—-—पल्लवः शृंगारो रसः अस्ति अस्य- पल्लव + ठन्—लौंडा, बांका, छैल
- **पल्लवित**—वि°—-—पल्लव + इतच्—अंकुरित होने वाला, नई २ कोंपलों से युक्त
- **पल्लवित**—वि°—-—पल्लव + इतच्—फैला हुआ, विस्तृत
- **पल्लवित**—वि°—-—पल्लव + इतच्—लाख से लाल रंग हुआ
- **पल्लवितः**—पुं°—-—पल्लव + इतच्—लाखका रंग
- **पल्लविन्**—वि°—-—पल्लव + इनि—नई २ कोंपलों से युक्त, नये किसलयों वाला
- **पल्लविन्**—पुं°—-—-—वृक्ष
- **पल्लि**—स्त्री°—-—पल्ल् + इन्—छोटा गाँव
- **पल्लि**—स्त्री°—-—पल्ल् + इन्—झोंपड़ी
- **पल्लि**—स्त्री°—-—पल्ल् + इन्—घर, पड़ाव
- **पल्लि**—स्त्री°—-—पल्ल् + इन्—नगर या क़स्वा
- **पल्लि**—स्त्री°—-—पल्ल् + इन्—छिपकली
- **पल्ली**—स्त्री°—-—पल्लि + ङीष्—छोटा गाँव
- **पल्ली**—स्त्री°—-—पल्लि + ङीष्—झोंपड़ी
- **पल्ली**—स्त्री°—-—पल्लि + ङीष्—घर, पड़ाव

- **पल्ली**—स्त्री°—-—पल्लि + ङीष्—नगर या क़स्वा
- **पल्ली**—स्त्री°—-—पल्लि + ङीष्—छिपकली
- **पल्लिका**—स्त्री°—-—पल्लि + कन् + टाप्—छोटा गाँव, पड़ाव
- **पल्लिका**—स्त्री°—-—पल्लि + कन् + टाप्—छिपकली
- **पल्वलम्**—नपुं°—-—पल् + ववच्—छोटा तालाब, छप्पड़, जोहड़, तडाग
- **पल्वलावासः**—पुं°—पल्वलम्-आवासः—-—कछुवा
- **पल्वलपङ्कः**—पुं°—पल्वलम्-पङ्कः—-—छप्पड़ का गारा, कीचड़
- **पवः**—पुं°—-—पू + अप्—वायु
- **पवः**—पुं°—-—पू + अप्—पवित्रीकरण
- **पवः**—पुं°—-—पू + अप्—अनाज फटकना
- **पवम्**—नपुं°—-—पू + अप्—गोबर
- **पवनः**—पुं°—-—पू + ल्युट्—हवा, वायु
- **पवनम्**—नपुं°—-—-—पवित्रीकरण
- **पवनम्**—नपुं°—-—-—फटकना
- **पवनम्**—नपुं°—-—-—चलनी, झरना
- **पवनम्**—नपुं°—-—-—पानी
- **पवनम्**—नपुं°—-—-—कुम्हार का आवा
- **पवनम्**—पुं°—-—-—कुम्हार का आवा
- **पवनी**—स्त्री°—-—-—झाड़ू
- **पवनाशनः**—पुं°—पवनः-अशनः—-—साँप
- **पवनभुज्**—पुं°—पवनः-भुज्—-—साँप
- **पवनात्मजः**—पुं°—पवनः-आत्मजः—-—हनुमान का विशेषण
- **पवनात्मजः**—पुं°—पवनः-आत्मजः—-—भीम का विशेषण
- **पवनात्मजः**—पुं°—पवनः-आत्मजः—-—आग
- **पवनाशः**—पुं°—पवनः-आशः—-—साँप, सर्प
- **पवनाशः**—पुं°—पवनः-नाशः—-—गरुड़ का विशेषण
- **पवनाशः**—पुं°—पवनः-नाशः—-—मोर

- **पवनतनयः**—पुं°—पवनः-तनयः—–—हनुमान का विशेषण
- **पवनसुतः**—पुं°—पवनः-सुतः—–—भीम का विशेषण
- **पवनव्याधिः**—पुं°—पवनः-व्याधिः—–—कृष्ण के सलाहकार और मित्र उद्धव का विशेषण
- **पवनव्याधिः**—पुं°—पवनः-व्याधिः—–—गठिया
- **पवमानः**—पुं°—–—पू + शानच्, मुक्—हवा, वायु
- **पवमानः**—पुं°—–—पू + शानच्, मुक्—एक प्रकार की यज्ञाग्नि जिसे गार्हपत्य कहते हैं
- **पवाका**—स्त्री°—–—पू + आप्, नि° साधुः—बवंडर, आँधी, झंझावात
- **पविः**—पुं°—–—पू + इ—इन्द्र का वज्र
- **पवित**—वि°—–—पू + क्त—पवित्र किया हुआ, छाना हुआ
- **पवितम्**—नपुं°—–—पू + क्त—काली मिर्च
- **पवित्र**—वि°—–—पू + इत्र—पुनीत, पावन, निष्पाप, पवित्रीकृत (व्यक्ति या वस्तुएँ)
- **पवित्र**—वि°—–—पू + इत्र—शुद्ध, छना हुआ
- **पवित्र**—वि°—–—पू + इत्र—यज्ञादि के अनुष्ठानों द्वारा पवित्र किया गया
- **पवित्र**—वि°—–—पू + इत्र—पवित्र करना, पाप धोना
- **पवित्रम्**—नपुं°—–—पू + इत्र—छानने या शुद्ध करने का उपकरण, चलनी झरना
- **पवित्रम्**—नपुं°—–—पू + इत्र—कुश की दो पत्तियाँ जो यज्ञ में घी को पवित्र करने तथा छींटे देने के काम आती हैं
- **पवित्रम्**—नपुं°—–—पू + इत्र—कुशा की बनी अंगूठी जो कई धार्मिक अवसरों पर चौथी अँगुली में पहनी जाती है
- **पवित्रम्**—नपुं°—–—पू + इत्र—जनेऊ जो हिन्दुजाति के प्रथम तीन वर्ण पहनते हैं
- **पवित्रम्**—नपुं°—–—पू + इत्र—ताँबा
- **पवित्रम्**—नपुं°—–—पू + इत्र—वृष्टि
- **पवित्रम्**—नपुं°—–—पू + इत्र—जल
- **पवित्रम्**—नपुं°—–—पू + इत्र—रगड़ना, मांजना
- **पवित्रम्**—नपुं°—–—पू + इत्र—अर्घ्य देने का पात्र
- **पवित्रम्**—नपुं°—–—पू + इत्र—घी
- **पवित्रम्**—नपुं°—–—पू + इत्र—शहद, मधु
- **पवित्रारोपणम्**—नपुं°—पवित्र-आरोपणम्—पू + इत्र—यज्ञोपवीत धारण करने का संस्कार, उपनयन संस्कार
- **पवित्रारोहणम्**—नपुं°—पवित्र-आरोहणम्—पू + इत्र—यज्ञोपवीत धारण करने का संस्कार, उपनयन संस्कार

- **पवित्रपाणि**—वि°—पवित्र-पाणि—-—दर्भघास को हाथ से थामने वाला
- **पवित्रधान्यम्**—नपुं°—पवित्र-धान्यम्—-—जौ
- **पवित्रकम्**—नपुं°—-—पवित्र + कै + क—सन या सुतली का बना जाल या रस्सा
- **पशव्य**—वि°—-—पशु + यत्—मवेशियों (गाय भैंसो आदि) के लिए उचित या उपयुक्त
- **पशव्य**—वि°—-—पशु + यत्—पशुओं से या रेवड़ या लहड़े से संबंध रखने वाला
- **पशव्य**—वि°—-—पशु + यत्—पशुओं का स्वामी
- **पशव्य**—वि°—-—पशु + यत्—पशुतापूर्ण
- **पशुः**—पुं°—-—सर्वमविशेषेण पश्यति- दृश् + कु, पशादेशः—मवेशी, (एक या समष्टि)
- **पशुः**—पुं°—-—सर्वमविशेषेण पश्यति- दृश् + कु, पशादेशः—जानवर
- **पशुः**—पुं°—-—सर्वमविशेषेण पश्यति- दृश् + कु, पशादेशः—बलिपशु जैसे कि बकरा
- **पशुः**—पुं°—-—सर्वमविशेषेण पश्यति- दृश् + कु, पशादेशः—नृशंस, जंगली, तिरस्कार प्रकटा करने के लिए नर वाचक शब्दों के साथ जोड़ा जाता है
- **पशुः**—पुं°—-—सर्वमविशेषेण पश्यति- दृश् + कु, पशादेशः—एक उपदेवता, शिव का एक अनुचर
- **पशोवदानम्**—नपुं°—पशुः-अवदानम्—-—पशुबलि
- **पशुक्रिया**—स्त्री°—पशुः-क्रिया—-—बलियज्ञ को प्रक्रिया
- **पशुक्रिया**—स्त्री°—पशुः-क्रिया—-—स्त्रीप्रसंग
- **पशुगायत्री**—स्त्री°—पशुः-गायत्री—-—वह मन्त्र जो कि बलि के पशु के कान में बोला जाता है, यह प्रसिद्ध गायत्रीमंत्र हास्यमय अनुकृति है
- **पशुघातः**—पुं°—पशुः-घातः—-—यज्ञ के लिए पशुओं का वध
- **पशुचर्या**—स्त्री°—पशुः-चर्या—-—सहवास, स्त्री प्रसंग
- **पशुधर्मः**—पुं°—पशुः-धर्मः—-—पशुओं की प्रकृति या लक्षण
- **पशुधर्मः**—पुं°—पशुः-धर्मः—-—पशुओं की चिकित्सा
- **पशुधर्मः**—पुं°—पशुः-धर्मः—-—स्वच्छन्द मैथुन
- **पशुधर्मः**—पुं°—पशुः-धर्मः—-—विधवाविवाह
- **पशुनाथः**—पुं°—पशुः-नाथः—-—शिव का विशेषण
- **पशुनाथः**—पुं°—पशुः-नाथः—-—शिव का विशेषण
- **पशुपः**—पुं°—पशुः-पः—-—ग्वाला
- **पशुपतिः**—पुं°—पशुः-पतिः—-—शिव का विशेषण
- **पशुपतिः**—पुं°—पशुः-पतिः—-—ग्वाला, पशुओं का स्वामी

- **पशुपतिः**—पुं°—पशुः-पतिः—-—'पाशुपत' नामक दार्शनिक सिद्धान्त का प्रतिपादन करने वाला दर्शन शास्त्र
- **पशुपालः**—पुं°—पशुः-पालः—-—ग्वाला, पशुओं का पालन करने वाला
- **पशुपालकः**—पुं°—पशुः-पालकः—-—ग्वाला, पशुओं का पालन करने वाला
- **पशुपालनम्**—नपुं°—पशुः-पालनम्—-—पशुओं को पालना, रखना
- **पशुरक्षणम्**—नपुं°—पशुः-रक्षणम्—-—पशुओं को पालना, रखना
- **पशुपाशकः**—पुं°—पशुः-पाशकः—-—एक प्रकार का रतिबन्ध या मैथुन प्रकार
- **पशुप्रेरणम्**—नपुं°—पशुः-प्रेरणम्—-—पशुओं को हांकना
- **पशुमारम्**—अव्य°—पशुः-मारम्—-—पशुबध की रीति के अनुसार
- **पशुयज्ञः**—पुं°—पशुः-यज्ञः—-—पशु यज्ञ
- **पशुयागः**—पुं°—पशुः-यागः—-—पशु यज्ञ
- **पशुद्रव्यम्**—नपुं°—पशुः-द्रव्यम्—-—पशु यज्ञ
- **पशुरज्जुः**—स्त्री°—पशुः-रज्जुः—-—पशुओं को सँभालने के लिए रस्सी
- **पशुराजः**—पुं°—पशुः-राजः—-—सिंह, केसरी
- **पश्चात्**—अव्य°—-—अपर + अति, पश्चभावः—पीछे से, पिछली ओर से
- **पश्चात्**—अव्य°—-—अपर + अति, पश्चभावः—पीछे, पीछे की ओर, पीछे की तरफ
- **पश्चात्**—अव्य°—-—अपर + अति, पश्चभावः—(समय और स्थान की दृष्टि से) बाद में , तब, इसके बाद, उसके अन्तर
- **पश्चात्**—अव्य°—-—अपर + अति, पश्चभावः—आखिरकार, अन्त में अन्ततोगत्वा
- **पश्चात्**—अव्य°—-—अपर + अति, पश्चभावः—पश्चिम से
- **पश्चात्**—अव्य°—-—अपर + अति, पश्चभावः—पश्चिम की ओर, पश्चिम दिशा की तरफ
- **पश्चात्कृत**—वि°—पश्चात्-कृत—-—पीछे छोड़ा हुआ, आगे बढ़ा हुआ, पृष्ठभूमि में फेंका हुआ
- **पश्चात्तापः**—पुं°—पश्चात्-तापः—-—पछताना, ग्लानि, पछतावा
- **पश्चात्पंकृ**—-—पश्चात्-पं कृ—-—पछताना
- **पश्चार्धः**—पुं°—-—अपरश्चासौ अर्धः, कु° स°, अपरस्य पश्चभावः—(शरीर का) पिछला भाग, या पार्श्व
- **पश्चार्धः**—पुं°—-—अपरश्चासौ अर्धः, कु° स°, अपरस्य पश्चभावः—(समय और देश की दृष्टि से) अन्तिम
- **पश्चार्धः**—पुं°—-—अपरश्चासौ अर्धः, कु° स°, अपरस्य पश्चभावः—पश्चिमी, पश्चिमी ढंग का
- **पश्चार्धार्धः**—पुं°—पश्चार्धः-अर्धः—-—उत्तरार्ध
- **पश्चार्धार्धः**—पुं°—पश्चार्धः-अर्धः—-—रात का पिछला पहर

- **पश्चार्धार्धः**—पुं°—पश्चार्धः-अर्धः—-—रात्रि का पिछला भाग
- **पश्चिमा**—स्त्री°—-—पश्चिम + टाप्—पश्चिम दिशा
- **पश्चिमोत्तरा**—स्त्री°—पश्चिमा-उत्तरा—-—उत्तरपश्चिम
- **पश्यत्**—वि°—-—दृश् + शतृ, पश्यादेशः—देखने वाला, प्रत्यक्ष ज्ञान करने वाला, अवलोकन करने वाला, दृष्टिपात करने वाला, निरीक्षण करने वाला आदि
- **पश्यतोहरः**—पुं°—-—पश्यन्तं जनम् अनादृत्य हरति-हृ + अच्, ष° त° अलुक् समासः—चोर, लुटेरा, डाकू
- **पश्यन्ती**—स्त्री°—-—दृश् + शतृ, पश्यादेशः, नुम्—वेश्या, रंडी
- **पश्यन्ती**—स्त्री°—-—दृश् + शतृ, पश्यादेशः, नुम्—विशेष-प्रकार की ध्वनि
- **पस्त्यम्**—नपुं°—-—अपस्त्यायन्ति संगीभूय तिष्ठति यत्र-अप + स्त्यै + क नि° अकारलोपः—घर, निवास, आवास
- **पस्पशः**—पुं°—-—पतंजलिप्रणीत महाभाष्य के प्रथम अध्याय का प्रथम आह्निक
- **पस्पशः**—पुं°—-—प्रस्तावना, उपाद्घोत
- **पह्लवाः**—पुं°—-—एक जाति का नाम, संभवतः पर्शिया देशवासी
- **पह्नवाः**—पुं°—-—एक जाति का नाम, संभवतः पर्शिया देशवासी
- **पह्लिकः**—पुं°—-—एक जाति का नाम, संभवतः पर्शिया देशवासी
- **पा**—भ्वा° पर° <पिवति>, <पति>, कर्मवा° <पीयते>—-—पीना, एक सांस में चढ़ा जाना
- **पा**—भ्वा° पर° <पिवति>, <पति>, कर्मवा° <पीयते>—-—चूमना
- **पा**—भ्वा° पर° <पिवति>, <पति>, कर्मवा° <पीयते>—-—चिंतन करना (आंख और कान से पीना), उत्सव मनाना, ध्यान पूर्वक सुनना
- **पा**—भ्वा° पर° <पिवति>, <पति>, कर्मवा° <पीयते>—-—अवशोषण करना, पी जाना
- **पा**—पुं°—-—पिलाना, पीने के लिए देना
- **पा**—पुं°—-—सींचना
- **पा**—इच्छा° <पिपासति>—-—पीने की इच्छा
- **अनुपा**—भ्वा° पर° —अनु-पा—-—बाद में पीना, अनुसरण करना
- **आपा**—भ्वा° पर° —आ-पा—-—पीना
- **आपा**—भ्वा° पर° —आ-पा—-—पी जाना, अवशोषण करना, चूस लेना
- **आपा**—भ्वा° पर° —आ-पा—-—(आँख, कान से) पीने का उत्सव मनाना
- **निपा**—भ्वा° पर° —नि-पा—-—पीना, चूमना
- **निपा**—भ्वा° पर° —नि-पा—-—(आँख, कान से) पीना, सौन्दर्यावलोकन करना

- **परिपा**—भ्वा० पर० —परि-पा—-—आत्मसात् करना
- **परिपा**—अदा० पर० <पाति>, <पात>—परि-पा—-—रक्षा करना, देखभाल करना, चौकसी रखना, बचाना, संधारण करना
- **परिपा**—अदा० पर० <पाति>, <पात>—परि-पा—-—हुकूमत करना, शासन करना
- **परिपा**—पुं०—परि-पा—-—रक्षा करना, देखभाल करना, चौकसी रखना, बचाना, संधारण करना
- **परिपा**—पुं०—परि-पा—-—हुकूमत करना, शासन करना
- **परिपा**—पुं०—परि-पा—-—पालन करना, स्थिर रखना, अनुपालन करना, पूरा करना (प्रतिज्ञा, व्रत आदि)
- **परिपा**—पुं०—परि-पा—-—पालन पोषण करना, संवर्धन करना, स्थापित रखना
- **परिपा**—पुं०—परि-पा—-—प्रतीक्षा करना
- **अनुपा**—पुं०—अनु-पा—-—बचाना, संधारण करना, देखभाल करना, रक्षा करना
- **अनुपा**—पुं०—अनु-पा—-—पालन पोषण करना, संवर्धन करना, सहारा देना
- **अनुपा**—पुं०—अनु-पा—-—स्थिर रखना, पालन करना, जमे रहना, धैर्य रखना
- **अनुपा**—पुं०—अनु-पा—-—प्रतीक्षा करना, इंतजार करना
- **प्रतिपा**—पुं०—प्रति-पा—-—बचाना, संधारण करना
- **प्रतिपा**—पुं०—प्रति-पा—-—प्रतीक्षा करना, इंतजार करना
- **प्रतिपा**—पुं०—प्रति-पा—-—अमल करना, आज्ञा मानना
- **पा**—वि०—-—पा + विच्—पीने वाला, चढ़ा जाने वाला
- **पा**—वि०—-—पा + विच्—बचाने वाला, देखभाल करने वाला, स्थिर रखने वाला
- **पांसन**—वि०—-—पंस् + ल्युट्, पृषो० दीर्घ०—कलंकित करने वाला, अपमानित करने वाला, दूषित करने वाला
- **पांसन**—वि०—-—पंस् + ल्युट्, पृषो० दीर्घ०—विषाक्त करने वाला, भ्रष्ट करने वाला
- **पांसन**—वि०—-—पंस् + ल्युट्, पृषो० दीर्घ०—दुष्ट, तिरस्करणीय
- **पांसन**—वि०—-—पंस् + ल्युट्, पृषो० दीर्घ०—बदनाम
- **पांशन**—वि०—-—पंश् + ल्युट्, पृषो० दीर्घ०—कलंकित करने वाला, अपमानित करने वाला, दूषित करने वाला
- **पांशन**—वि०—-—पंश् + ल्युट्, पृषो० दीर्घ०—विषाक्त करने वाला, भ्रष्ट करने वाला
- **पांशन**—वि०—-—पंश् + ल्युट्, पृषो० दीर्घ०—दुष्ट, तिरस्करणीय
- **पांशन**—वि०—-—पंश् + ल्युट्, पृषो० दीर्घ०—बदनाम
- **पांसव**—वि०—-—पांसु + अण्—धूल से भरा हुआ
- **पांशव**—वि०—-—पांशु + अण्—धूल से भरा हुआ

- **पांसुः**—पुं°—-—पंस् + कु, दीर्घः—धूल, गर्द, चूरा (जीर्ण होकर गिरने वाला)
- **पांसुः**—पुं°—-—पंस् + कु, दीर्घः—धूलकण
- **पांसुः**—पुं°—-—पंस् + कु, दीर्घः—गोबर, खाद
- **पांसुः**—पुं°—-—पंस् + कु, दीर्घः—एक प्रकार का कूपर
- **पांशुः**—पुं°—-—पंश् + कु, दीर्घः—धूल, गर्द, चूरा (जीर्ण होकर गिरने वाला)
- **पांशुः**—पुं°—-—पंश् + कु, दीर्घः—धूलकण
- **पांशुः**—पुं°—-—पंश् + कु, दीर्घः—गोबर, खाद
- **पांशुः**—पुं°—-—पंश् + कु, दीर्घः—एक प्रकार का कूपर
- **पांसुकासीसम्**—नपुं°—पांसुः-कासीसम्—-—कसीस
- **पांसुकुली**—पुं°—पांसुः-कुली—-—प्रशस्त पथ, राजमार्ग
- **पांसुकूलम्**—नपुं°—पांसुः-कूलम्—-—धूल का ढेर
- **पांसुकूलम्**—नपुं°—पांसुः-कूलम्—-—ऐसा कानूनी दस्तावेज जो किसी व्यक्ति विशेष के नाम न हो ,निरुपपदशासन
- **पांसुकृत**—वि°—पांसुः-कृत—-—धूल से भरा हुआ
- **पांसुक्षारम्**—नपुं°—पांसुः-क्षारम्—-—एक प्रकार का नमक
- **पांसुक्षारजम्**—नपुं°—पांसुः-क्षारजम्—-—एक प्रकार का नमक
- **पांसुचत्वरम्**—नपुं°—पांसुः-चत्वरम्—-—ओला
- **पांसुचंदनः**—पुं°—पांसुः-चंदनः—-—शिव का विशेषण
- **पांसुचामरः**—पुं°—पांसुः-चामरः—-—धूल का ढेर
- **पांसुचामरः**—पुं°—पांसुः-चामरः—-—तंबू
- **पांसुचामरः**—पुं°—पांसुः-चामरः—-—दूब से ढका नदीतट
- **पांसुचामरः**—पुं°—पांसुः-चामरः—-—प्रशंसा
- **पांसुजालिकः**—पुं°—पांसुः-जालिकः—-—विष्णु का विशेषण
- **पांसुपटलम्**—नपुं°—पांसुः-पटलम्—-—धूल की परत या तह
- **पांसुमर्दनः**—पुं°—पांसुः-मर्दनः—-—पेड़ की जड़ों के पास चारो ओर से खोद कर पानी सींचने का स्थान, आलवाल, थांवला
- **पांसुरः**—पुं°—-—पांसु + रा + क—डांस, गोमक्खी
- **पांसुरः**—पुं°—-—पांसु + रा + क—विकलांग, लुंजा जो गाड़ी में बैठकर इधर उधर घूमे
- **पांशुरः**—पुं°—-—पांशु + रा + क—डांस, गोमक्खी

- **पांशुरः**—पुं°—-—पांशु + रा + क—विकलांग, लुंजा जो गाड़ी में बैठकर इधर उधर घूमे
- **पांसुलः**—वि°—-—पांसु + लच्—धूल से भरा हुआ, धूलिधूसरित
- **पांसुलः**—वि°—-—पांसु + लच्—अपवित्र, दूषित, कलुषित, कलंकित
- **पांसुलः**—वि°—-—पांसु + लच्—दूषित करने वाला, कलंकित करने वाला, अपमानित करने वाला
- **पांशुलः**—वि°—-—पांशु + लच्—धूल से भरा हुआ, धूलिधूसरित
- **पांशुलः**—वि°—-—पांशु + लच्—अपवित्र, दूषित, कलुषित, कलंकित
- **पांशुलः**—वि°—-—पांशु + लच्—दूषित करने वाला, कलंकित करने वाला, अपमानित करने वाला
- **पांसुलः**—पुं°—-—-—दुश्चरित्र, स्वेच्छाचारी, लम्पट
- **पांसुलः**—पुं°—-—-—शिव का विशेषण
- **पांसुला**—स्त्री°—-—-—रजस्वला स्त्री
- **पांसुला**—स्त्री°—-—-—असती या व्यभिचारिणी स्त्री
- **अपांसुला**—स्त्री°—अ-पांसुला—-—सती स्त्री
- **पांसुला**—स्त्री°—-—-—पृथ्वी
- **पाकः**—पुं°—-—पच् + घञ्—पकाना, प्रसाधन, सेकना, उबालना
- **पाकः**—पुं°—-—पच् + घञ्—(ईंट आदि) आँच लगाना, सेकना
- **पाकः**—पुं°—-—पच् + घञ्—(भोजन का) पचना
- **पाकः**—पुं°—-—पच् + घञ्—पका होना
- **पाकः**—पुं°—-—पच् + घञ्—परिपक्वता, पूर्ण विकास
- **पाकः**—पुं°—-—पच् + घञ्—सम्पूर्ति, निष्पन्नता, पूरा करना
- **पाकः**—पुं°—-—पच् + घञ्—नतीजा परिणाम, फल, परिफलन
- **पाकः**—पुं°—-—पच् + घञ्—अनाज, अन्न
- **पाकः**—पुं°—-—पच् + घञ्—पकने की क्रिया, (फोड़े आदि का) पकना, पीप पड़ना
- **पाकः**—पुं°—-—पच् + घञ्—बुढ़ापे के कारण बालों का सफेद हो जाना
- **पाकः**—पुं°—-—पच् + घञ्—गार्हपत्याग्नि
- **पाकः**—पुं°—-—पच् + घञ्—उल्लू
- **पाकः**—पुं°—-—पच् + घञ्—बच्चा, शिशु
- **पाकः**—पुं°—-—पच् + घञ्—एक राक्षस जिसे इन्द्र ने मारा था

- **पाकागारः**—पुं°—पाकः-अगारः—-—रसोई
- **पाकागारम्**—नपुं°—पाकः-अगारम्—-—रसोई
- **पाकागारः**—पुं°—पाकः-आगारः—-—रसोई
- **पाकागारम्**—नपुं°—पाकः-आगारम्—-—रसोई
- **पाकशाला**—स्त्री°—पाकः-शाला—-—रसोई
- **पाकस्थानम्**—नपुं°—पाकः-स्थानम्—-—रसोई
- **पाकातीसारः**—पुं°—पाकः-अतीसारः—-—पुरानी पेंचिश
- **पाकाभिमुख**—वि°—पाकः-अभिमुख—-—पकाने के लिए तैयार, बिकासोन्मुख
- **पाकाभिमुख**—वि°—पाकः-अभिमुख—-—कृपापरायण
- **पाकजम्**—नपुं°—पाकः-जम्—-—काला नमक
- **पाकजम्**—नपुं°—पाकः-जम्—-—उदरवायु
- **पाकापात्रम्**—नपुं°—पाकः-पात्रम्—-—पकाने का बर्तन
- **पाकपुटी**—स्त्री°—पाकः-पुटी—-—कुम्हार का आवा
- **पाकयज्ञः**—पुं°—पाकः-यज्ञः—-—गृह्ययज्ञ
- **पाकशुक्ला**—स्त्री°—पाकः-शुक्ला—-—खड़िया
- **पाकशासनः**—पुं°—पाकः-शासनः—-—इन्द्र का विशेषण
- **पाकशासनिः**—पुं°—पाकः-शासनिः—-—इन्द्र का पुत्र जयन्त का विशेषण
- **पाकशासनिः**—पुं°—पाकः-शासनिः—-—वालि का विशेषण
- **पाकशासनिः**—पुं°—पाकः-शासनिः—-—अर्जुन का विशेषण
- **पाकलः**—पुं°—-—पाक + ला + क—आग
- **पाकलः**—पुं°—-—पाक + ला + क—हवा
- **पाकलः**—पुं°—-—पाक + ला + क—हाथी का ज्वर
- **पाकिम**—वि°—-—पाकेन निर्वृत्तम्- पाक + इमप्—पका हुआ, प्रसाधित
- **पाकिम**—वि°—-—पाकेन निर्वृत्तम्- पाक + इमप्—(प्राकृतिक या कृत्रिम रूप से) पका हुआ
- **पाकिम**—वि°—-—पाकेन निर्वृत्तम्- पाक + इमप्—(नमक आदि) उबाल कर प्राप्त किया हुआ
- **पाकुः**—पुं°—-—पच् + उण्—रसोइया
- **पाकुकः**—पुं°—-—पच् + उण्, क आदेशः—रसोइया

- **पाक्य**—वि०—-—पच् + ण्यत्, क आदेशः—पकाने के योग्य प्रसाधित होने के लायक, परिपक्व होने के योग्य
- **पाक्यः**—पुं०—-—पच् + ण्यत्, क आदेशः—जवाखार शोरा
- **पाक्ष**—वि०—-—पक्ष + अण्—(कृष्ण या शुक्ल) पक्ष से संबंध रखने वाला, पाक्षिक
- **पाक्ष**—वि०—-—पक्ष + अण्—किसी दल या पाटी से संबद्ध
- **पाक्षिक**—वि०—-—पक्ष + ठक्—पक्ष से संबद्ध, अर्धमासिक
- **पाक्षिक**—वि०—-—पक्ष + ठक्—पक्षी से संबद्ध
- **पाक्षिक**—वि०—-—पक्ष + ठक्—किसी दल या पार्टी का पक्ष लेने वाला
- **पाक्षिक**—वि०—-—पक्ष + ठक्—तर्क विषयक
- **पाक्षिक**—वि०—-—पक्ष + ठक्—ऐच्छिक, वैकल्पिक, अनुमत परन्तु विशेष रूप से निर्धारित न हो
- **पाक्षिकः**—पुं०—-—पक्ष + ठक्—बहेलिया, चिड़ीमार
- **पाखण्डः**—पुं०—-—पातीति- पा + क्विप्, पाः त्रयीधर्मः, तं खण्डयति- पा + खण्ड् + अच्—विधर्मी, नास्तिक
- **पागल**—वि०—-—पारक्षणम्, तस्मात् गलति विच्युतो भवति- पा + गल् + अच्—विक्षिप्त, जिसका दिमाग खराब हो
- **पाङ्क्तेय**—वि०—-—पंक्ति + ढक्—भोजन पंक्ति में एक साथ बैठने के योग्य
- **पाङ्क्तेय**—वि०—-—पंक्ति + ढक्—साहचर्य के उपयुक्त
- **पाङ्क्त्य**—वि०—-—पंक्ति + यत्—भोजन पंक्ति में एक साथ बैठने के योग्य
- **पाङ्क्त्य**—वि०—-—पंक्ति + यत्—साहचर्य के उपयुक्त
- **पाचक**—वि०—-—पच् + ण्वुल्—पकाना, सेकना
- **पाचक**—वि०—-—पच् + ण्वुल्—पचाने वाला, पौष्टिक
- **पाचकः**—पुं०—-—पच् + ण्वुल्—रसोइया
- **पाचकः**—पुं०—-—पच् + ण्वुल्—आग
- **पाचकम्**—नपुं०—-—-—पित्त
- **पाचकस्त्री**—स्त्री०—पाचक-स्त्री—-—महाराजिन, रसोई बनाने वाली स्त्री
- **पाचन**—वि०—-—पच् + णिच् + ल्युट्—पकाने वाला
- **पाचन**—वि०—-—पच् + णिच् + ल्युट्—पकने वाला
- **पाचन**—वि०—-—पच् + णिच् + ल्युट्—पचाने वाला, हाजिम
- **पाचनः**—पुं०—-—पच् + णिच् + ल्युट्—आग
- **पाचनः**—पुं०—-—पच् + णिच् + ल्युट्—खटास, अम्लता

- **पाचनम्**—नपुं°—-—पच् + णिच् + ल्युट्—पकाने की क्रिया
- **पाचनम्**—नपुं°—-—पच् + णिच् + ल्युट्—पकने की क्रिया
- **पाचनम्**—नपुं°—-—पच् + णिच् + ल्युट्—घुलनशील, भोजन पचाने वाली औषधि
- **पाचनम्**—नपुं°—-—पच् + णिच् + ल्युट्—घाव भरना
- **पाचनम्**—नपुं°—-—पच् + णिच् + ल्युट्—तपस्या, प्रायश्चित्त
- **पाचल**—पुं°—-—पच् + णिच् + कलन्—रसोइया
- **पाचल**—पुं°—-—पच् + णिच् + कलन्—आग
- **पाचल**—पुं°—-—पच् + णिच् + कलन्—हवा
- **पाचलम्**—नपुं°—-—पच् + णिच् + कलन्—पकाना, परिपक्व करना
- **पाचा**—स्त्री°—-—पच् + णिच् + अङ + टाप्—पकाना
- **पाञ्चकपाल**—वि°—-—पञ्चकपाल + अण्—पाँच कपालों में भर कर दी गई आहुति से संबंध रखने वाला
- **पाञ्चजन्यः**—पुं°—-—पञ्चजन + ञ्य—कृष्ण के शंख का नाम
- **पाञ्चजन्यधरः**—पुं°—पाञ्चजन्यः-धरः—-—कृष्ण का विशेषण
- **पाञ्चदश**—वि°—-—पञ्चदशी + अण्—मास की पन्द्रहवीं तिथि से संबंध रखने वाला
- **पाञ्चदश्यम्**—नपुं°—-—पञ्चदशन् + ष्यञ्—पन्द्रह का समुच्चय
- **पाञ्चनद**—वि°—-—पञ्चनद + अण्—पंचनद या पंजाब में प्रचलित
- **पाञ्चभौतिक**—वि°—-—पञ्चभूत + ठक्, द्विपदवृद्धि—पाँच तत्त्वों के समूह से बना हुआ, या पाँच तत्वों वाला
- **पाञ्चवर्षिक**—वि°—-—पञ्चवर्ष + ठञ्—पाँच वर्ष का
- **पाञ्चशाब्दिकम्**—नपुं°—-—पञ्चशब्द + ठक्—पाँच प्रकार का संगीत
- **पाञ्चशाब्दिकम्**—नपुं°—-—पञ्चशब्द + ठक्—गायन संबंधी वाद्ययंत्र
- **पाञ्चाल**—वि°—-—पञ्चाल + अण्—पंचाल से संबंद्ध या पंचालों के शासक
- **पाञ्चालः**—पुं°—-—पञ्चाल + अण्—पंचालों का देश
- **पाञ्चालः**—पुं°—-—पञ्चाल + अण्—पंचालों का राजकुमार
- **पाञ्चालाः**—पुं°—-—पञ्चाल + अण्—पंचाल देश के लोग
- **पाञ्चालिका**—स्त्री°—-—पाञ्चाली + कप् + टाप्, ह्रस्वः—गुड़िया
- **पाञ्चाली**—स्त्री°—-—पाञ्चाल + अण् + ङीप्—पंचाल देश की राज कुमारी या स्त्री
- **पाञ्चाली**—स्त्री°—-—पाञ्चाल + अण् + ङीप्—पांडवों की पत्नी, द्रौपदी

- **पाञ्चाली**—स्त्री°——पाञ्चाल + अण् + ङीप्—गुड़िया, पुतली
- **पाञ्चाली**—स्त्री°——पाञ्चाल + अण् + ङीप्—रचना की चार शैलियों में से एक
- **पाट्**—अव्य°——पट् + णिच् + क्विप्—एक अव्यय जो बुलाने के लिए
- **पाटकः**—पुं°——पट् + णिच् + ण्वुल्—विदारक, विभाजक
- **पाटकः**—पुं°——पट् + णिच् + ण्वुल्—गाँव का एक भाग
- **पाटकः**—पुं°——पट् + णिच् + ण्वुल्—गाँव का आधा हिस्सा
- **पाटकः**—पुं°——पट् + णिच् + ण्वुल्—एक प्रकार का संगीत-उपकरण
- **पाटकः**—पुं°——पट् + णिच् + ण्वुल्—तट, किनारा
- **पाटकः**—पुं°——पट् + णिच् + ण्वुल्—घाट की चौड़ियाँ
- **पाटकः**—पुं°——पट् + णिच् + ण्वुल्—मूलधन या पूंजी की हानि
- **पाटकः**—पुं°——पट् + णिच् + ण्वुल्—वित्ता या बालिस्त
- **पाटकः**—पुं°——पट् + णिच् + ण्वुल्—पासे फेंकना
- **पाटच्चरः**—पुं°——पाटयन् छिन्दन् चरति चर + अच्, पृषो°—चोर, लुटेरा, पाड़ लगाने वाला,
- **पाटनम्**—नपुं°——पट् + णिच् + ल्युट्—विदीर्ण करना, तोड़ना, फाड़ना, नष्ट करना
- **पाटल**—वि°——पट् + णिच् + कलच्—पीतरक्त वर्ण, गुलाबी रंग
- **पाटलः**—पुं°————पीतरक्त प्याजी या गुलाबी रंग
- **पाटलः**—पुं°————पादर का फूल
- **पाटलम्**—नपुं°————पाटल वृक्ष का फूल
- **पाटलम्**—नपुं°————एक प्रकार का चावल जो बरसात में तैयार होता है
- **पाटलम्**—नपुं°————केसर, जाफरान
- **पाटलोपलः**—पुं°—पाटल-उपलः——लाल
- **पाटलद्रुमः**—पुं°—पाटल-द्रुमः——पादर वृक्ष
- **पाटला**—स्त्री°——पाटल + अच् + टाप्—लाल लोध्र
- **पाटला**—स्त्री°——पाटल + अच् + टाप्—पादर का वृक्ष तथा उसका फूल
- **पाटला**—स्त्री°——पाटल + अच् + टाप्—दूर्गा का विशेषण
- **पाटलिः**—स्त्री°——पाटल + इनि—पादर का फूल
- **पाटलिपुत्रम्**—नपुं°—पाटलिः-पुत्रम्——एक प्राचीन नगर, मगध की राजधानी

- **पाटलिकः**—पुं°—-—पाटलि + कन्—छात्र, विद्यार्थी
- **पाटलिमन्**—पुं°—-—पाटल + इमनिच्—पीतरक्त वर्ण
- **पाटल्या**—स्त्री°—-—पाटल + यत् + टाप्—पाटल के फूलों का गुच्छा
- **पाटवम्**—नपुं°—-—पटु + अण्—तीक्ष्णता, पैनापन
- **पाटवम्**—नपुं°—-—पटु + अण्—चतुराई, कौशल, दक्षता, प्रवीणता
- **पाटवम्**—नपुं°—-—पटु + अण्—ऊर्जा
- **पाटवम्**—नपुं°—-—पटु + अण्—फुर्ती, उतावलापना
- **पाटविक**—वि°—-—पाटव + ठन्—चतुर, तीक्ष्ण, कुशल
- **पाटविक**—वि°—-—पाटव + ठन्—धूर्त, चालबाज, मक्कार
- **पाटित**—भू° क° कृ°—-—पट् + णिच् + क्त—फाड़ा हुआ, चीरा हुआ, टुकड़े २ किया हुआ, तोड़ा हुआ
- **पाटित**—भू° क° कृ°—-—पट् + णिच् + क्त—विद्ध, छिद्रित
- **पाटी**—स्त्री°—-—पट् + णिच् + इन् + ङीष्—अंकगणित
- **पाटीगणितम्**—नपुं°—पाटी-गणितम्—-—अंकगणित
- **पाटीर**—पुं°—-—पाटीर + अण्—चन्दन
- **पाटीर**—पुं°—-—पाटीर + अण्—खेत
- **पाटीर**—पुं°—-—पाटीर + अण्—राँगा
- **पाटीर**—पुं°—-—पाटीर + अण्—बादल
- **पाटीर**—पुं°—-—पाटीर + अण्—चलनी
- **पाठः**—पुं°—-—पठ् + घञ्—प्रपठन, सस्वर पाठ, आवृति करना
- **पाठः**—पुं°—-—पठ् + घञ्—पढ़ना, वाचन, अध्ययन
- **पाठः**—पुं°—-—पठ् + घञ्—वेदाध्ययन, वेदपाठ, ब्रह्मयज्ञ, ब्राह्मणों के द्वारा पाँच दैनिक यज्ञों में से एक
- **पाठः**—पुं°—-—पठ् + घञ्—पुस्तक का मूलपाठ, स्वाध्याय, पाठभेद
- **पाठान्तरम्**—नपुं°—पाठः-अन्तरम्—-—दूसरा पाठ, पाठभेद
- **पाठच्छेदः**—पुं°—पाठः-छेदः—-—विराम, यति
- **पाठदोषः**—पुं°—पाठः-दोषः—-—दूषित पाठ, पाठ की अशुद्धियाँ
- **पाठनिश्चयः**—पुं°—पाठः-निश्चयः—-—किसी संदर्भ का पाठ निर्धारित करना
- **पाठमञ्जरी**—स्त्री°—पाठः-मञ्जरी—-—मैना, सारिका

- **पाठशालिनी**—स्त्री°—पाठः-शालिनी—-—मैना, सारिका
- **पाठशाला**—स्त्री°—पाठः-शाला—-—विद्यालय, महाविद्यालय, विद्यामंदिर
- **पाठकः**—पुं°—-—पठ् + णिच् + ण्वुल्—अध्यापक, प्राध्यापक, गुरु
- **पाठकः**—पुं°—-—पठ् + णिच् + ण्वुल्— पुराण या अन्य धार्मिक ग्रन्थों का सार्वजनिक पाठ करने वाला
- **पाठकः**—पुं°—-—पठ् + णिच् + ण्वुल्—आध्यात्मिक गुरु
- **पाठकः**—पुं°—-—पठ् + णिच् + ण्वुल्—छात्र, विद्यार्थी, विद्वान
- **पाठनम्**—नपुं°—-—पठ् + णिच् + ल्युट्—अध्यापन, व्याख्यान देना
- **पाठित**—भू° क° कृ°—-—पठ् + णिच् + क्त—पढ़ाया हुआ, शिक्षा दिया हुआ
- **पाठिन्**—वि°—-—पठ् + णिनि, पाठ + इनि वा—जिसने किसी विषय का अध्ययन किया हो
- **पाठिन्**—वि°—-—पठ् + णिनि, पाठ + इनि वा—जानकार, परिचित
- **पाठीनः**—पुं°—-—पठ् + ईनण्—पुराना या अन्य धार्मिक ग्रंथों की कथा करने वाला
- **पाठीनः**—पुं°—-—पठ् + ईनण्—एक प्रकार की मछली
- **पाणः**—पुं°—-—पण् + घञ्—व्यापार, व्यवसाय
- **पाणः**—पुं°—-—पण् + घञ्—व्यापारी
- **पाणः**—पुं°—-—पण् + घञ्—खेल
- **पाणः**—पुं°—-—पण् + घञ्—खेल पर लगा या गया दाँव
- **पाणः**—पुं°—-—पण् + घञ्—करार
- **पाणः**—पुं°—-—पण् + घञ्—प्रशंसा
- **पाणः**—पुं°—-—पण् + घञ्—हाथ
- **पाणिः**—पुं°—-—पण् + इण्—हाथ
- **पाणिः**—स्त्री°—-—-—मंडी
- **पाणौ कृ**—-—-—-—हाथ में थामना, विवाह करना
- **पाणौ करणम्**—नपुं°—-—-—विवाह
- **पाणिगृहीती**—स्त्री°—पाणिः-गृहीती—-—हाथ से ग्रहण की गई, ब्याही गई, पत्नी
- **पाणिग्रहः**—पुं°—पाणिः-ग्रहः—-—विवाह करना, शादी
- **पाणिग्रहणम्**—नपुं°—पाणिः-ग्रहणम्—-—विवाह करना, शादी
- **पाणिग्रहीतृ**—पुं°—पाणिः-ग्रहीतृ—-—दूल्हा, पति

- **पाणिघः**—पुं°—पाणिः-घः—-—ढोल बजाने वाला
- **पाणिघः**—पुं°—पाणिः-घः—-—कारीगर, शिल्पकार
- **पाणिघातः**—पुं°—पाणिः-घातः—-—हाथ का प्रहार, घूँसा
- **पाणिजः**—पुं°—पाणिः-जः—-—नाख़ून
- **पाणितलम्**—नपुं°—पाणिः-तलम्—-—हथेली
- **पाणिधर्मः**—पुं°—पाणिः-धर्मः—-—विवाह की विधि
- **पाणिपीडनम्**—नपुं°—पाणिः-पीडनम्—-—विवाह
- **पाणिप्रणयिनी**—स्त्री°—पाणिः-प्रणयिनी—-—पत्नी
- **पाणिबन्धः**—पुं°—पाणिः-बन्धः—-—हाथों का मिलना, विवाह
- **पाणिभुज्**—पुं°—पाणिः-भुज्—-—बड़ का वृक्ष, गूलर का वृक्ष
- **पाणिमुक्तम्**—नपुं°—पाणिः-मुक्तम्—-—हाथ के फेंक कर मारा जाने वाला आयुध, अस्त्र
- **पाणिरुह्**—पुं°—पाणिः-रुह्—-—अंगुली का नाख़ून
- **पाणिवादः**—पुं°—पाणिः-वादः—-—तालियाँ बजाना
- **पाणिवादः**—पुं°—पाणिः-वादः—-—ढोल बजाना
- **पाणिसर्ग्या**—स्त्री°—पाणिः-सर्ग्या—-—रस्सी
- **पाणिनिः**—पुं°—-—-—एक प्रसिद्ध वैयाकरण का नाम
- **पाणिनीय**—वि°—-—पाणिनि + छ—पाणिनि से संबंध रखने वाला, या उसके द्वारा बनाया गया
- **पाणिनीयः**—पुं°—-—पाणिनि + छ—पाणिनि का अनुयायी
- **पाणिनीयम्**—नपुं°—-—पाणिनि + छ—पाणिनि द्वारा प्रणीत व्याकरण
- **पाणिधम**—वि°—-—पाणि + ध्मा + खुश्—हाथ से धौंकने वाला, हाथ से फूंकने वाला, हाथ से पीने वाला
- **पाणिधय**—वि°—-—पाणि + धे + खुश्, मुम्—हाथ से धौंकने वाला, हाथ से फूंकने वाला, हाथ से पीने वाला
- **पाण्डर**—वि°—-—पाण्डर + अच्—धवल, पीतधवल, सफ़ेद
- **पाण्डर**—पुं°—-—पाण्डर + अच्—गेरु
- **पाण्डर**—पुं°—-—पाण्डर + अच्—चमेली का फूल
- **पाण्डव**—पुं°—-—पाण्डोः अपत्यम् पाण्डु + अण्—पाण्डु का पुत्र या सन्तान, पांडु के पाँचों पुत्रों में से कोई सा एक- युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव
- **पाण्डवाभीलः**—पुं°—पाण्डव-आभीलः—-—कृष्ण का नाम

- **पाण्डवश्रेष्ठः**—पुं॰—पाण्डव-श्रेष्ठः—-—युधिष्ठिर का नाम
- **पाण्डवीय**—वि॰—-—पांडव + छ—पांडवों से संबंध रखने वाला
- **पाण्डवेय**—वि॰—-—-—पाण्डु का पुत्र या सन्तान, पांडु के पाँचों पुत्रों में से कोई सा एक- युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव
- **पाण्डित्यम्**—नपुं॰—-—पंडित + ष्यञ्—विद्वत्ता, गहन अधिगम
- **पाण्डित्यम्**—नपुं॰—-—पंडित + ष्यञ्—चतुराई, कुशलता, दक्षता, तीक्ष्णता
- **पाण्डु**—वि॰—-—पण्ड् + कु, नि॰ दीर्घः—पीत-धवल, सफ़ेद सा
- **पाण्डुः**—पुं॰—-—पण्ड् + कु, नि॰ दीर्घः—पीत-धवल, या पीताभ श्वेत रंग
- **पाण्डुः**—पुं॰—-—पण्ड् + कु, नि॰ दीर्घः—पीलिया, यरकान
- **पाण्डुः**—पुं॰—-—पण्ड् + कु, नि॰ दीर्घः—सफ़ेद हाथी
- **पाण्डुः**—पुं॰—-—पण्ड् + कु, नि॰ दीर्घः—पांडवों के पिता का नाम
- **पाण्डुकम्बलः**—पुं॰—पाण्डु-कम्बलः—-—सफ़ेद कंबल
- **पाण्डुकम्बलः**—पुं॰—पाण्डु-कम्बलः—-—गरम चादर
- **पाण्डुकम्बलः**—पुं॰—पाण्डु-कम्बलः—-—राजकीय हाथी की झूल
- **पाण्डुपुत्रः**—पुं॰—पाण्डु-पुत्रः—-—पांडु का पुत्र, पाँचों में से कोई एक
- **पाण्डुमृत्तिका**—स्त्री॰—पाण्डु-मृत्तिका—-—सफ़ेद या पीली मिट्टी
- **पाण्डुरागः**—पुं॰—पाण्डु-रागः—-—सफ़ेदी, पीलापन
- **पाण्डुलेखः**—पुं॰—पाण्डु-लेखः—-—खड़िया से बनाई गई कोई रूपरेखा
- **पाण्डुशर्मिला**—स्त्री॰—पाण्डु-शर्मिला—-—द्रौपदी का विशेषण
- **पाण्डुसोपाकः**—पुं॰—पाण्डु-सोपाकः—-—एक वर्ण संकर जाति
- **पाण्डुर**—वि॰—-—पाण्डुवर्णोऽस्यास्ति- पांडु + र—सफेद सा, पीत-धवल, पीताभ-श्वेत, पीला
- **पाण्डुरम्**—नपुं॰—-—पांडु + र—श्वेत कुष्ठ
- **पाण्डुरेक्षुः**—पुं॰—पाण्डुर-इक्षुः—-—एक प्रकार की ईख, पौण्डा
- **पाण्डुरिमन्**—पुं॰—-—पांडुर + इमनिच्—पीलापन, सफेदी या पीला रंग
- **पाण्ड्याः**—पुं॰—-—पांडु देशः, अभिजनोऽस्य राजा वा- पाण्डु + ड्यन्—एक देश का नाम, देश के निवासियों का नाम
- **पाण्ड्यः**—पुं॰—-—पाण्डु + ड्यन्—उस देश का राजा
- **पात**—वि॰—-—पा + क्त—रक्षित, देखभाल किया गया, संधारित
- **पातः**—पुं॰—-—पत् + घञ्—उड़ना, उड़ान

- **पातः**—पुं°—-—पत् + घञ्—उतरना, अवतरण करना, उतार
- **पातः**—पुं°—-—पत् + घञ्—नीचे गिरना, पतन, पराजय
- **चरणपातः**—पुं°—चरण-पातः—-—पैरों में गिरना
- **पातोत्पातौ**—पुं°—-—-—उदय और अस्त
- **पातः**—पुं°—-—पत् + घञ्—नाश, विघटन, बर्वादी
- **पातः**—पुं°—-—पत् + घञ्—आघात प्रहार
- **पातः**—पुं°—-—पत् + घञ्—बहना, छूटना, निकलना
- **पातः**—पुं°—-—पत् + घञ्—डालना, फेंकना, निशाना बनाना
- **पातः**—पुं°—-—पत् + घञ्—आक्रमण, हमला
- **पातः**—पुं°—-—पत् + घञ्—घटना, होना, घटित होना
- **पातः**—पुं°—-—पत् + घञ्—दोष, त्रुटि
- **पातः**—पुं°—-—पत् + घञ्—राहु का विशेषण
- **पातकः**—पुं°—-—पत् + णिच् + ण्वुल्—पाप, जुर्म
- **पातकम्**—नपुं°—-—पत् + णिच् + ण्वुल्—पाप, जुर्म
- **पातङ्गिः**—पुं°—-—पतङ्ग + इञ्—शनि
- **पातङ्गिः**—पुं°—-—पतङ्ग + इञ्—यम
- **पातङ्गिः**—पुं°—-—पतङ्ग + इञ्—कर्ण और सुग्रीव का विशेषण
- **पातञ्जल**—वि°—-—पतंजलि + अण्—पतंजलि द्वारा, रचित
- **पातञ्जलम्**—नपुं°—-—-—पतंजलि द्वारा प्रणीत योगदर्शन
- **पातनम्**—नपुं°—-—पत् + णिच् + ल्युट्—गिरने का कारण बनना, गिराना, नीचे लाना या फेंक देना, पछाड़ देना, नीचे पटक देना
- **पातनम्**—नपुं°—-—पत् + णिच् + ल्युट्—फेंकना, डालना
- **पातनम्**—नपुं°—-—पत् + णिच् + ल्युट्—हीन करना, नीचा दिखाना
- **पातालम्**—नपुं°—-—पतत्यास्मिन्नधर्मेण- पत् + आलञ्—पृथ्वी के नीचे स्थित सात लोकों में से अन्तिम लोक-नागलोक
- **पातालम्**—नपुं°—-—पतत्यास्मिन्नधर्मेण- पत् + आलञ्—निम्नप्रदेश, या नीचे का लोक
- **पातालम्**—नपुं°—-—पतत्यास्मिन्नधर्मेण- पत् + आलञ्—गढ़ा, छिद्र
- **पातालम्**—नपुं°—-—पतत्यास्मिन्नधर्मेण- पत् + आलञ्—वडवानल
- **पातालगङ्गा**—स्त्री°—पातालम्-गङ्गा—-—नीचे के लोक में बहने वाली

- **पातालोकस्**—पुं°—पातालम्-ओकस्—-—राक्षस
- **पातालोकस्**—पुं°—पातालम्-ओकस्—-—नाग या सर्पदैत्य
- **पातालनिलयः**—पुं°—पातालम्-निलयः—-—राक्षस
- **पातालनिलयः**—पुं°—पातालम्-निलयः—-—नाग या सर्पदैत्य
- **पातालनिवासः**—पुं°—पातालम्-निवासः—-—राक्षस
- **पातालनिवासः**—पुं°—पातालम्-निवासः—-—नाग या सर्पदैत्य
- **पातालवासिन्**—पुं°—पातालम्-वासिन्—-—राक्षस
- **पातालवासिन्**—पुं°—पातालम्-वासिन्—-—नाग या सर्पदैत्य
- **पातिकः**—पुं°—-—पात + ठन्—गंगा में रहन वाला सूँस, शिशु मार
- **पातित**—भू° क° कृ°—-—पत् + णिच् + क्त—डाल गया, फेंका गया नीचे गिराया, पटक दिया गया
- **पातित**—भू° क° कृ°—-—पत् + णिच् + क्त—परास्त किया गया, नीचा दिखाया गया
- **पातित**—भू° क° कृ°—-—पत् + णिच् + क्त—नीचा किया गया
- **पातित्यम्**—नपुं°—-—पतित + ष्यञ्—पद या जाति का पतन, पदच्युति, जातिभ्रंशता
- **पातिन्**—वि°—-—पत् + णिनि—जाने वाला, अवतरण करनेवाला, उतरने वाला
- **पातिन्**—वि°—-—पत् + णिनि—पतनशील, डूबनेवाला
- **पातिन्**—वि°—-—पत् + णिनि—पड़ने वाला
- **पातिन्**—वि°—-—पत् + णिनि—गिरने वाला, फेंकने वाला
- **पातिन्**—वि°—-—पत् + णिनि—उड़ेलने वाला, छोड़ने वाला, निकालने वाला
- **पातिली**—स्त्री°—-—पातिः संपातिः पक्षियूथं लीयतेऽत्र-पानि + ली + ड + ङीष्—जाल, फंदा
- **पातिली**—स्त्री°—-—पातिः संपातिः पक्षियूथं लीयतेऽत्र-पानि + ली + ड + ङीष्—छोटा मिट्टी का बर्तन, हांडी
- **पातुक**—वि°—-—पत् + उकञ्—पतनशील
- **पातुक**—वि°—-—पत् + उकञ्—गिरने की आदत वाला
- **पातुकः**—पुं°—-—पत् + उकञ्—पहाड़ का ढलान, चट्टान
- **पातुकः**—पुं°—-—पत् + उकञ्—शिशुमार, सूँस
- **पात्रम्**—नपुं°—-—पाति रक्षति, पिबन्ति अनेन वा-पा + ष्ट्रन्—पीने का बर्तन, प्याला, गिलास
- **पात्रम्**—नपुं°—-—पाति रक्षति, पिबन्ति अनेन वा-पा + ष्ट्रन्—कोई भी बर्तन
- **पात्रम्**—नपुं°—-—पाति रक्षति, पिबन्ति अनेन वा-पा + ष्ट्रन्—किसी वस्तु का आधार, प्राप्तकर्त्ता

- **पात्रम्**—नपुं॰—-—पाति रक्षति, पिबन्ति अनेन वा-पा + ष्ट्रन्—जलाशय
- **पात्रम्**—नपुं॰—-—पाति रक्षति, पिबन्ति अनेन वा-पा + ष्ट्रन्—योग्य व्यक्ति, दान पाने के योग्य, दानपात्र
- **पात्रम्**—नपुं॰—-—पाति रक्षति, पिबन्ति अनेन वा-पा + ष्ट्रन्—अभिनेता, नाटक का पात्र
- **पात्रम्**—नपुं॰—-—पाति रक्षति, पिबन्ति अनेन वा-पा + ष्ट्रन्—राजा का मंत्री
- **पात्रम्**—नपुं॰—-—पाति रक्षति, पिबन्ति अनेन वा-पा + ष्ट्रन्—नहर या नदी का पाट
- **पात्रम्**—नपुं॰—-—पाति रक्षति, पिबन्ति अनेन वा-पा + ष्ट्रन्—योग्यता, औचित्य
- **पात्रम्**—नपुं॰—-—पाति रक्षति, पिबन्ति अनेन वा-पा + ष्ट्रन्—आदेश, हुक्म
- **पात्रोपकरणम्**—नपुं॰—पात्रम्-उपकरणम्—-—घटिया प्रकार की सजावट
- **पात्रपालः**—पुं॰—पात्रम्-पालः—-—चप्पू, डांड
- **पात्रपालः**—पुं॰—पात्रम्-पालः—-—तराजू की डंडी
- **पात्रसंस्कारः**—पुं॰—पात्रम्-संस्कारः—-—बर्तनों को मांज धोकर साफ करना
- **पात्रसंस्कारः**—पुं॰—पात्रम्-संस्कारः—-—नदी का प्रवाह
- **पात्रिक**—वि॰—-—पात्र + ठन्—किसी बर्तन की नाप आढक
- **पात्रिक**—वि॰—-—पात्र + ठन्—योग्य, यथोचित, समुचित
- **पात्रिकम्**—नपुं॰—-—पात्र + ठन्—बर्तन, प्याला, तश्तरी
- **पात्रिय**—वि॰—-—पात्रमर्हति - पात्र + घ—भोजन में भाग लेने के योग्य
- **पात्र्य**—वि॰—-—पात्रमर्हति-पात्र + यत्—भोजन में भाग लेने के योग्य
- **पात्रीयम्**—नपुं॰—-—पात्र + छ—यज्ञीय पात्र
- **पात्रीरः**—पुं॰—-—पाश्यै राति-पात्री + रा + क—आहुति
- **पात्रीरम्**—नपुं॰—-—पाश्यै राति-पात्री + रा + क—आहुति
- **पात्रे बहुलः**—पुं॰—-—पात्रे भोजनसमये एव बहुल संगतो वा न तु कार्ये- अलुक् समास—केवल भोजन का साथी, परान्नभोजी
- **पात्रे बहुलः**—पुं॰—-—पात्रे भोजनसमये एव बहुल संगतो वा न तु कार्ये- अलुक् समास—धोखेबाज, कपटी, पाखंड़ी
- **पात्रेसमितः**—पुं॰—-—पात्रे भोजनसमये एव बहुल संगतो वा न तु कार्ये- अलुक् समास—केवल भोजन का साथी, परान्नभोजी
- **पात्रेसमितः**—पुं॰—-—पात्रे भोजनसमये एव बहुल संगतो वा न तु कार्ये- अलुक् समास—धोखेबाज, कपटी, पाखंड़ी
- **पाथः**—पुं॰—-—पीयतेऽदः, पा + थ—अग्नि
- **पाथः**—पुं॰—-—पीयतेऽदः, पा + थ—सूर्य
- **पाथम्**—नपुं॰—-—पा + थ—जल

- **पाथस्**—नपुं°—-—पा + असुथुन्, थुक् च—जल
- **पाथस्**—नपुं°—-—पा + असुथुन्, थुक् च—हवा, वायु
- **पाथस्**—नपुं°—-—पा + असुथुन्, थुक् च—आहार
- **पाथोजम्**—नपुं°—पाथस्-जम्—-—कमल
- **पाथोजम्**—नपुं°—पाथस्-जम्—-—शंख
- **पाथोदः**—पुं°—पाथस्-दः—-—बादलः
- **पाथोधरः**—पुं°—पाथस्-धरः—-—बादलः
- **पाथोधिः**—पुं°—पाथस्-धिः—-—समुद्र
- **पाथोनिधिः**—पुं°—पाथस्-निधिः—-—समुद्र
- **पाथःपतिः**—पुं°—पाथस्-पतिः—-—समुद्र
- **पाथेयम्**—नपुं°—-—पथिन् + ढञ्—भोज्य सामग्री जिसे यात्री राह में खाने के लिए साथ ले जाता है, मार्गव्यय
- **पाथेयम्**—नपुं°—-—पथिन् + ढञ्—कन्याराशि
- **पादः**—पुं°—-—पद् + घञ्—पैर (चाहे मनुष्य का हो या किसी जानवर का)
- **पादः**—पुं°—-—पद् + घञ्—प्रकाश की किरण
- **पादः**—पुं°—-—पद् + घञ्—पैर या पावा (जड़ पदार्थों का, खाट आदि का)
- **पादः**—पुं°—-—पद् + घञ्—वृक्ष की जड़ या पैर
- **पादः**—पुं°—-—पद् + घञ्—गिरिपाद, तलहटी
- **पादः**—पुं°—-—पद् + घञ्—चौथाई, चौथाभाग
- **पादः**—पुं°—-—पद् + घञ्—श्लोक का एक चरण, पंक्ति
- **पादः**—पुं°—-—पद् + घञ्—किसी पुस्तक के अध्याय का चौथा भाग
- **पादः**—पुं°—-—पद् + घञ्—भाग
- **पादः**—पुं°—-—पद् + घञ्—स्तंभ, खंभा
- **पादाग्रम्**—नपुं°—पादः-अग्रम्—-—पैर का आगे का भाग
- **पादाङ्कः**—पुं°—पादः-अङ्कः—-—पदचिह्न
- **पादाङ्गदम्**—नपुं°—पादः-अङ्गदम्—-—पैर का आभूषण, नूपुर, पायल
- **पाददी**—पुं°—पादः-दी—-—पैर का आभूषण, नूपुर, पायल
- **पादाङ्गुष्ठः**—पुं°—पादः-अङ्गुष्ठः—-—पैर का अंगूठा

- **पादान्तः**—पुं°—पादः-अन्तः—-—पैरों का अन्तिम भाग
- **पादान्तरम्**—नपुं°—पादः-अन्तरम्—-—एक पग के बीच का अन्तराल, एक पग की दूरी
- **पादान्तरे**—अव्य°—पादः-अन्तरे—-—एक पद की दूरी के बाद
- **पादान्तरे**—अव्य°—पादः-अन्तरे—-—निकट, सटा हुआ
- **पादाम्बूः**—नपुं°—पादः-अम्बुः—-—छाछ जिसमें एक चौथाई पानी हो
- **पादाम्भस्**—नपुं°—पादः-अम्भस्—-—जल जिसमें श्रद्धेय व्यक्तियों के चरण धोये हो
- **पादरविन्दम्**—नपुं°—पादः-अरविन्दम्—-—कमल जैसा पैर, कमलचरण
- **पादकमलम्**—नपुं°—पादः-कमलम्—-—कमल जैसा पैर, कमलचरण
- **पादपङ्कजम्**—नपुं°—पादः-पङ्कजम्—-—कमल जैसा पैर, कमलचरण
- **पादपद्मम्**—नपुं°—पादः-पद्मम्—-—कमल जैसा पैर, कमलचरण
- **पादालिन्दी**—स्त्री°—पादः-अलिन्दी—-—किश्ती, नाव
- **पादावसेचनम्**—नपुं°—पादः-अवसेचनम्—-—चरण धोना
- **पादावसेचनम्**—नपुं°—पादः-अवसेचनम्—-—पैर धोने के लिए पानी
- **पादाघातः**—पुं°—पादः-आघातः—-—ठोकर
- **पादानत**—वि°—पादः-आनत—-—भूशापी, पैरों में पड़ा हुआ
- **पादावर्तः**—पुं°—पादः-आवर्तः—-—कुएँ से जल निकालने के लिए पैरों से चलाया जाने वाला यंत्र, रहट
- **पादासनम्**—नपुं°—पादः-आसनम्—-—पैर रखने का पीढ़ा
- **पादास्फालनम्**—नपुं°—पादः-आस्फालनम्—-—पैरों से रौंदना, कुचलना, रुक रुक कर आगे बढने की चेष्टा
- **पादाहत**—वि°—पादः-आहत—-—ठोकर खाया हुआ, ठुकराया हुआ
- **पादोदकम्**—नपुं°—पादः-उदकम्—-—पैर धोने के लिए पानी
- **पादोदकम्**—नपुं°—पादः-उदकम्—-—वह पानी जिसमें पुण्यात्मा, तथा सम्मानित व्यक्तियों ने पैर धोये है ओर इसीलिए जो पवित्र समझा जाता हैं
- **पादजलम्**—नपुं°—पादः-जलम्—-—पैर धोने के लिए पानी
- **पादजलम्**—नपुं°—पादः-जलम्—-—वह पानी जिसमें पुण्यात्मा, तथा सम्मानित व्यक्तियों ने पैर धोये है ओर इसीलिए जो पवित्र समझा जाता हैं
- **पादोदरः**—पुं°—पादः-उदरः—-—साँप
- **पादकटकः**—पुं°—पादः-कटकः—-—नूपुर, पायल
- **पादकटकम्**—नपुं°—पादः-कटकम्—-—नूपुर, पायल
- **पादकीलिका**—स्त्री°—पादः-कीलिका—-—नूपुर, पायल

- **पादक्षेपः**—पुं°—पादः-क्षेपः—-—कदम, पग
- **पादग्रन्थिः**—स्त्री°—पादः-ग्रन्थिः—-—टखना
- **पादग्रहणम्**—नपुं°—पादः-ग्रहणम्—-—(आदरयुक्त अभिवादन के रूप में) पैर पकड़ना
- **पादचतुरः**—पुं°—पादः-चतुरः—-—मिथ्यानिन्दक
- **पादचतुरः**—पुं°—पादः-चतुरः—-—बकरा
- **पादचतुरः**—पुं°—पादः-चतुरः—-—रेतीला तट
- **पादचतुरः**—पुं°—पादः-चतुरः—-—ओला
- **पादचत्वरः**—पुं°—पादः-चत्वरः—-—मिथ्यानिन्दक
- **पादचत्वरः**—पुं°—पादः-चत्वरः—-—बकरा
- **पादचत्वरः**—पुं°—पादः-चत्वरः—-—रेतीला तट
- **पादचत्वरः**—पुं°—पादः-चत्वरः—-—ओला
- **पादचारः**—पुं°—पादः-चारः—-—पैदल चलना, टहलना
- **पादचारिन्**—वि°—पादः-चारिन्—-—पैदल चलने वाला, पैदल योद्धा
- **पादचारिन्**—पुं°—पादः-चारिन्—-—फेरी वाला
- **पादचारिन्**—पुं°—पादः-चारिन्—-—पैदल सैनिक
- **पादजः**—पुं°—पादः-जः—-—शूद्र
- **पादजाहम्**—नपुं°—पादः-जाहम्—-—पपोटा, टखने की हड्डी
- **पादतलम्**—नपुं°—पादः-तलम्—-—पैर का तलवा
- **पादत्रः**—पुं°—पादः-त्रः—-—जूता, बूट
- **पादत्रा**—स्त्री°—पादः-त्रा—-—जूता, बूट
- **पादत्राणम्**—नपुं°—पादः-त्राणम्—-—जूता, बूट
- **पादपः**—पुं°—पादः-पः—-—वृक्ष
- **पादखण्डः**—पुं°—पादः-खण्डः—-—बाग, वृक्षों का झुरमुट
- **पादखण्डम्**—नपुं°—पादः-खण्डम्—-—बाग, वृक्षों का झुरमुट
- **पादपालिका**—स्त्री°—पादः-पालिका—-—नूपुर, पाजेब
- **पादपाशः**—पुं°—पादः-पाशः—-—पैकड़ा, पशुओं के पैरों को बाँधने की रस्सी
- **पादपाशी**—पुं°—पादः-पाशी—-—हथकड़ी

- **पादपाशी**—पुं°—पादः-पाशी—-—चटाई
- **पादपाशी**—पुं°—पादः-पाशी—-—लता
- **पादटीठः**—पुं°—पादः-टीठः—-—पैर रखने का पीढ़ा
- **पादठम्**—नपुं°—पादः-ठम्—-—पैर रखने का पीढ़ा
- **पादपूरणम्**—नपुं°—पादः-पूरणम्—-—पंक्ति पूरी करना
- **पादपूरणम्**—नपुं°—पादः-पूरणम्—-—पादपूरक
- **पादप्रक्षालनम्**—नपुं°—पादः-प्रक्षालनम्—-—पैर धोना
- **पादप्रतिष्ठानम्**—नपुं°—पादः-प्रतिष्ठानम्—-—पैर धोना
- **पादप्रहारः**—पुं°—पादः-प्रहारः—-—ठोकर
- **पादबन्धनम्**—नपुं°—पादः-बन्धनम्—-—बेड़ी
- **पादमुद्रा**—स्त्री°—पादः-मुद्रा—-—पदचिह्न
- **पादमूलम्**—नपुं°—पादः-मूलम्—-—पपोटा
- **पादमूलम्**—नपुं°—पादः-मूलम्—-—पैर का तलवा
- **पादमूलम्**—नपुं°—पादः-मूलम्—-—एडी
- **पादमूलम्**—नपुं°—पादः-मूलम्—-—पहाड़ की तलहटी
- **पादमूलम्**—नपुं°—पादः-मूलम्—-—किसी से बात करने की विनम्र रीति
- **पादरसस्**—नपुं°—पादः-रसस्—-—पैरों की धूल
- **पादरज्जुः**—स्त्री°—पादः-रज्जुः—-—हाथी के पैर बाँधने की चमड़े की रस्सी
- **पादरथी**—स्त्री°—पादः-रथी—-—जूता, बूट
- **पादरोहः**—पुं°—पादः-रोहः—-—बड़ का पेड़
- **पादरोहणः**—पुं°—पादः-रोहणः—-—बड़ का पेड़
- **पादवन्दनम्**—नपुं°—पादः-वन्दनम्—-—चरणवंदना, चरणों में प्रणाम
- **पादविरजस्**—नपुं°—पादः-विरजस्—-—जूता, बूट
- **पादविरजस्**—पुं°—पादः-विरजस्—-—देवता
- **पादशाखा**—स्त्री°—पादः-शाखा—-—पैर की अंगुली
- **पादशैलः**—पुं°—पादः-शैलः—-—गिरिपाद, पहाड़ की तलहटी में विद्यमान पहाड़ी
- **पादशोथः**—पुं°—पादः-शोथः—-—पैर की सूजन

- **पादशौचम्**—नपुं°—पादः-शौचम्—-—पैर धोकर साफ करना, पैर धोना
- **पादसेवनम्**—नपुं°—पादः-सेवनम्—-—पैर छूकर सम्मान प्रदर्शित करना
- **पादसेवनम्**—नपुं°—पादः-सेवनम्—-—सेवा
- **पादसेवा**—स्त्री°—पादः-सेवा—-—पैर छूकर सम्मान प्रदर्शित करना
- **पादसेवा**—स्त्री°—पादः-सेवा—-—सेवा
- **पादस्फोटः**—पुं°—पादः-स्फोटः—-—बवाई फटना विपदिका, सरदी से पैर फटना
- **पादहत**—वि°—पादः-हत—-—ठुकराया हुआ
- **पादविकः**—पुं°—-—पदवी + ठक्—यात्री, पथिक
- **पादात्**—पुं°—-—पादाभ्यामतति- पाद + अत + क्विप्—पैदल सिपाही, प्यादा
- **पादातः**—पुं°—-—पदातीनां समूहः- पदति + अण्—पैदल-सिपाही
- **पादातम्**—नपुं°—-—पदातीनां समूहः- पदति + अण्—पैदल-सेना
- **पादातिः**—पुं°—-—पाद + अत् + इन् —पैदल-सिपाही
- **पादाविकः**—पुं°—-—पादेन अवः रक्षणम्- पादाव + ठक्—पैदल-सिपाही
- **पादिक**—वि°—-—पाद + ठक्—चतुर्थांश, चौथा भाग
- **पादिन्**—वि°—-—पाद + इनि—सपाद, पैरों वाला
- **पादिन्**—वि°—-—पाद + इनि—श्लोक की भांति चार चरणों से युक्त
- **पादिन्**—वि°—-—पाद + इनि—चौथे भाग को लेने वाला, या चतुर्थांश का अधिकारी
- **पादिनः**—पुं°—-—पाद + इनि—चौथा भाग, चतुर्थांश
- **पादुकः**—वि°—-—पद् + उकञ्—पैदल चलने वाला
- **पादुका**—स्त्री°—-—पद् + उकञ्+टाप्—खड़ाऊँ, जूता
- **पादुककारः**—पुं°—पादुकः-कारः—-—मोची, जुता बनाने वाला
- **पादू**—स्त्री°—-—पद् + ऊ, णित्—जूता
- **पादूकृत्**—पुं°—पादू-कृत्—-—जूता बनाने वाला
- **पाद्य**—वि°—-—पाद + यत्—पैरों से संबंध रखने वाला
- **पाद्यम्**—नपुं°—-—पाद + यत्—पैर धोने के लिए जल
- **पानम्**—नपुं°—-—पा + ल्युट्—पीना, चढ़ा जाना, (ओष्ठ का) चुम्बन
- **पानम्**—नपुं°—-—पा + ल्युट्—सुरापान करना

- **पानम्**—नपुं॰—-—पा + ल्युट्—पान के योग्य, पेय पदार्थ
- **पानम्**—नपुं॰—-—पा + ल्युट्—पान- पात्र
- **पानम्**—नपुं॰—-—पा + ल्युट्—तेज करना, पैनाना
- **पानम्**—नपुं॰—-—पा + ल्युट्—बचाना, रक्षा
- **पानः**—पुं॰—-—पा + ल्युट्—शराब खींचने वाला, कलवार
- **पानागारः**—पुं॰—पानम्-अगारः—-—मदिरालय
- **पानागारम्**—नपुं॰—पानम्-अगारम्—-—मदिरालय
- **पानागारः**—पुं॰—पानम्-आगारः—-—मदिरालय
- **पानागारम्**—नपुं॰—पानम्-आगारम्—-—मदिरालय
- **पानत्ययः**—पुं॰—पानम्-अत्ययः—-—अत्यधिक पीना
- **पानगोष्ठिका**—स्त्री॰—पानम्-गोष्ठिका—-—शराबियों की मंडली
- **पानगोष्ठिका**—स्त्री॰—पानम्-गोष्ठिका—-—शराब की दुकार, मदिरालय
- **पानगोष्ठी**—स्त्री॰—पानम्-गोष्ठी—-—शराबियों की मंडली
- **पानगोष्ठी**—स्त्री॰—पानम्-गोष्ठी—-—शराब की दुकार, मदिरालय
- **पानप**—वि॰—पानम्-प—-—सुरापान करने वाला
- **पानपात्रम्**—नपुं॰—पानम्-पात्रम्—-—पान-पात्र, प्याला
- **पानभाजनम्**—नपुं॰—पानम्-भाजनम्—-—पान-पात्र, प्याला
- **पानभाण्डम्**—नपुं॰—पानम्-भाण्डम्—-—पान-पात्र, प्याला
- **पानभूः**—स्त्री॰—पानम्-भूः—-—शराब पीने का स्थान
- **पानभूमिः**—स्त्री॰—पानम्-भूमिः—-—शराब पीने का स्थान
- **पानभूमी**—स्त्री॰—पानम्-भूमी—-—शराब पीने का स्थान
- **पानमण्डलम्**—नपुं॰—पानम्-मण्डलम्—-—शराबियों की मंडली
- **पानरत**—वि॰—पानम्-रत—-—सुरापान की लतवाला
- **पानवणिज्**—पुं॰—पानम्-वणिज्—-—शराब-बिक्रेता
- **पानविभ्रमः**—पुं॰—पानम्-विभ्रमः—-—नशा
- **पानशौण्ड**—वि॰—पानम्-शौण्ड—-—पियक्कड़, अत्यधिक पीने वाला
- **पानकम्**—नपुं॰—-—पान + कन्—पानीय, पेय, घूंट

- **पानिकः**—पुं॰—-—पान + ठक्—शराब-बिक्रेता, कलाल
- **पानिलम्**—नपुं॰—-—पान + इलच्—पान-पात्र, प्याला
- **पानीयम्**—नपुं॰—-—पा + अनीयर्—जल
- **पानीयम्**—नपुं॰—-—पा + अनीयर्—पेय, घूँट, पानीय- पीने के योग्य शर्बत आदि
- **पानीयनकुलः**—पुं॰—पानीयम्-नकुलः—-—ऊदबिलाव
- **पानीयवर्णिका**—स्त्री॰—पानीयम्-वर्णिका—-—रेत, बालू
- **पानीयशाला**—स्त्री॰—पानीयम्-शाला—-—प्याऊ, जहाँ यात्रियों को पानी पिलाया जाय
- **पानीयशालिका**—स्त्री॰—पानीयम्-शालिका—-—प्याऊ, जहाँ यात्रियों को पानी पिलाया जाय
- **पान्थः**—पुं॰—-—पन्थानं नित्यं गच्छति- पथिन् + अण्, पंथादेशः—यात्री, बटोही
- **पाप**—वि॰—-—पाति रक्षति, आत्मानम् अस्मात्- पा + प—अनिष्टकर, पापमय, दुष्ट, दुर्वृत्त
- **पाप**—वि॰—-—पाति रक्षति, आत्मानम् अस्मात्- पा + प—उपद्रवकारी, विनाशक, अभिशप्त
- **पाप**—वि॰—-—पाति रक्षति, आत्मानम् अस्मात्- पा + प—नीच, अधम, पतित
- **पाप**—वि॰—-—पाति रक्षति, आत्मानम् अस्मात्- पा + प—अशुभ, प्रद्वेषी, अनिष्ट सूचक (पाप ग्रह आदि)
- **पापम्**—नपुं॰—-—-—बुराई, बुरी अवस्था, दुर्भाग्य
- **पापम्**—नपुं॰—-—-—बुराई, जुर्म, दुर्व्यसन, दोष
- **पापः**—पुं॰—-—-—पाजी, पापी, दुष्ट, दुराचारी
- **पापाधम**—वि॰—पाप-अधम—-—अत्यंत दुष्ट, अधम
- **पापापनुत्तिः**—स्त्री॰—पाप-अपनुत्तिः—-—प्रायश्चित्त
- **पापाहः**—नपुं॰—पाप-अहः—-—दुर्भाग्यपूर्ण दिवस
- **पापाचार**—वि॰—पाप-आचार—-—पापमय आचरण वाला, पापपूर्ण जीवन बिताने वाला, दुर्व्यसनी, दुष्ट
- **पापात्मन्**—वि॰—पाप-आत्मन्—-—दुष्टमना, पापपूर्ण, दुष्ट
- **पापात्मन्**—पुं॰—पाप-आत्मन्—-—पापी
- **पापाशय**—वि॰—पाप-आशय—-—दुष्ट इरादे वाला, दुष्ट हृदय
- **पापकर**—वि॰—पाप-कर—-—पापपूर्ण, पापी, अधम
- **पापकारिन्**—वि॰—पाप-कारिन्—-—पापपूर्ण, पापी, अधम
- **पापकृत्**—वि॰—पाप-कृत्—-—पापपूर्ण, पापी, अधम
- **पापक्षयः**—पुं॰—पाप-क्षयः—-—पाप का दूर करना, पाप का नाश

- **पापग्रहः**—पुं°—पाप-ग्रहः—-—दुष्ट ग्रह, प्रद्वेषी
- **पापघ्न**—वि°—पाप-घ्न—-—पाप को दूर करने वाला, प्रायश्चित्त कारी
- **पापचर्यः**—पुं°—पाप-चर्यः—-—पापी
- **पापचर्यः**—पुं°—पाप-चर्यः—-—राक्षस
- **पापदृष्टि**—वि°—पाप-दृष्टि—-—बुरी निगाह वाला, खोटी आँख वाला
- **पापधी**—वि°—पाप-धी—-—दुष्ट हृदय, दुर्बुद्धि
- **पापनापितः**—पुं°—पाप-नापितः—-—चालाक या दुष्ट नाई
- **पापनाशन**—वि°—पाप-नाशन—-—पापनाशक या प्रायश्चितकारी
- **पापपतिः**—पुं°—पाप-पतिः—-—जार, उपपति
- **पापपुरुषः**—पुं°—पाप-पुरुषः—-—दुष्ट प्रकृति वाला मनुष्य
- **पापफल**—वि°—पाप-फल—-—अनिष्टकर, अशुभ
- **पापबुद्धि**—वि°—पाप-बुद्धि—-—दुष्टहृदय, दुष्ट, दुश्चरित्र
- **पापभाव**—वि°—पाप-भाव—-—दुष्टहृदय, दुष्ट, दुश्चरित्र
- **पापमति**—वि°—पाप-मति—-—दुष्टहृदय, दुष्ट, दुश्चरित्र
- **पापभाज्**—वि°—पाप-भाज्—-—पापपूर्ण, पापी
- **पापमुक्तम्**—वि°—पाप-मुक्तम्—-—पाप से छूटा हुआ, पवित्र
- **पापमोचनम्**—नपुं°—पाप-मोचनम्—-—पाप का नाश
- **पापविनाशनम्**—नपुं°—पाप-विनाशनम्—-—पाप का नाश
- **पापयोनि**—वि°—पाप-योनि—-—नीच जाति में उत्पन्न
- **पापयोनिः**—स्त्री°—पाप-योनिः—-—नीच कुल में जन्म
- **पापरोगः**—पुं°—पाप-रोगः—-—कोई बुरा रोग
- **पापरोगः**—पुं°—पाप-रोगः—-—शीतला, चेचक
- **पापशील**—वि°—पाप-शील—-—दुष्ट कार्यों में प्रवृत्त होने वाला, दुष्टप्रकृति, दुष्टहृदय
- **पापसङ्कल्प**—वि°—पाप-सङ्कल्प—-—दुष्टहृदय, दुरात्मा
- **पापसङ्कल्पः**—पुं°—पाप-सङ्कल्पः—-—दुष्ट विचार
- **पापार्द्धिः**—पुं°—-—पापानामृद्धिर्यत्र- ब° स°—शिकार, आखेट
- **पापल**—वि°—-—पाप + ला + क—पाप कमाने वाला, पाप कर

- **पापिन्**—वि॰—-—पाप + इनि—पापपूर्ण, दुष्ट
- **पापिन्**—पुं॰—-—-—पाप करने वाला
- **पापिष्ठ**—वि॰—-—अतिशयेन पापी- पाप + इष्ठन्—अत्यंत पापपूर्ण, अधम, दुष्टतम
- **पापीयस्**—वि॰—-—पाप ईयसुन्, अयमनयो रतिशयेन पापी, तुलना-अवस्था—अपेक्षाकृत पापी, अपेक्षाकृत दुष्ट या अनिष्टकर
- **पाप्मन्**—पुं॰—-—पा + मानिन्, पुगागमः—पाप, जुर्म, दुष्टता, अपराध
- **पामन्**—पुं॰—-—पा + मनिन्—एक प्रकार का चर्मरोग, खुजली
- **पामघ्नः**—पुं॰—पामन्-घ्नः—-—गंधक
- **पामन**—वि॰—-—पामन् + न, नलोपः—खुजली रोग से ग्रस्त, सकुण्डू
- **पामर**—वि॰—-—-—खुजली वाला, अनिष्टकर, दुष्ट
- **पामर**—वि॰—-—-—नीच, गंवारु, अधम
- **पामर**—वि॰—-—-—मूर्ख, जड़
- **पामर**—वि॰—-—-—निर्धन, असहाय
- **पामरः**—वि॰—-—-—मूढ, जड़बुद्धि
- **पामरः**—वि॰—-—-—दुष्ट या नीच पुरुष
- **पामरः**—वि॰—-—-—अत्यंत नीच कर्म में प्रवृत्त व्यक्ति
- **पामा**—पुं॰—-—पामन् + ङीप्निषेधः, नलोपः, दीर्घः—
- **पामारिः**—पुं॰—पामा-अरिः—-—गंधक
- **पायना**—स्त्री॰—-—पा + णिच् + युच् + टाप्—पीलाना
- **पायना**—स्त्री॰—-—पा + णिच् + युच् + टाप्—सींचना, तर करना
- **पायना**—स्त्री॰—-—पा + णिच् + युच् + टाप्—तेज करना, पैनाना
- **पायस**—वि॰—-—पयस् + अण्—दूध या पानी से बना हुआ
- **पायसः**—पुं॰—-—पयस् + अण्—खीर, दूध में उबले हुए चावल
- **पायसः**—पुं॰—-—पयस् + अण्—तारपीन
- **पायसम्**—नपुं॰—-—पयस् + अण्—खीर, दूध में उबले हुए चावल
- **पायसम्**—नपुं॰—-—पयस् + अण्—तारपीन
- **पायसम्**—नपुं॰—-—पयस् + अण्—दूध
- **पायिकः**—पुं॰—-—-—पैदल सिपाही

- **पायुः**—पुं°—-—पा + उण्, युक—गुदा, मलद्वार
- **पाय्यम्**—नपुं°—-—मा + ण्यत्, नि° पत्वम्, युगागमः—जल
- **पाय्यम्**—नपुं°—-—मा + ण्यत्, नि° पत्वम्, युगागमः—पेय पदार्थ
- **पाय्यम्**—नपुं°—-—मा + ण्यत्, नि° पत्वम्, युगागमः—प्ररक्षण
- **पाय्यम्**—नपुं°—-—मा + ण्यत्, नि° पत्वम्, युगागमः—परिमाण
- **पारः**—पुं°—-—परं तीरं परमेव अण्—या नदी का परला- सामने वाला दूसरा किनारा
- **पारः**—पुं°—-—परं तीरं परमेव अण्—किसी भी वस्तु का विरोधी पक्ष
- **पारः**—पुं°—-—परं तीरं परमेव अण्—किसी वस्तु का अन्तिम किनारा, अन्तिम सीमा
- **पारः**—पुं°—-—परं तीरं परमेव अण्—किसी वस्तु का अधिकतम परिमाण, समष्टि
- **पारं गम्**—-—-—पार जाना, ऊपर चढ़ना
- **पारं गम्**—-—-—निष्पन्न करना, पूरा करना,
- **पारं गमि**—पुं°—-—-—पार जाना, ऊपर चढ़ना
- **पारं गमि**—पुं°—-—-—निष्पन्न करना, पूरा करना,
- **पारं गम्या**—स्त्री°—-—-—पार जाना, ऊपर चढ़ना
- **पारं गम्या**—स्त्री°—-—-—निष्पन्न करना, पूरा करना,
- **पारः**—पुं°—-—-—पारा
- **पारापारम्**—नपुं°—पारः-अपारम्—-—दोनों तट, पास का और दूर का
- **पारावारम्**—नपुं°—पारः-अवारम्—-—दोनों तट, पास का और दूर का
- **पारावारः**—पुं°—पारः-अवारः—-—समुद्र, सागर
- **पारायणम्**—नपुं°—पारः-अयणम्—-—पार जाना
- **पारायणम्**—नपुं°—पारः-अयणम्—-—पूरा पढ़ना, अनुशीलन, आद्योपान्त अध्ययन
- **पारायणम्**—नपुं°—पारः-अयणम्—-—समग्रता, सम्पूर्णता, या किसी वस्तु की समष्टि
- **पारायणी**—स्त्री°—पारः-अयणी—-—सरस्वती देवी
- **पारायणी**—स्त्री°—पारः-अयणी—-—चिन्तन, मनन
- **पारायणी**—स्त्री°—पारः-अयणी—-—कृत्य, कर्म
- **पारायणी**—स्त्री°—पारः-अयणी—-—प्रकाश
- **पारकाम**—वि°—पारः-काम—-—दूसरे किनारे तक जाने का इच्छुक

- **पारग**—वि०—पारः-ग—-—पार जाने वाला, नाव से पार उतरने वाला
- **पारग**—वि०—पारः-ग—-—जो पार पहुंच चुका है, जिसने किसी ग्रंथ का पूरा अध्ययन कर लिया है, पूर्णपरिचित, पूरा ज्ञाता
- **पारगत**—वि०—पारः-गत—-—जो तट के दूसरी ओर पहुंच गया है
- **पारगामिन्**—वि०—पारः-गामिन्—-—जो तट के दूसरी ओर पहुंच गया है
- **पारदर्शक**—वि०—पारः-दर्शक—-—सामने के तट को दिखलाने वाला
- **पारदर्शक**—वि०—पारः-दर्शक—-—जिसके आर पार दिखाई दे
- **पारदृश्वन्**—वि०—पारः-दृश्वन्—-—दूरदर्शी, बुद्धिमान्, समझदार
- **पारदृश्वन्**—वि०—पारः-दृश्वन्—-—जिसने किसी वस्तु का दूसरा किनारा देख लिया है, जिसने किसी बात को पूर्ण रूप से जान लिया है
- **पारक**—वि०—-—पृ + ण्वुल्—पार करने की योग्यता रखने वाला
- **पारक**—वि०—-—पृ + ण्वुल्—आगे ले जाने वाला, बचाने वाला, सौंपने वाला
- **पारक**—वि०—-—पृ + ण्वुल्—प्रसन्न करने वाला, संतुष्ट करने वाला
- **पारक्य**—वि०—-—परस्मै लोकाय हितम्- पर + ष्यञ्, कुक्—पराया, दूसरे का
- **पारक्य**—वि०—-—परस्मै लोकाय हितम्- पर + ष्यञ्, कुक्—दूसरों के लिए उद्दिष्ट
- **पारक्य**—वि०—-—परस्मै लोकाय हितम्- पर + ष्यञ्, कुक्—विरोधी, शत्रुतापूर्ण
- **पारक्यम्**—नपुं०—-—परस्मै लोकाय हितम्- पर + ष्यञ्, कुक्—परलोक साधन, पवित्र आचरण
- **पारग्रामिक**—वि०—-—परग्राम + ठक्—पराया, विरोधी, शत्रुतापूर्ण
- **पारज्**—पुं०—-—पार् + णिच् + अजि—सोना, स्वर्ण
- **पारजायिकः**—पुं०—-—परछायां गच्छति- परजाया + ठक्—व्यभिचारी पुरुष
- **पारटीटः**—पुं०—-—-—पत्थर, चट्टान्
- **पारटीनः**—पुं०—-—-—पत्थर, चट्टान
- **पारण**—वि०—-—पृ + ल्युट्—पार ले जाने वाला, उबारने वाला
- **पारण**—वि०—-—पृ + ल्युट्—बचाने वाला, उद्धार करने वाला
- **पारणः**—पुं०—-—पृ + ल्युट्—बादल
- **पारणः**—पुं०—-—पृ + ल्युट्—संतोष
- **पारणम्**—नपुं०—-—पृ + ल्युट्—निष्पन्न करना, पूरा करना,
- **पारणम्**—नपुं०—-—पृ + ल्युट्—पाठ करना, बांचना
- **पारणम्**—नपुं०—-—पृ + ल्युट्—व्रत (उपवास) के पश्चात् भोजन करना, व्रत खोलना

- **पारतः**—पुं॰—-—पारं तनोति - पार + तन् + ड—पारा
- **पारतंत्र्यम्**—नपुं॰—-—परतंत्र + ष्यञ्—पराश्रयता, अधीनता, अनुसेवा
- **पारत्रिक**—वि॰—-—परत्र + ठक्—परलोक फल
- **पारदः**—पुं॰—-—पारं ददाति- पार + दा + क—पारा
- **पारदारिकः**—पुं॰—-—परदारा + ठक्—व्यभिचारी, परदारगामी
- **परदार्यम्**—नपुं॰—-—परदार + ष्यञ्—व्यभिचार, परदारगमन
- **पारदेश्य**—वि॰—-—परदेश + ष्यञ्—विदेश से संबंध रखने वाला, विदेशी
- **पारदेश्यः**—वि॰—-—परदेश + ष्यञ्—अन्य देश का रहने वाला
- **पारदेश्यः**—पुं॰—-—परदेश + ष्यञ्—यात्री
- **पारभृतम्**—नपुं॰—-—इसका शुद्ध रूप संभवतः 'प्राभृत' है—उपहार, भेंट
- **पारमहंस्यम्**—नपुं॰—-—परमहंस + ष्यञ्—सर्वोत्कृष्ट सन्यासवृत्ति, मनन
- **पारमहंस्यपरि**—अव्य॰—पारमहंस्यम्-परि—-—इस प्रकार के सन्यासी से सम्बन्ध रखने वाला
- **पारमार्थिक**—वि॰—-—परमार्थ + ठक्—'परमार्थ' अर्थात् सर्वोपरि सत्य अथवा अध्यात्म ज्ञान से संबन्ध रखने वाला
- **पारमार्थिक**—वि॰—-—परमार्थ + ठक्—वास्तविक, आवश्यक, यथार्थ में विद्यमान सत्ता विविधा पारमार्थिकी
- **पारमार्थिक**—वि॰—-—परमार्थ + ठक्—सत्य का ध्यान रखने वाला
- **पारमार्थिक**—वि॰—-—परमार्थ + ठक्—सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्कृष्ट, सर्वोत्तम
- **पारमिक**—वि॰—-—परम + ठक्—सर्वोपरि, सर्वोत्तम, मुख्य, प्रधान
- **पारमित**—वि॰—-—पारमितः प्राप्तः- अलुक् स॰—दूसरे तट या किनारे पर गया हुआ
- **पारमित**—वि॰—-—पारमितः प्राप्तः- अलुक् स॰—पार पहुँचा हुआ, आर-पार गया हुआ
- **पारमित**—वि॰—-—पारमितः प्राप्तः- अलुक् स॰—परमोत्कृष्ट
- **पारमेष्ठ्यम्**—नपुं॰—-—परमेष्ठिन् + प्यञ्—सर्वोपरिता, उच्चतम पद
- **पारमेष्ठ्यम्**—नपुं॰—-—परमेष्ठिन् + प्यञ्—राजचिह्न
- **पारम्परीण**—वि॰—-—परंपरा + खञ्—परंपरा प्राप्त, आनुवंशिक, वंशक्रमागत
- **पारम्परीय**—वि॰—-—परम्परा + छ—परम्पराप्राप्त, आनुवंशिक
- **पारम्पर्यम्**—नपुं॰—-—परम्परा + ष्यञ्—आनुवंशिक क्रम, अविच्छिन्न क्रम
- **पारम्पर्यम्**—नपुं॰—-—परम्परा + ष्यञ्—परम्परा से प्राप्त शिक्षा, परम्परा
- **पारम्पर्यम्**—नपुं॰—-—परम्परा + ष्यञ्—अन्तर्वर्तिता, मध्यस्थता

- **पारम्पर्योपदेशः**—पुं°—पारम्पर्यम्-उपदेशः—-—परंपरा प्राप्त शिक्षा, परम्परा
- **पारयिष्णु**—वि°—-—पार् + णिच् + इष्णुच्—सुहावना, तृप्तिकारक
- **पारयिष्णु**—वि°—-—पार् + णिच् + इष्णुच्—किसी कार्य को पूरा करने के योग्य, पार जाने के लिए समर्थ
- **पारलौकिक**—वि°—-—परलोकाय हितम् पर लोक + ठक् द्विपदवृद्धिः—परलोक से संबंध रखने वाला या परलोकोपयोगी
- **पारवतः**—पुं°—-—पारापत (पार + आ + पत् + अच्)—कबूतर
- **पारवश्यम्**—नपुं°—-—परवेश + ष्यञ्—परावलंबन, पराश्रयता, अधीनता
- **पारशव**—वि°—-—परशु + अण्—लोहे का बना हुआ
- **पारशव**—वि°—-—परशु + अण्—कुठार से संबंध रखने वाला
- **पारशवः**—पुं°—-—परशु + अण्—लोहा
- **पारशवः**—पुं°—-—परशु + अण्—शूद्र स्त्री में उत्पन्न ब्राह्मण का पुत्र
- **पारशवः**—पुं°—-—परशु + अण्—दोगला, हरामी
- **पारश्वधः**—पुं°—-—परश्वधः प्रहरणमस्य- अण्—फरसा धारण करने वाला, कुठार धारी
- **पारश्वधिकः**—पुं°—-—परश्वध + ठक्—फरसा धारण करने वाला, कुठार धारी
- **पारस**—वि°—-—पारस्यदेशे भवः- अण् बा° यलोपः —पारसी फरस देश का रहने वाला
- **पारसिकः**—पुं°—-—-—फारस देश
- **पारसिकः**—पुं°—-—-—फारस देश का, पारसीक
- **पारसी**—स्त्री°—-—-—फारसी भाषा
- **पारसीकः**—पुं°—-—पृषो° साधुः—फारस देश
- **पारसीकः**—पुं°—-—पृषो° साधुः—फारस देश का घोड़ा
- **पारसीकाः**—पुं°—-—-—फारस देश के रहने वाले
- **पारस्त्रैणेयः**—पुं°—-—परस्त्री + ढक्, इनङ्, उभय पदवृद्धिः—दोगला, हरामी
- **पारहंस्य**—वि°—-—परहंस + ष्यञ्—उस सन्यासी से संबंध रखने वाला जिसने सब इन्द्रियों का दमन कर लिया है
- **पारा**—स्त्री°—-—पार + अच् + टाप्—एक नदी का नाम
- **पारापतः**—पुं°—-—पार + आ + पत् + अच्—कबूतर
- **पारायणिकः**—पुं°—-—पारायण + ठञ्—व्याख्यानदाता, पुराण तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों का पाठ करने वाला
- **पारायणिकः**—पुं°—-—पारायण + ठञ्—शिष्य, विद्यार्थी
- **पारारुकः**—पुं°—-—पार + ऋ + उकञ्—पत्थर, चट्टान

- **पारावतः**—पुं°—-—पारापतः, पृषो° पस्य वः—कबूतर, फाख्ता, पेंडुकी
- **पारावतः**—पुं°—-—पारापतः, पृषो° पस्य वः—बन्दर
- **पारावतः**—पुं°—-—पारापतः, पृषो° पस्य वः—पहाड़
- **पारावताङ्घ्रिः**—पुं°—पारावतः-अङ्घ्रिः—-—एक प्रकार का कबूतर
- **पारावतपिच्छः**—पुं°—पारावतः-पिच्छः—-—एक प्रकार का कबूतर
- **पारावारीण**—वि°—-—पारावार + रव—दोनों छोर तक जाने वाला
- **पारावारीण**—वि°—-—पारावार + रव—पूर्ण रूप से जानकर
- **पाराशरः**—पुं°—-—पराशर + अण्—पराशर के पुत्र व्यास का विशेषण
- **पाराशर्यः**—पुं°—-—पराशर + यञ्—पराशर के पुत्र व्यास का विशेषण
- **पाराशरिः**—पुं°—-—पराशर + इञ्—शुकदेव का विशेषण
- **पाराशरिः**—पुं°—-—पराशर + इञ्—व्यास का नाम
- **पाराशरिन्**—पुं°—-—पाराशर + इनि—साधु, सन्यासी
- **पाराशरिन्**—पुं°—-—पाराशर + इनि—विशेषकर वह जो व्यास के शरीर सूत्रों के अध्येता हों
- **पारिकांक्षिन्**—पुं°—-—पारयति संसारात् पारि ब्रह्मज्ञानम् तत्कांक्षति- पारि + कांक्ष् + णिनि—ध्यानमग्न या चिन्ताशील सन्त, सन्यासी जो भावात्मक समाधि का भक्त हो
- **पारिक्षितः**—पुं°—-—परिक्षित् + अण्—जनमेजय का कुल सूचक नाम, अर्जुन का प्रपौत्र और परीक्षित् का पुत्र
- **पारिखेय**—वि°—-—परिखा + ढ—चारों ओर परिखा या खाई से घिरा हुआ
- **पारिजातः**—पुं°—-—पारमस्य अस्ति इतिपारी समुद्रः तस्माज्जातः- पारिजात + कन्—स्वर्ग के पाँच वृक्षों में से एक
- **पारिजातः**—पुं°—-—पारमस्य अस्ति इतिपारी समुद्रः तस्माज्जातः- पारिजात + कन्—मूंगे का पेड़
- **पारिजातः**—पुं°—-—पारमस्य अस्ति इतिपारी समुद्रः तस्माज्जातः- पारिजात + कन्—सुगन्ध
- **पारिजातकः**—पुं°—-—पारमस्य अस्ति इतिपारी समुद्रः तस्माज्जातः- पारिजात + कन्—स्वर्ग के पाँच वृक्षों में से एक
- **पारिजातकः**—पुं°—-—पारमस्य अस्ति इतिपारी समुद्रः तस्माज्जातः- पारिजात + कन्—मूंगे का पेड़
- **पारिजातकः**—पुं°—-—पारमस्य अस्ति इतिपारी समुद्रः तस्माज्जातः- पारिजात + कन्—सुगन्ध
- **पारिणाय्य**—वि°—-—परिणय + ष्यञ्—विवाह से संबन्ध रखने वाला
- **पारिणाय्य**—वि°—-—परिणय + ष्यञ्—विवाह के अवसर पर प्राप्त किया हुआ
- **पारिणाय्यम्**—नपुं°—-—परिणय + ष्यञ्—विवाह के अवसर पर स्त्री को मिली हुई सम्पत्ति
- **पारिणाय्यम्**—नपुं°—-—परिणय + ष्यञ्—विवाह व्यवस्था

- **पारितथ्या**—स्त्री°—————बालों को बांधने के लिए मोतियों की लड़ी
- **पारितोषिक**—वि°———परितोष + ठञ्—सुखकर, तृप्तिकर, सान्त्वनाप्रद
- **पारितोषिकम्**—नपुं°—————उपहार, पुरस्कार
- **पारिध्वजिकः**—पुं°———परितः ध्वजा- परिध्वजा + ठक्—झंडा बरदार, झंडा ले चलने वाला
- **पारिन्द्रः**—पुं°———पारीन्द्रः, पृषो° ह्रस्वः—सिंह, केसरी
- **पारिपंथिकः**—पुं°———परिपंथ + ठक्—लुटेरा, डाकू
- **पारिपाट्यम्**—नपुं°———परिपाटी + ष्यञ्—ढंग, प्रणाली, रीति (परिपाटी)
- **पारिपाट्यम्**—नपुं°———परिपाटी + ष्यञ्—नियमितता
- **पारिपार्श्वम्**—नपुं°———पारिपार्श्व + अण्—अनुचरवर्ग, सेवक, अनुयायी
- **पारिपार्श्वकः**—पुं°———पारिपार्श्व + कन्—सेवक, टहलुआ
- **पारिपार्श्वकः**—पुं°———पारिपार्श्व + कन्—नाटक में सूत्रधार का सहायक, नान्दीपाठ के अवसर एक अन्तर्वादी
- **पारिपार्श्विकः**—पुं°———परिपार्श्व + ठक्—सेवक, टहलुआ
- **पारिपार्श्विकः**—पुं°———परिपार्श्व + ठक्—नाटक में सूत्रधार का सहायक, नान्दीपाठ के अवसर एक अन्तर्वादी
- **पारिपार्श्विका**—स्त्री°———पारिपार्श्विका + टाप्—दासी, सेविका, निजी नौकरानी
- **पारिप्लव**—वि°———परिप्लव + अण्—इधर उधर घूमने वाला, डांवाडोल, चंचल, अस्थिर, कम्पायमान
- **पारिप्लव**—वि°———परिप्लव + अण्—तैरना, बहना
- **पारिप्लव**—वि°———परिप्लव + अण्—क्षुब्ध, उद्विग्न, परेशान, घबराया हुआ
- **पारिप्लवः**—पुं°———परिप्लव + अण्—नाव
- **पारिप्लवम्**—नपुं°———परिप्लव + अण्—बेचैनी, विकलता
- **पारिप्लाव्यः**—पुं°———परिपप्लव + ष्यञ्—हंस
- **पारिप्लाव्यम्**—नपुं°———परिपप्लव + ष्यञ्—परेशानी, बेचैनी, क्षोभ
- **पारिप्लाव्यम्**—नपुं°———परिपप्लव + ष्यञ्—कंपकंपी, थरथराहट
- **पारिबर्हः**—पुं°———परिबर्ह + अण्—वैवाहिक उपहार
- **पारिभद्रः**—पुं°———परिभद्र + अण्—मूंगे का वृक्ष
- **पारिभद्रः**—पुं°—————देवदारू वृक्ष
- **पारिभद्रः**—पुं°—————सरल वृक्ष
- **पारिभद्रः**—पुं°—————नीम का पेड़

- **पारिभाव्यम्**—नपुं°—-—परिभू + ष्यञ्—जमानत, प्रतिभूति, जमानत के रूप में रक्खी गई वस्तु
- **पारिभाषिक**—वि°—-—परिभाषा + ठक्—चालू, सामान्य प्रचलित
- **पारिभाषिक**—वि°—-—परिभाषा + ठक्—(शब्द आदि) तकनीकी, किसी विशेषार्थ का संकेतक
- **पारिमांडल्यम्**—नपुं°—-—परिमंडल + ष्यञ्—अणु, सूर्य की किरण में विद्यमान रजकण
- **पारिमुखिक**—वि°—-—परिमुख + ठक्—मुंह के सामने का, निकटवर्ती, पास का
- **पारिमुख्यम्**—नपुं°—-—परिमुख + ष्यञ्—उपस्थिति, समीप होना
- **पारियात्रः**—पुं°—-—-—सात मुख्य पर्वत शृंखलाओं में से एक
- **पारिपात्रः**—पुं°—-—-—सात मुख्य पर्वत शृंखलाओं में से एक
- **पारियात्रिकः**—पुं°—-—पारियात्र + ठक्—पारियात्र पहाड़ का निवासी
- **पारियात्रिकः**—पुं°—-—पारियात्र + ठक्—पारियात्र पहाड़
- **पारिपात्रिकः**—पुं°—-—-—पारियात्र पहाड़ का निवासी
- **पारिपात्रिकः**—पुं°—-—-—पारियात्र पहाड़
- **पारियानिकः**—पुं°—-—पारियान + ठक्—यात्रा पर जाने के लिए गाड़ी
- **पारिरक्षकः**—पुं°—-—परिरक्षति आत्मान - परि + रक्ष् + ण्वुल् + अण्—साधु, सन्यासी
- **पारिवित्त्यम्**—नपुं°—-—परिवित्त + ष्यञ्—छोटे भाई का विवाह हो जाने पर भी बड़े भाई का अविवाहित रहना
- **पारिवेत्र्यम्**—नपुं°—-—परिवेतृ + ष्यञ्—छोटे भाई का विवाह हो जाने पर भी बड़े भाई का अविवाहित रहना
- **पारिव्राजकम्**—नपुं°—-—परिव्राजक + अण्—साधु सन्यासी का भ्रमणशील जीवन, सन्यास
- **पारिव्राज्यम्**—नपुं°—-—परिव्राज् + ष्यञ्—साधु सन्यासी का भ्रमणशील जीवन, सन्यास
- **पारिशीलः**—पुं°—-—परिशील + अण्—रोटी, पूड़ा, मालपुआ
- **पारिशेष्यम्**—नपुं°—-—परिशेष + ष्यञ्—बचा हुआ, शेष, बाकी
- **पारिषद**—वि°—-—परिषद् + अण्—सभा या परिषद् से संबन्ध रख़ने वाला
- **पारिषदः**—पुं°—-—परिषद् + अण्—सभा में उपस्थित व्यक्ति, सभा का सदस्य, परामर्शक
- **पारिषदः**—पुं°—-—परिषद् + अण्—राजा का सहचर
- **पारिषदाः**—पुं°—-—परिषद् + अण्—देव का अनुचरवर्ग
- **पारिषद्यः**—पुं°—-—परिषद् + ण्यत्—सभा में विद्यमान व्यक्ति, दर्शक
- **पारिहारिकी**—स्त्री°—-—पारिहर + ठक् + ङीप्—एक प्रकार की बुझौवल, पहेली
- **परिहार्यः**—पुं°—-—परि + हृ + ण्यत् + अण्—कड़ा, कंगण

- **पारिहार्यम्**—नपुं°—————लेना, ग्रहण करना
- **पारिहास्यम्**—नपुं°———परिहास + ष्यञ्—हंसी-दिल्लगी, ठठोली, हंसी-मजाक
- **पारी**—स्त्री°———पृ + णिच् + घञ् + ङीष्—हाथी के पैरों को बांधने का रस्सा
- **पारी**—स्त्री°———पृ + णिच् + घञ् + ङीष्—जल का परिमाण
- **पारी**—स्त्री°———पृ + णिच् + घञ् + ङीष्—पानपात्र, सुराही, प्याला
- **पारी**—स्त्री°———पृ + णिच् + घञ् + ङीष्—दूध की बाल्टी
- **पारीक्षितः**—पुं°—————जनमेजय का कुल सूचक नाम, अर्जुन का प्रपौत्र और परीक्षित् का पुत्र
- **पारीण**—वि°———पार + ख—दूसरी पार रहने या जाने वाला
- **पारीण**—वि°———पार + ख—सुविज्ञ, सुपरिचित
- **पारीणह्यम्**—नपुं°———परिणह + ष्यञ्, उपसर्गस्य दीर्घः—घर का सामान, या बर्तन आदि
- **पारीन्द्रः**—पुं°———पारि पशुः तस्येन्द्रः—सिंह
- **पारीन्द्रः**—पुं°———पारि पशुः तस्येन्द्रः—अजगर, बड़ा साँप
- **पारीरणः**—पुं°———पायां जलपूरे रण यस्य—कछुवा
- **पारीरणः**—पुं°———पायां जलपूरे रण यस्य—छड़ी, लाठी
- **पारुः**—पुं°———पिबति रसान्- पा + रु—सूर्य
- **पारुः**—पुं°—————अग्नि
- **पारुष्यम्**—नपुं°———परुष + ष्यञ्—खुरदरापन, ऊबड़खाबड़पन, कड़ापन
- **पारुष्यम्**—नपुं°———परुष + ष्यञ्—कठोरता, क्रूरता, (स्वभाव की) निर्दयता
- **पारुष्यम्**—नपुं°———परुष + ष्यञ्—अपभाषा, गाली देना, बुराभला कहना, अश्लील भाषा, अपमान
- **पारुष्यम्**—नपुं°———परुष + ष्यञ्—(वाणी से या कर्म से) हिंसा
- **पारुष्यम्**—नपुं°———परुष + ष्यञ्—इन्द्र का उद्यान
- **पारुष्यम्**—नपुं°———परुष + ष्यञ्—अगर
- **पारुष्यः**—पुं°—————बृहस्पति का विशेषण
- **पारोवर्यम्**—नपुं°———परोवर + ष्यञ्—परंपरा
- **पार्घटम्**—नपुं°———पादे घटते इति अच्, पृषो° साधुः—धूल, राख
- **पार्जन्य**—वि°———पर्जन्य + अण्—वृष्टि से संबंध रखने वाला
- **पार्ण**—वि°———पर्ण + अण्—पत्तों से संबंध रखने वाला या पत्तों का बना हुआ

- **पार्ण**—वि०—-—पर्ण + अण्—पत्तों से उठाया हुआ
- **पार्थः**—पुं०—-—पृथा + अण्—युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन का मातृकुलसूचक नाम, परन्तु अर्जुन का विशेषरूप से
- **पार्थः**—पुं०—-—पृथा + अण्—राजा
- **पार्थसारथिः**—पुं०—पार्थः-सारथिः—-—कृष्ण का विशेषण
- **पार्थक्यम्**—नपुं०—-—पृथक + ष्यञ्—पृथकता, अलहदगी, अलग २ होने का भाव, अकेलापन, अनेकता
- **पार्थवम्**—नपुं०—-—पृथु + अण्—विशालता, विस्तार, फैलाव, चौड़ाई
- **पार्थिव**—वि०—-—पृथिवी + अण्—मिट्टी का बना हुआ, पृथ्वी संबंधी, भूमिसंबंधी, धरती से संबंध रखने वाला
- **पार्थिव**—वि०—-—पृथिवी + अण्—धरती पर शासन करने वाला
- **पार्थिव**—वि०—-—पृथिवी + अण्—राजसी, राजकीय
- **पार्थिवः**—पुं०—-—-—पृथ्वी पर रहने वाला
- **पार्थिवः**—पुं०—-—-—राजा, प्रभु
- **पार्थिवः**—पुं०—-—-—मिट्टी का वर्तन
- **पार्थिवनन्दनः**—पुं०—पार्थिव-नन्दनः—-—राजकुमार, राजपुत्र
- **पार्थिवसुतः**—पुं०—पार्थिव-सुतः—-—राजकुमार, राजपुत्र
- **पार्थिवकन्या**—स्त्री०—पार्थिव-कन्या—-—राजा की पुत्री, राजकुमारी
- **पार्थिवनन्दिनी**—स्त्री०—पार्थिव-नन्दिनी—-—राजा की पुत्री, राजकुमारी
- **पार्थिवसुता**—स्त्री०—पार्थिव-सुता—-—राजा की पुत्री, राजकुमारी
- **पार्थिवी**—स्त्री०—-—पार्थिव + ङीप्—सीता का विशेषण, धरती की पुत्री
- **पार्थिवी**—स्त्री०—-—पार्थिव + ङीप्—लक्ष्मी का विशेषण
- **पार्परः**—पुं०—-—-—मुट्ठी भर चावल
- **पार्परः**—पुं०—-—-—क्षयरोग, तपेदिक
- **पार्यतिक**—वि०—-—पर्यन्त + ठक्—अन्तिम, आख़री, निर्णायक
- **पार्वण**—वि०—-—पर्वन् + अण्—पर्वसंबंधी
- **पार्वण**—वि०—-—पर्वन् + अण्—वृद्धि की प्राप्त होना, बढ़ना (जैसे कि चन्द्रमा का)
- **पार्वणम्**—नपुं०—-—पर्वन् + अण्—पर्व के अवसर पर (अमावस्या के दिन) सभी पितरों के निमित्त आहुति देने का सामान्य संस्कार
- **पार्वत**—वि०—-—पर्वत + अण्—पहाड़ पर होने या रहने वाला
- **पार्वत**—वि०—-—पर्वत + अण्—पहाड़ पर उगने वाला, पहाड़ से प्राप्त होने वाला

- **पार्वत**—वि॰—-—पर्वत + अण्—पहाड़ी
- **पार्वतिकम्**—नपुं॰—-—पर्वत + ठञ्—पहाड़ों का समुच्चय, पर्वतशृंखला
- **पार्वती**—स्त्री॰—-—पार्वत + ङीप्—दुर्गा का नाम, हिमालय की पुत्री के रूप में उत्पन्न
- **पार्वती**—स्त्री॰—-—पार्वत + ङीप्—ग्वालिन
- **पार्वती**—स्त्री॰—-—पार्वत + ङीप्—द्रौपदी का विशेषण
- **पार्वती**—स्त्री॰—-—पार्वत + ङीप्—पहाड़ी नदी
- **पार्वती**—स्त्री॰—-—पार्वत + ङीप्—एक प्रकार की सुगंधयुक्त मिट्टी
- **पार्वतीनन्दनः**—पुं॰—पार्वती-नन्दनः—-—कार्तिकेय की उपाधि
- **पार्वतीनन्दनः**—पुं॰—पार्वती-नन्दनः—-—गणेश का विशेषण
- **पार्वतीय**—वि॰—-—पर्वत + छ—पहाड़ में रहने वाला
- **पार्वतीयः**—पुं॰—-—पर्वत + छ—पहाड़ी
- **पार्वतीयः**—पुं॰—-—-—एक विशेष पहाड़ी जाति का नाम
- **पार्वतेय**—वि॰—-—पार्वती + ढक्—पहाड़ पर उत्पन्न
- **पार्वतेयम्**—नपुं॰—-—पार्वती + ढक्—अंजन, सुरमा
- **पार्शवः**—पुं॰—-—पर्शु + अण्—कुठार से सुसज्जित योद्धा
- **पार्श्वः**—पुं॰—-—पशूनां समूहः—काँख से नीचे का शरीर का भाग, स्थान जहाँ पसलियाँ है
- **पार्श्वः**—पुं॰—-—पशूनां समूहः—पाँसू, कोख, (सजीव और निर्जीव पदार्थों का) पार्श्वांग
- **पार्श्वः**—पुं॰—-—पशूनां समूहः—आस-पास
- **पार्श्वः**—पुं॰—-—पशूनां समूहः—जिनका विशेषण
- **पार्श्वम्**—नपुं॰—-—पशूनां समूहः—काँख से नीचे का शरीर का भाग, स्थान जहाँ पसलियाँ है
- **पार्श्वम्**—नपुं॰—-—पशूनां समूहः—पाँसू, कोख, (सजीव और निर्जीव पदार्थों का) पार्श्वांग
- **पार्श्वम्**—नपुं॰—-—पशूनां समूहः—आस-पास
- **पार्श्वम्**—नपुं॰—-—-—पसलियों का समूह
- **पार्श्वम्**—नपुं॰—-—-—जालसाज़ी से भरी हुई तरकीब, असम्मानजनक उपाय
- **पार्श्वानुचरः**—पुं॰—पार्श्वः-अनुचरः—-—टहलुआ, सेवक
- **पार्श्वास्थि**—नपुं॰—पार्श्वः-अस्थि—-—पसली
- **पार्श्वायात**—वि॰—पार्श्वः-आयात—-—जो बहुत निकट आ गया है

- **पार्श्वासन्न**—वि०—पार्श्वः-आसन्न—-—पास ही विद्यमान
- **पार्श्वोदरप्रियः**—पुं०—पार्श्वः-उदरप्रियः—-—केकड़ा
- **पार्श्वगः**—पुं०—पार्श्वः-गः—-—टहलुआ, सेवक
- **पार्श्वगत**—वि०—पार्श्वः-गत—-—पार्श्ववर्ती, पास ही स्थित, सेवा करने वाला
- **पार्श्वगत**—वि०—पार्श्वः-गत—-—शरणागत
- **पार्श्वचरः**—पुं०—पार्श्व-चरः—-—सेवक, टहलुआ
- **पार्श्वदः**—पुं०—पार्श्वः-दः—-—टहलुआ, सेवक
- **पार्श्वदेशः**—पुं०—पार्श्वः-देशः—-—(शरीर की) कोख, पाँसू
- **पार्श्वपरिवर्तनम्**—नपुं०—पार्श्वः-परिवर्तनम्—-—विस्तर पर करवट बदलना
- **पार्श्वपरिवर्तनम्**—नपुं०—पार्श्वः-परिवर्तनम्—-—भाद्रपदशुक्ल ११ में होने वाला पर्व
- **पार्श्वभागः**—पुं०—पार्श्वः-भागः—-—कोख, पाँसू
- **पार्श्ववर्तिन्**—वि०—पार्श्वः-वर्तिन्—-—पास होने वाला, उपस्थित, सेवा में खड़ा हुआ
- **पार्श्ववर्तिन्**—वि०—पार्श्वः-वर्तिन्—-—साथ ही लगा हुआ
- **पार्श्वशय**—वि०—पार्श्वः-शय—-—पास ही सोने वाला, बगल में सोने वाला
- **पार्श्वशूलः**—पुं०—पार्श्वः-शूलः—-—कोख में मीठा दर्द
- **पार्श्वशूलम्**—नपुं०—पार्श्वः-शूलम्—-—कोख में मीठा दर्द
- **पार्श्वसूत्रकः**—पुं०—पार्श्वः-सूत्रकः—-—एक प्रकार का आभूषण
- **पार्श्वस्थ**—वि०—पार्श्वः-स्थ—-—पार्श्ववर्ती, नजदीकी, निकटवर्ती, समीपस्थ
- **पार्श्वस्थः**—पुं०—पार्श्वः-स्थः—-—सहचर
- **पार्श्वस्थः**—पुं०—पार्श्वः-स्थः—-—सूत्रधार का सहायक
- **पार्श्वकः**—पुं०—-—पार्श्व + कन्—ठग, प्रवंचक, चोर
- **पार्श्वतः**—अव्य०—-—पार्श्व + तस्—निकट, नजदीक, समीप, पास
- **पार्श्विक**—वि०—-—पार्श्व + ठच्—पाँसू से संबंध रखने वाला
- **पार्श्विकः**—पुं०—-—पार्श्व + ठच्—पक्ष लेने वाला, आदमी, साझीदार
- **पार्श्विकः**—पुं०—-—पार्श्व + ठच्—साथी, सहचर
- **पार्श्विकः**—पुं०—-—पार्श्व + ठच्—जादूगर
- **पार्षत**—वि०—-—पृषत + अण्—चितकबरे हरिण से संबंध रखने वाला

- **पार्षतः**—पुं°—-—पृषत + अण्—राजा द्रुपद और उसके पुत्र धृष्टद्युम्न का पित्रृकुलसूचक नाम
- **पार्षती**—स्त्री°—-—पार्षत + ङीप्—द्रौपदी का विशेषण
- **पार्षती**—स्त्री°—-—पार्षत + ङीप्—दूर्गा की उपाधि
- **पार्षद्**—स्त्री°—-—परिषद्, पृषो°—सभा
- **पार्षदः**—पुं°—-—पार्षद मर्हति अण्—साथी, सहचर
- **पार्षदः**—पुं°—-—पार्षद मर्हति अण्—टहलुआ, अनुचरवर्ग
- **पार्षदः**—पुं°—-—पार्षद मर्हति अण्—सभा में उपस्थित, दर्शक, सभासद्
- **पार्षद्यः**—पुं°—-—पर्षद् + ण्य—सभासद्, सदस्य
- **पार्ष्णिः**—पुं°—-—पृष् + नि, नि° वृद्धिः—एड़ी
- **पार्ष्णिः**—पुं°—-—पृष् + नि, नि° वृद्धिः—सेना की पिछाड़ी
- **पार्ष्णिः**—पुं°—-—पृष् + नि, नि° वृद्धिः—पिछड़ी, पिछला भाग
- **पार्ष्णिः**—पुं°—-—पृष् + नि, नि° वृद्धिः—ठोकर
- **पार्ष्णिः**—स्त्री°—-—-—व्यभिचारिणी स्त्री
- **पार्ष्णिः**—स्त्री°—-—-—कुन्ती का विशेषण
- **पार्ष्णिग्रहः**—पुं°—पार्ष्णिः-ग्रहः—-—अनुयायी
- **पार्ष्णिग्रहणम्**—नपुं°—पार्ष्णिः-ग्रहणम्—-—शत्रु की पीठ पर आक्रमण करना
- **पार्ष्णिग्राहः**—पुं°—पार्ष्णिः-ग्राहः—-—पृष्ठवर्ती शत्रु
- **पार्ष्णिग्राहः**—पुं°—पार्ष्णिः-ग्राहः—-—पृष्ठवर्ती सेना का सेनापति
- **पार्ष्णिग्राहः**—पुं°—पार्ष्णिः-ग्राहः—-—मित्रराजा जो किसी राजा की सहायता करे
- **पार्ष्णित्रम्**—नपुं°—पार्ष्णित्रम्—-—पृष्ठरक्षक, पीछे रहने वाली सेना की टुकड़ी, प्रारक्षित
- **पार्ष्णिवाहः**—पुं°—पार्ष्णिवाहः—-—बाह्यवर्ती घोड़ा
- **पालः**—पुं°—-—पाल् + अच्—प्ररक्षक, अभिभावक, संरक्षक
- **पालः**—पुं°—-—पाल् + अच्—ग्वाला
- **पालः**—पुं°—-—पाल् + अच्—राजा
- **पालः**—पुं°—-—पाल् + अच्—पीकदान
- **पालघ्नः**—पुं°—पालः- घ्नः—-—कुकुरमुत्ता, साँप की छतरी
- **पालकः**—पुं°—-—पाल् + ण्वुल्—अभिभावक, प्ररक्षक

- **पालकः**—पुं०—-—पाल् + ण्वुल्—राज कुमार, राजा, शासक, प्रभु
- **पालकः**—पुं०—-—पाल् + ण्वुल्—साईस, घोड़े का रख वाला
- **पालकः**—पुं०—-—पाल् + ण्वुल्—घोड़ा
- **पालकः**—पुं०—-—पाल् + ण्वुल्—चित्रक वृक्ष
- **पालकः**—पुं०—-—पाल् + ण्वुल्—पालक पिता
- **पालकाप्यः**—पुं०—-—-—एक ऋषि करेणु का पुत्र, (इन्होंने ही सर्वप्रथम हस्तिविज्ञान की शिक्षा दी)
- **पालकाप्यः**—पुं०—-—-—हस्तिविज्ञान
- **पालङ्कः**—पुं०—-—पाल् + किप्= पाल् + अंक् + घञ्—पालक का साग
- **पालङ्कः**—पुं०—-—पाल् + किप्= पाल् + अंक् + घञ्—बाजपक्षी
- **पालङ्की**—स्त्री०—-—-—एक गंधद्रव्य
- **पालङ्क्य**—स्त्री०—-—पालंक + ष्यञ्—एक सुगंध द्रव्य
- **पालङ्क्या**—स्त्री०—-—पालंक + ष्यञ्, स्त्रियाँ टाप् च—एक सुगंध द्रव्य
- **पालन**—वि०—-—पाल् + ल्यूट्—रक्षा करने वाला, संरक्षण देने वाला
- **पालनम्**—नपुं०—-—पाल् + ल्यूट्—प्ररक्षण, संरक्षण, पालना, पोसना, लालन-पालन करना
- **पालनम्**—नपुं०—-—पाल् + ल्यूट्—बनाये रखना, अनुपालन करना, (व्रत, प्रतिज्ञा, आदि को) पूरा करना
- **पालनम्**—नपुं०—-—पाल् + ल्यूट्—बाजी ब्याई हुई गो का दूध, खीस
- **पालयितृ**—पुं०—-—पाल् +णिच् + तृच्—प्ररक्षक, संरक्षक, परवरिश करने वाला
- **पालाश**—वि०—-—पलाश + अण्—ढाक का, ढाक से उत्पन्न
- **पालाश**—वि०—-—पलाश + अण्—ढाक की लकड़ी का बना हुआ
- **पालाश**—वि०—-—पलाश + अण्—हरा
- **पालाशः**—पुं०—-—पलाश + अण्—हरा रंग
- **पालाशखण्डः**—पुं०—पालाश-खण्डः—-—मगध देश का विशेषण
- **पालाशषण्डः**—पुं०—पालाश-षण्डः—-—मगध देश का विशेषण
- **पालिः**—स्त्री०—-—पाल् + इन्—कान का सिरा
- **पालिः**—स्त्री०—-—पाल् + इन्—किनारा, गोट, मगजी
- **पालिः**—स्त्री०—-—पाल् + इन्—तेज़ सिरा, धार या नोक
- **पालिः**—स्त्री०—-—पाल् + इन्—हद, सीमा

- **पालिः**—स्त्री°—-—पाल् + इन्—श्रेणी, पंक्ति
- **पालिः**—स्त्री°—-—पाल् + इन्—धब्बा, चिह्न
- **पालिः**—स्त्री°—-—पाल् + इन्—बांध, पुल
- **पालिः**—स्त्री°—-—पाल् + इन्—गोद, अंक
- **पालिः**—स्त्री°—-—पाल् + इन्—आयताकार तालाब
- **पालिः**—स्त्री°—-—पाल् + इन्—अध्ययनकाल में गुरु द्वारा छात्र का भरण-पोषण
- **पालिः**—स्त्री°—-—पाल् + इन्—जूँ
- **पालिः**—स्त्री°—-—पाल् + इन्—प्रशंसा, स्तुति
- **पालिः**—स्त्री°—-—पाल् + इन्—वह स्त्री जिसके दाढ़ी-मूंछे हों
- **पाली**—स्त्री°—-—पाल् + इन्—कान का सिरा
- **पाली**—स्त्री°—-—पाल् + इन्—किनारा, गोट, मगजी
- **पाली**—स्त्री°—-—पाल् + इन्—तेज़ सिरा, धार या नोक
- **पाली**—स्त्री°—-—पाल् + इन्—हद, सीमा
- **पाली**—स्त्री°—-—पाल् + इन्—श्रेणी, पंक्ति
- **पाली**—स्त्री°—-—पाल् + इन्—धब्बा, चिह्न
- **पाली**—स्त्री°—-—पाल् + इन्—बांध, पुल
- **पाली**—स्त्री°—-—पाल् + इन्—गोद, अंक
- **पाली**—स्त्री°—-—पाल् + इन्—आयताकार तालाब
- **पाली**—स्त्री°—-—पाल् + इन्—अध्ययनकाल में गुरु द्वारा छात्र का भरण-पोषण
- **पाली**—स्त्री°—-—पाल् + इन्—जूँ
- **पाली**—स्त्री°—-—पाल् + इन्—प्रशंसा, स्तुति
- **पाली**—स्त्री°—-—पाल् + इन्—वह स्त्री जिसके दाढ़ी-मूंछे हों
- **पालिका**—स्त्री°—-—पालि + कन् + टाप्—कान का सिरा
- **पालिका**—स्त्री°—-—पालि + कन् + टाप्—तलवार या किसी छुरी आदि काटने वाले उपकरण की तेज़ धार
- **पालिका**—स्त्री°—-—पालि + कन् + टाप्—पनीर या मक्खन आदि काटने की छुरी
- **पालित**—भू° क° कृ°—-—पाल् + क्त—प्ररक्षित, संरक्षित, आरक्षित
- **पालित**—भू° क° कृ°—-—पाल् + क्त—पालन किया हुआ, पूरा किया हुआ

- **पालित्यम्**—नपुं°—-—पलित + ष्यञ्—वृद्धावस्था के कारण वालों की सफ़ेदी, धवलता
- **पाल्वल**—वि°—-—पल्वल + अण्—पोखर में उत्पन्न, तलैया से प्राप्त
- **पावकः**—पुं°—-—पू + ण्वुल्—आग
- **पावकः**—पुं°—-—पू + ण्वुल्—अग्नि देवता
- **पावकः**—पुं°—-—पू + ण्वुल्—विजली की आग
- **पावकः**—पुं°—-—पू + ण्वुल्—चित्रक वृक्ष
- **पावकः**—पुं°—-—पू + ण्वुल्—तीन की संख्या
- **पावकात्मजः**—पुं°—पावकः-आत्मजः—-—कार्तिकेय का विशेषण
- **पावकात्मजः**—पुं°—पावकः-आत्मजः—-—सुदर्शन नामक ऋषि
- **पावकिः**—पुं°—-—पावक + इञ्—कार्तिकेय का विशेषण
- **पावन**—वि°—-—पू + णिच् + ल्युट्—निर्मल करने वाला, पाप से मुक्त करने वाला, शुद्ध करने वाला, पवित्र वनाने वाला
- **पावन**—वि°—-—पू + णिच् + ल्युट्—पवित्र, पुनीत, विशुद्ध, परिष्कृत
- **पावनः**—पुं°—-—-—आग
- **पावनः**—पुं°—-—-—गंध द्रव्य
- **पावनः**—पुं°—-—-—सिद्ध
- **पावनः**—पुं°—-—-—व्यास कवि
- **पावनम्**—नपुं°—-—-—पवित्री करण, विशुद्धीकरण
- **पावनम्**—नपुं°—-—-—तप
- **पावनम्**—नपुं°—-—-—जल
- **पावनम्**—नपुं°—-—-—गोबर
- **पावनम्**—नपुं°—-—-—संप्रदायसूचक तिलक
- **पावनध्वनिः**—पुं°—पावन-ध्वनिः—-—शंखनाद
- **पावनी**—स्त्री°—-—पावन + ङीप्—पवित्र तुलसी
- **पावनी**—स्त्री°—-—पावन + ङीप्—गाय
- **पावनी**—स्त्री°—-—पावन + ङीप्—गंगा नदी
- **पावमानी**—स्त्री°—-—पचमानम् अधिकृत्य प्रवृत्तम्- पवमान + अण् + ङीप्—विशिष्ट वैदिक ऋचाओं का विशेषण
- **पावरः**—पुं°—-—-—पासे को विशेष ढंग से फेकना

- **पाशः**—पुं०—-—पश्यते बध्यतेऽनेन, पश् करणे घञ्—डोरी, शृंखला, बेड़ी, फंदा
- **पाशः**—पुं०—-—पश्यते बध्यतेऽनेन, पश् करणे घञ्—जाल, खटकेदार पिंजड़ा, या फंदा
- **पाशः**—पुं०—-—पश्यते बध्यतेऽनेन, पश् करणे घञ्—बन्धन ज़ो (वरुण के द्वारा) शस्त्र की भांति प्रयुक्त होता है
- **पाशः**—पुं०—-—पश्यते बध्यतेऽनेन, पश् करणे घञ्—पाँसा
- **पाशः**—पुं०—-—पश्यते बध्यतेऽनेन, पश् करणे घञ्—किसी बुनी हुई वस्तु की किनारी
- **पाशः**—पुं०—-—पश्यते बध्यतेऽनेन, पश् करणे घञ्—तिरस्कार, अवमान
- **पाशः**—पुं०—-—पश्यते बध्यतेऽनेन, पश् करणे घञ्—सौन्दर्य, सराहना
- **पाशः**—पुं०—-—पश्यते बध्यतेऽनेन, पश् करणे घञ्—बहुतायत, ढेर, राशि
- **पाशान्तः**—पुं०—पाशः-अन्तः—-—कपड़े का पृष्ठभाग
- **पाशक्रीडा**—स्त्री०—पाशः-क्रीडा—-—जूआ खेलना, पांसे के साथ खेलना
- **पाशधरः**—पुं०—पाशः-धरः—-—वरुण का विशेषण
- **पाशपाणिः**—पुं०—पाशः-पाणिः—-—वरुण का विशेषण
- **पाशबद्ध**—वि०—पाशः-बद्ध—-—पिंजड़े में फंसा हुआ, जाल में पकड़ा हुआ, फंदे में पड़ा हुआ
- **पाशबन्धः**—पुं०—पाशः-बन्धः—-—बंधन, जाल, फांसी की डोरी
- **पाशबन्धकः**—पुं०—पाशः-बन्धकः—-—बलेलिया, पक्षी पकड़ने वाला
- **पाशबन्धनम्**—नपुं०—पाशः-बन्धनम्—-—जाल
- **पाशभृत्**—पुं०—पाशः-भृत्—-—वरुण का विशेषण
- **पाशरज्जुः**—स्त्री०—पाशः-रज्जुः—-—वेड़ी, रस्सी
- **पाशहस्तः**—पुं०—पाशः-हस्तः—-—'हाथ में जाल पकड़े हुए' वरुण का विशेषण
- **पाशकः**—पुं०—-—पाश्यति पीडयति- पश् + णिच् + ण्वुल्—अक्ष, पाँसा
- **पाशकपीठम्**—नपुं०—पाशकः-पीठम्—-—जूआ खेलने की चौकी
- **पाशनम्**—नपुं०—-—पश् + णिच् + ल्युट्—बंधन, फंदा, जाल, गुलेल या गोफिया
- **पाशनम्**—नपुं०—-—पश् + णिच् + ल्युट्—डोरी, चाबुक या सोटे में लगी चमड़े की डोरी या तस्मा
- **पाशनम्**—नपुं०—-—पश् + णिच् + ल्युट्—जाल में फंसाना, पिंजरे में बन्द करना
- **पाशव**—वि०—-—पशु + अण्—जानवरों से प्राप्त, या संबंध रखने वाला
- **पाशवम्**—नपुं०—-—पशु + अण्—रेवड़, लहंडा
- **पाशवपालनम्**—नपुं०—पाशव-पालनम्—-—पशुचरण या चरागाह, गोचरभूमि

- **पाशित**—वि°—-—पश् + णिच् + क्त—बद्ध, जाल में फंसा, बेड़ियों से जकड़ा हुआ
- **पाशिन्**—पुं°—-—पाश + इति—वरुण का विशेषण
- **पाशिन्**—पुं°—-—पाश + इति—यम का विशेषण
- **पाशिन्**—पुं°—-—पाश + इति—हिरणों को पकड़ने वाला, बहेलिया, जाल में फंसने वाला
- **पाशुपत**—वि°—-—पशुपति + अण्—पशुपति से प्राप्त, या पशुपति से सम्बद्ध अथवा पशुपति के लिए पावन
- **पाशुपतः**—पुं°—-—पशुपति + अण्—शिव का अनुयायी और पूजक
- **पाशुपतः**—पुं°—-—पशुपति + अण्—पशुपति के सिद्धान्तों का पालन करने वाला
- **पाशुपतम्**—नपुं°—-—पशुपति + अण्—पाशुपत सिद्धांत
- **पाशुपतस्त्रम्**—नपुं°—पाशुपत- अस्त्रम्—-—पशुपति या शिव द्वारा अधिष्ठित एक अस्त्र का नाम
- **पाशुपाल्यम्**—नपुं°—-—पशुपाल + ष्यञ्—पशुओं का पालना, ग्वाले की वृत्ति या धंधा
- **पाश्चात्य**—वि°—-—पश्चात् + त्यक्—पिछला
- **पाश्चात्य**—वि°—-—पश्चात् + त्यक्—पश्चिमी
- **पाश्चात्य**—वि°—-—पश्चात् + त्यक्—पश्चवर्ती, बाद का
- **पाश्चात्य**—वि°—-—पश्चात् + त्यक्—बाद में होने वाला
- **पाश्चात्यम्**—नपुं°—-—पश्चात् + त्यक्—पिछला भाग
- **पाश्या**—स्त्री°—-—पाश + य + टाप्—जाल
- **पाश्या**—स्त्री°—-—पाश + य + टाप्—रस्सियों या पौड़ियों का समूह
- **पाषंडः**—पुं°—-—पा त्रयीधर्मः तं षंडयति- पा + षंड् + अच्—पांखड
- **पाषंडकः**—पुं°—-—पाषंड + कन्—नास्तिक, धर्मभ्रष्ट, धर्म के नाम पर झूठा आडंबर रचने वाला धूर्त व्यक्ति
- **पाषंडिन्**—पुं°—-—पा + षड् + णिनि—नास्तिक, धर्मभ्रष्ट, धर्म के नाम पर झूठा आडंबर रचने वाला धूर्त व्यक्ति
- **पाषाणः**—पुं°—-—पिनष्टि पिष् संचूर्ण ने आनच् पृषो° तारा°—पत्थर
- **पाषाणी**—स्त्री°—-—-—बाट का काम देने वाला छोटा पत्थर
- **पाषाणदारकः**—पुं°—पाषाणः-दारकः—-—टांकी
- **पाषाणदारणः**—पुं°—पाषाणः-दारणः—-—टांकी
- **पाषाणसंधिः**—पुं°—पाषाणः-संधिः—-—चट्टान के अन्दर गुफा या दरार
- **पाषाणहृदय**—वि°—पाषाणः-हृदय—-—पत्थर की भांति कठोरहृदय, क्रूर, निष्ठुर